CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

– रचयिता –

सेवक श्री देवी प्रसाद जी महाराज
प्रधान पुजारी, पीठासीन, शारदा देवी सिद्ध शक्ति पीठ, मैहर, सतना (म.प्र.)

RajGuru Math ... si Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Ru Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्री गुरूवै नमः ।।

परम पूज्य ब्रह्म स्वरूप
पूर्व प्रधान पुजारी, पिता श्री
पण्डित शारदा प्रसाद जी महाराज
के पावन स्मृति में सादर समर्पित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

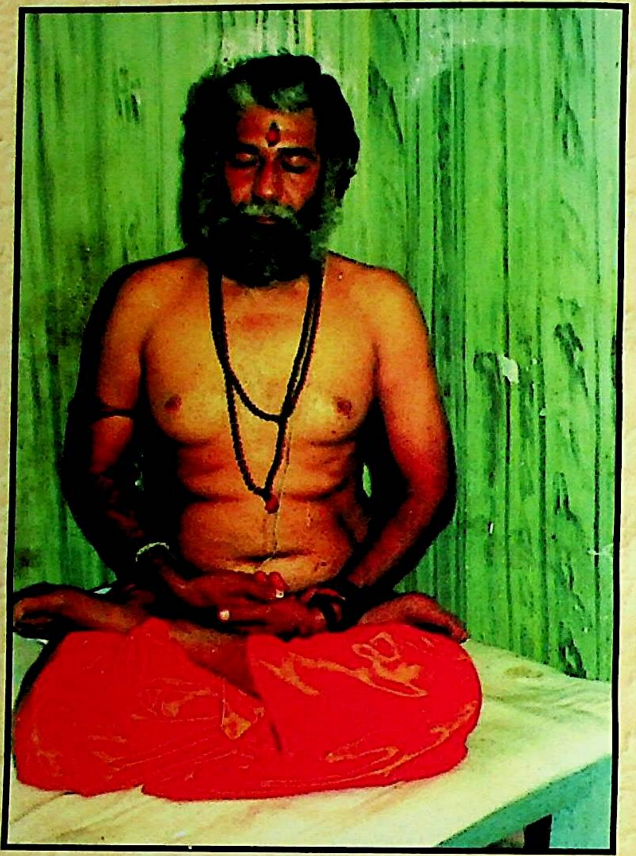

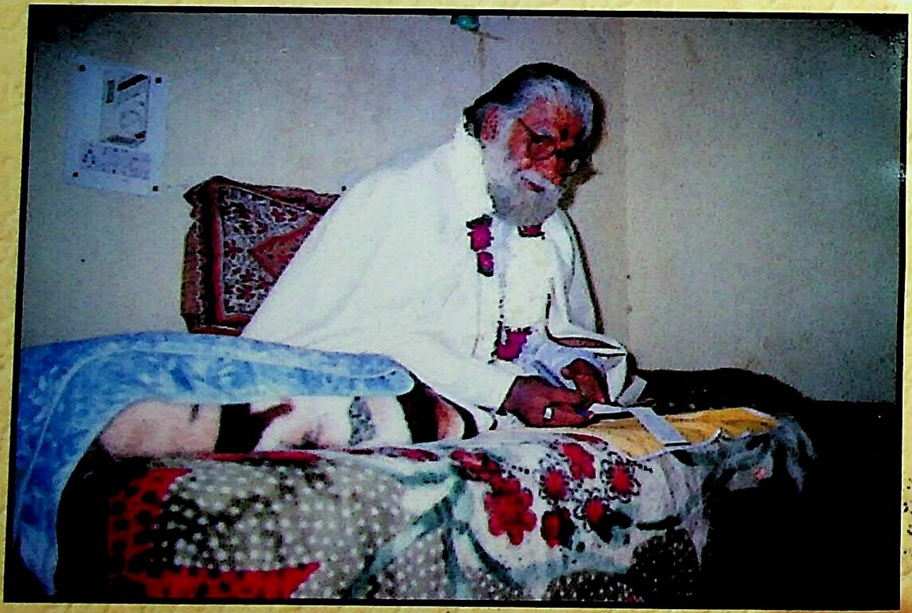

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। जय माँ शारदा ।।

सेवक श्री देवी प्रसाद जी महाराज

शारदा शक्ति पीठासीन

मैहर, जिला–सतना (म.प्र.)

फोन : 32176 (आश्रम) 32186 (अमर गुफा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

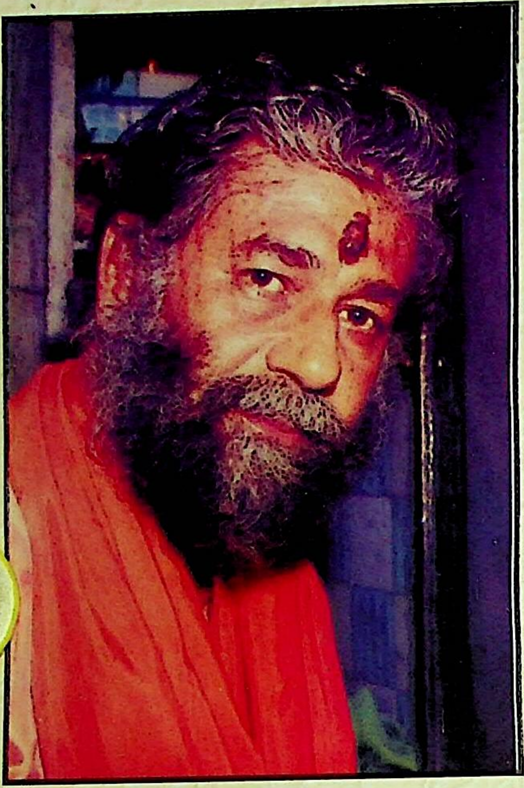

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूल सुधार एवं क्षमा याचना

शारदा सागर के छपते समय कुछ त्रुटियाँ हुई हैं। जिसे आप सुधार कर पढ़े। आशा है कि आप हमारी गलतियों की तरफ ध्यान न देते हुए सुधार की तरफ ध्यान देंगे।

धन्यवाद

"ॐ गुरुदेव भगवान की जय"
जय माँ शारदा
भूल सुधार

क्र.	पृष्ठ क्र.	दोहा/चौपाई क्र.	गलत	सही
१	१७	३६	प्रनाम	प्रमाण
२	१८	४४	सब	लव
३	२१	७८	अनाथ	सनाथ
४	२६	१३४	हो	होय
५	३३	१८०	आयू	आयउ
६	३४	१६३	आचरण	मातुचरण
७	३८	२३७	पुरी गलत है। पुनि-पुनि जनम होत, भू लोका। माँ शारदा अब देहु सलोका ।।	
८	४१	चौपाई २५८	महै	महु
६	४१	चौपाई २५६	स्वामी	स्वाती
१०	४३	चौपाई २८३	घरघोर	धनधोर
११	४४	चौपाई २६२	अवहु	आवहु
१२	५३	दोहा ३४३	आयागा	आयेगा
१३	५३	दोहा ३४६	पाड़	पाइ
१४	५४	दोहा ३५१	निशैनी	नसेनी
१५	६०	दोहा ४१३	चिनता	चिन्ता
१६	६४	दोहा ४४६	होता	होत
१७	६६	दोहा ४५६	सतसंगा	सतसंग
१८	६८	चौपाई ४७६	जारी	जानी
१६	६६	दोहा ४८७	चरनत	चरनन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शारदा शक्ति पीठासीन
देवी प्रसाद जी महाराज
कृत

शारदा सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर

श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योतिर्मठ (बदरिकाश्रम) हिमालय

सञ्चार यात्रा स्थान – परमहंसी गंगा आश्रम
पत्रांक – ज.शं.चा./प. 019/99
दिनांक – 21.8.99

शुभाशीष

माँ भगवती शारदा के परम उपासक श्री देवी प्रसाद जी महाराज के द्वारा रचित "शारदा सागर" का अवलोकन एवं उसके पद्यों का श्रवण किया हार्दिक प्रसन्नता हुई। शारदा सागर में श्रद्धालु जन गोते लगाकर अपने अंतःकरण में भगवती शारदा को स्थापित कर अपना जीवन सफल बनायेंगे। शारदा सागर का प्रचार-प्रसार जन-जन तक हो यही हमारी कामना है। श्री देवी प्रसाद जी के उज्जवल भविष्य हेतु हम अपने हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

- स्वरूपानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्री गुरुवै नमः ॥

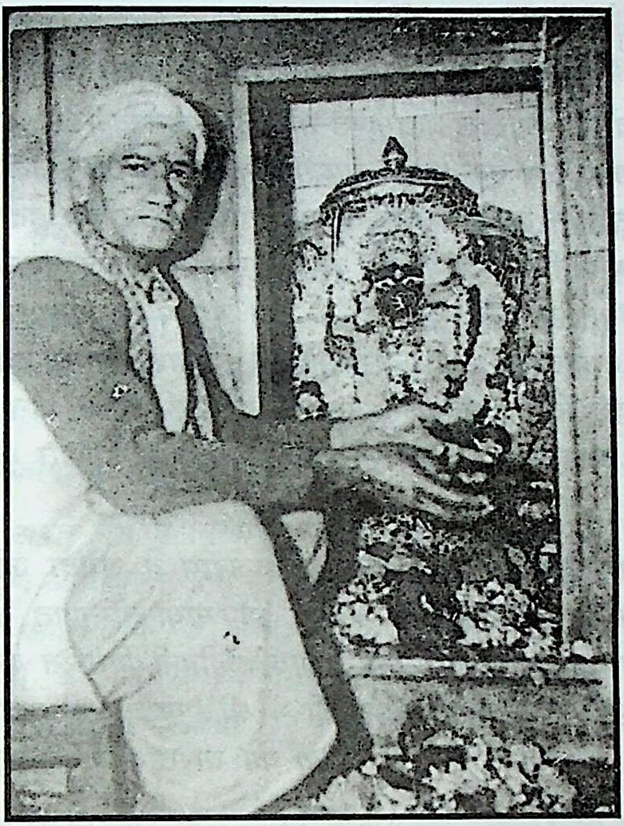

परम पूज्य ब्रह्म स्वरूप
पूर्व प्रधान पुजारी, पिता श्री
पण्डित शारदा प्रसाद जी महाराज
के पावन स्मृति में सादर समर्पित.......

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञप्तिका

श्री शारदा देवी सिद्ध शक्ति पीठ मैहर के पूर्व पीठासीन प्रधान पुजारी पूज्य पाद श्री ब्रह्म-स्वरूप-ब्रह्मज्ञ श्री शारदा प्रसाद पाण्डेय जी महाराज के अर्हनिश जप तप पूजा पाठ हवन पर प्रसन्न-वंदना अखिल-ब्रह्ममाण्ड-नायिका परमेश्वरी आदि-भवानी-जगदम्बा ने जब एक महान आध्यात्मिक ज्योति का उनके कुल में अवतरित होने का संकेत किया तो प्रधान-परिकर का हृदय कमल पराम्बा-भगवती शारदा के इस कृपा किरण को पाकर आनन्दातिरेक से आविर्भूत हो उठा। भगवती के इस असीम अनुकम्पा के कृतज्ञ पाण्डेय दम्पति की उस दैवी प्रसाद के साकार आगमन की प्रतीक्षा ऐसे पावन तिथि, मुहूर्त में साकार हो उठी जिस दिन पुरी में भगवान जगन्नाथ की नयनाभिराम रथयात्रा आयोजित की जाती है।

जगद्‌गुरु योगेश्वर श्रीकृष्ण, बलराम व सुभद्रा जी सहित विशालतम भव्य रथों पर आरूढ़ हो माया-सन्निपात से ग्रस्त जन-जन को दर्शन-रूपी महा प्रसाद-संजीवनी बितरित करते हुये मानो मैहर नगर के पुरानी बस्ती में श्री पाण्डेय जी महाराज के शुभ गृह भगवती शारदा के संदेश को चरितार्थ करने पधार गये हैं।

परम वन्दनीया पुण्य मूर्ति परम सौभाग्यवती माता श्री श्रीमती गिरिजा देवी ने आज रथयात्रा वाले पावन तिथि में समस्त शुभ लक्षणों से युक्त उस तेजश्वी पुण्य-पुंज को जन्म दिया जो भगवती का निमित्त बन अध्यात्मिक क्षितिज पर दिव्या लोक बिखेरने सोदेश्य इस धरा पर उदित हुआ।

संत-समागम साधना-आराधना जप-तप से तप कर यह नक्षत्र श्री शारदा देवी सिद्ध शक्ति पीठ की प्राचीन परम्परा व प्रथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अनुसार पीठासीन हो स्वाध्याय जनित सारगर्भित सूत्र संकलन देवी सूक्त सुधा एवं छः अन्य लोकोपकारी भक्ति ज्ञानमय अनूठे काव्य संकलन, 'श्री गुरु महिमा शतक' देवी-भक्ति-काव्य 'श्रीराम शताष्टक' 'ज्ञान मञ्जरी' 'वाणी शतक' एवं शारदा नमन' जैसी त्रय तापहारी महौषधिक रचनायें, लोक कल्याणार्थ लोकार्पित कर स्वनाम धन्य हुआ।

प्रस्तुत ग्रन्थ, निर्माण अथवा निहितार्थ की परिणति नहीं बल्कि, हृदय सागर से सद्यः प्रस्फुटित अबाध्य प्रवाहित ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, प्रेम, साधन, और परम लक्ष्य को उन्मुख अविरल अजस्र धाराओं का महा संगम है जो प्रतिपल विचार सागर का मंथन करता शब्दों के शरीर धारण कर वैचारिक पग से भाव प्रेम सदुपदेश की दूरी तय कर अविराम गति से सन्मार्ग सदुपदेश का अक्षय-कोष लुटाता व्यष्टि में समष्टि का आभास करा जाता है।

अपने गर्भ में बिखेरे अनेका नेक मणि रत्नों में से स्वरूचि कर गुण आभायुक्त मणि चुन लेने की प्रेरणा प्रवाहित करता शारदा सागर आध्यात्मक के अथाह गूढ़, गम्भीर, दुर्गम, दुर्भेद अनन्त आयामों को समस्त बिन्दुओं पर मौलिक विचारों के साथ युक्ति-अनुभूति के आधार पर निष्पक्ष भाव से सहज में अनावरित कर गया है।

शारदा सागर का प्रत्येक रत्न सहज आभा युक्त होते हुये भी अन्तःकरण में ज्यों-ज्यों गहरे उतरता जाता है त्यों-त्यों अपरिमित अव्यारव्येय अकथ्य और अवर्णनीय हो जाता है। शारदा सागर विद्वता से, अधिक एक साधक, संत, तपस्वी, मनीषी की सामान्य परन्तु अनूठी अनुभूत काव्य-शैली है जो सहजता से तात्विक विन्दुओं की ओर ध्यान आकृष्ट करने में समर्थ है तथा मिथ्याडम्बरों पर चोट करती हुयी उद्वेलित कर जाने वाली है।

शारदा सागर में वेदान्त दर्शन के पांचों सिद्धान्तों अद्वैत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वैत, बिशिष्ठाद्वैत, शुद्धा द्वैत तथा द्वैताद्वैत एवं जीव जगत माया तथा ईश्वर के सन्दर्भ की अभिव्यक्तियाँ इतनी व्यवहारिक और स्वभाविक हैं कि इनकी तात्विकता विद्वता के मार्ग में विचलित होने से बच गयी है। शारदा सागर के माध्यम से धर्म सम्प्रदाय पंथों के मत मतान्तरों के संकीर्ण भ्रम जाल से उपर उठ कर पक्ष पात रहित सभी धर्मों के एकोदेश्य पर आस्था रखते हुये, सभी दैवीय शक्तियों में श्रद्धा विश्वास अटूट आस्था के मार्ग का अनुशरण करते हुये, मानव जीवन के बौद्धिक, आत्मिक-उत्थान के सदुपायो में सम्यक प्रकाश आलोकित करते हुये जगत के सम्पूर्ण मानव समाज को सत्कर्म करते हुए सन्मार्ग पर लाने की सद्प्रेरणा का प्रयास सतत श्रद्धेय एवं स्तुत्य है।

यथार्थ को निःसंकोच व्यक्त करने में कोई बात बार बार विभिन्न सन्दर्भों में कही गयी पुनरुक्ति दोष नहीं क्योंकि गहन तत्व हृदयंगम हो सके, इस लिये ऐसा किया गया भाषित होता है। किसी भी रचनाकार की कृति जब तक रची नहीं होती तभी तक वह रचनाकार की अनुभूति होती है परन्तु जैसे ही वह अनुभूति कृति के रूप में समाज के सम्मुख आती है वह रचनाकार से अधिक समाज की धरोहर बन जाती है और समाज उस कृति से मिलने वाले सदुपदेशों से अपने गले का हार बनाता है।

शारदा सागर के दोहों चौपाइयों के संकलन एवं क्रम बद्ध करने के तद्न्तर हुये अनुभव से यह कह सकता हूँ कि शारदा सागर जन-जन का कण्ठहार बनेगा।

- **सतीश पाण्डेय**

एडवोकेट, देवरिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवक श्री देवी प्रसाद जी महाराज

प्रधान पुजारी पीठासीन

शारदा देवी सिद्ध शक्ति पीठ

मैहर, सतना (म.प्र.)

फोन : 32176 (आश्रम), 32186 (अमरगुफा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रन्थमिदम् सुकाव्य विमलम्,
देवी प्रसादं कृतम् ।
भक्ति ज्ञान सुमंगलम् शुभ करम्,
शान्ति प्रदम् मुक्तिदम् ॥

मूलं मन्त्रा मनोरथं सुख करम्,
कल्याण कीर्तिं प्रदान् ।
यः श्रृण्वन्ति पठन्ति भक्ति सहिता,
ये शारदा सागरम् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

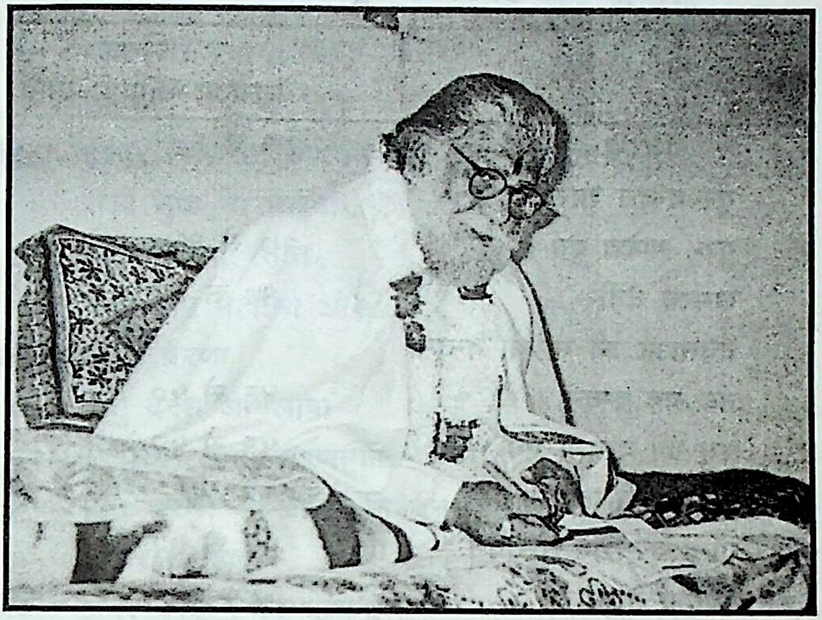

उद्‌बोधन

सेवक श्री देवी प्रसाद जी महाराज

शारदा शक्ति पीठासीन

मैहर, जिला-सतना (म.प्र.)

फोन : 32176 (आश्रम), 32186 (अमरगुफा)

(उन्हीं के हस्तलिपि एवं हस्ताक्षर सहित)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

- प्रसंग सूची -

प्रसंग		संख्या श्लोक, चौपाई, दोहा
१.	मंगलाचरण गुरु-वन्दन शारदा	१ से ६
२.	गुरु, गणेश एवं	७ से १६
	समस्त देवी-देवताओं की महिमा वन्दना	१७ से ४६
३.	नव ग्रह वन्दना	४६ से ५०
४.	प्रभु की वन्दना एवं दर्शनों की कामना	५१ से ५२
५.	योगीश्वर-शिव-संस्तवन एवं मन्त्रोद्‌घाटन	५३ से ७२
६.	शिव-महिमा, शिव-भक्ति की प्रेरणा एवं अवतार व शिव-शक्ति अभिन्नता	७३ से ८३
७.	हनुमत-स्तुति-वन्दन	८४ से ८७
८.	ब्रह्म शक्ति निभैद त्रिवेणी	८८ से ८६
६.	शारद महिमा	६० से ६६
१०.	भाव नृत्य साधना	६७ से १००
११.	शारद भक्ति प्रेरणा	१०१
	रचना समर्पण	१०२ से १०५
१२.	आत्म निवेदन	१०६ से १०८
	एक सत्ता	१०६
१३.	शास्त्र पठन व आचरण	११० से ११२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	सस्य विचारण सतकर्म	११३
	षट्विकार ईश्वर भजन	११४ से ११७
		११८ से १३२
१४.	गीता वेद वेदान्त विद्वत आचरण प्रवचन	१३३ से १४२
१५.	ईश्वर निर्भरता, निवेदन सत्य सुधा मां शारदा	१४३ से १४५
१६.	मातु महिमा, स्तुति	१४६ से १५३
१७.	मैहर धाम महात्यै और भक्ति प्रेरणा	१५४ से १७३
१८.	मातु दरश अभिलाषा पुरुषार्थ, कृपा, शरणागति	१७४ से २०६
१६.	मातु चरणों की प्रीति, निवेदन पद रज महात्म्य	२१० से २१४
२०.	अमर वरदान की याचना ज्ञान भक्ति शरणागति	२१५ से २२६
२१.	कृतज्ञता ज्ञापन, निर्भरता	२३० से २३७
२२.	समपर्ण शरणागति मातु कृपा सुमिरन भजन भक्ति भाव प्रेरणा	२३८ से २५१
२३.	चतुर्दशी व्रत, चारधाम	२५२ से २५६
२४.	मातु महिमा, ज्ञान भक्ति वैराग भक्ति-सार, तत्व, सुमिरन भाव नृत्य, ज्ञान अभिलाषा परम गति, आत्म निवेदन	२६० से २८५
२५.	विशेष प्रार्थना ग्लानि, विनय शरणागति याचना	२८६ से ३१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्लोक ।।

गुरु:यंत्रो गुरु:तंत्रो गुरु:मंत्रोर्थ रूपिणम्।
गुरु:शब्दः ब्रह्म तत्वं यंत्री रूपाय ते नमः।। १

मनसा सत्य विचारेण कायै वाच्यैस्तथैव च।
वाणी संयमिनं नित्यम् भक्तियोगस्य ज्ञान दम।। २

हस्ते स्फाटिक मालिकां ब्रह्म-विद्या च पुस्तके।
हंसासना चतुर्भुजाम् वाग्देवीं नमोस्तुते।। ३

सप्तैस्वरा स्वरैश्वर्याम् नादं ब्रह्म स्वरूपिणीम्।
सारं ददाति शारदां द्वैता द्वैतस्य वन्दिनीम्।। ४

धूपं न दीपं नचस्याज्ञ पूजा।
पाठं नचस्येन्द्रियस्यादि दमने।। ५

ज्ञाने न ध्यानं न मन्त्रश्च जापे।
चित्तस्य अम्बेसु नश्यन्ति पापे।। ६

बन्दऊँ प्रथमहि गुरु के चरणा।
पुनि बन्दऊँ गणपति दुखहरणा।। ७

तीजे बिनवउं शारद माई।
आवहु मन-उर-कण्ठ सुहाई।। ८

जय गज बदन गजानन स्वामी।
विघ्न बिनायक अन्तर्यामी।। ९

उमा सहित बन्दउं शिव चरणा।
राम प्रेम शिव जांहि न बरणा।। १०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्पति-पालन-प्रलय कारिणी।
जय जय शारद भक्त तारिणी।। ११

सहस कोटि बन्दउँ जगदम्बा।
जय जय जयति शारदा अम्बा।। १२

सुनहु मातु जगदम्ब भवानी।
कोटि वार बन्दउं सन्मानी।। १३

बन्दउं सकल चराचर प्रानी।
ब्रह्म तत्व मय सब जग जानी।। १४

सकल देह जग जीव समाना।
बन्दऊँ अंश ब्रह्म सब जाना।। १५

पुनि पुनि बन्दउँ गुरु के चरना।
शारद सागर जाहि न बरना।। १६

।। दोहा ।।

सद-गुरु की सत् बन्दना, सतगुण ही सत् सार।
सत् स्वरूप निर्गुण सगुण, सत्य न जीव बिसार।। १७

सत्य धर्म अरु मर्म सत्, सत्यहि कर्म सुजान।
सत्य ज्ञान अरु ध्यान सत्, सत्य गुरू भगवान।। १८

वेद शास्त्र हारे थके, करि नहिं सके बखान।
नेति नेति कहते लिखे, गुरू ब्रह्म का ज्ञान।। १६

गुरु गणेश की बन्दना, कोटि कोटि शत बार।
काम क्रोध मद लोभरिपु, नाहिं सतावे चार।। २०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धी दाता! बुद्धि दो, गण पति कण पति आप।
बिनय बिनायक हे प्रभो!, हर बालक हर ताप।। २१

गणपति शारद बन्दना, बिनय करूँ कर जोर।
दोउ निमन्त्रण लीजिये, सुनहु प्रार्थना मोर।। २२

चरणों में इक बन्दना, सुनिये मोर पुकार।
आया हूँ इस जगत में, जाऊँ ना बेकार।। २३

प्रभु पद पंकज बन्दना, बिनय करूँ कर जोर।
भक्ति आपनी दीजिये, आन बसहु चित चोर।। २४

नव दुर्गों के चरण में, मेरा नित्य नित्य प्रणाम।
नव परान्त सत् शून्य है, ओउम् ब्रह्म हरि नाम।। २५

सुनहु भवानी शारदा, सन्मुख रहो हमेश।
तीन देव बन्दन करें, ब्रह्मा विष्णु महेश।। २६

मस्तक में शशि शोभता, कण्ठ मुण्ड की माल।
हर हर तुम्हें प्रणाम है, तुम कालहु के काल।। २७

सिया राम के साथ में, लक्ष्मन अरु हनुमान।
सब को मेरा प्रणाम है, दीन बन्धु भगवान।। २८

सूर्य वंश के सूर्य हो, हे रघुनन्दन राम।
मन मानस मणि आप हैं, शत् शत् तोहि प्रणाम।। २६

वायु पुत्र को है नमन, कोटि कोटि शतबार।
प्राण वायु में वास हो, आपहि चालन-हार।। ३०

बिनय करुं हनुमान की, बल बुद्धी दातार।
राम नाम के जाप से, भक्त करहिं भव पार।। ३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु की पूजा बन्दना, कबहु बन्द ना होय।
जाकी होवहिं बन्द ना, जान बन्दना सोय।। ३२

ओउम् ब्रह्म श्री कृष्ण जी, निर्गुण से साकार।
सब धर्मों को त्यागि के, बन्दउ अंगीकार।। ३३

गागर में सागर भरो, नटवर नागर मोर।
कोटि बार बिनती करूँ, आवहु माखन चोर।। ३४

जनक मेरे निर्गुण यदपि, सगुणी मोरी माय।
करूँ उभय की आरती, दोनउ होंय सहाय।। ३५

सब जीवों के चरण में, मेरा सदा प्रणाम।
शक्ति रूप में व्यापते, घट घट वासी राम।। ३६

ब्रह्म शक्ति त्रय रूप में, ब्रह्मा विष्णु महेश।
लक्ष्मी शारद कालिका, सगुण रूप धरि वेश।। ३७

प्रलय पालना स्थिति, शक्ति बिना नहिं होय।
भेद कबहुँ नहिं मानिये, ब्रह्म शक्ति नहिं दोय।।३८

ब्रह्म शक्ति दोउ एक हैं, नाम रूप का भेद।
सारे शास्त्र प्रणाम हैं, गावहिं चारो वेद।। ३६

बन्दउँ सब संसार को, जान आपनो ईष्ट।
जो नहि जानत ईष्ट को, ताही होत अनिष्ट।। ४०

श्री माया श्री लक्ष्मी, मह लक्ष्मी श्री रूप।
श्री का सुमिरण कीजिये, श्री के श्री अनुरूप।। ४१

श्री का अन्त न होत है, मनुज देह का अन्त।
श्री अनन्त के रूप में, केवल श्री के कन्त।। ४२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्मी के दोउ रूप हैं, बिद्याबिद्या रूप।
इक ब्यापे संसार में, दूजा बिष्णु स्वरूप।। ४३

चतुरानन चित राखिये, मन नहि करहु मलीन।
भक्ति भाव अरु प्रेम से, हो जाओ सब लीन।। ४४

चतुरानन की बन्दना, चार चतुर जन कीन्ह।
काम क्रोध मद लोभ को, प्रभु चरनन धरि दीन्ह।।४५

सब जीवों में चतुर नर, चतुराई नहि भूल।
प्रभु का बन्दन कीजिये, नहि व्यापत त्रय शूल।। ४६

सोम शान्ति को देत है, मंगल मंगल काज।
बुद्ध शुद्धि करि देत हैं, गुरुवर हैं सिरताज।। ४७

शुक्रवार को मानिये, शुक्र करहिं दिन रैन।
शनी देव को पूज के, नर पावहि सुख चैन।। ४८

मार्तण्ड के नाम से, कीजे निश दिन जाप।
भव बाधा मिट जायेगी, नाहि सतावे ताप।। ४६

राहु भजै सत राह में, केतु सदा यश देत।
नव ग्रह की यह वन्दना, करिये होय सचेत।। ५०

प्रभु मोरी इक बन्दना, कर लीजै स्वीकार।
दर्शन अपना दीजिये, सगुण ब्रह्म साकार।। ५१

दीनबन्धु मैं दीन हूँ, तुम हो दीना नाथ।
दरशन अपना दीजिये, कीजै मोहिं सनाथ।। ५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

शम्भु नाथ मैं काहि अनाथा,
वास करहु मोरे मन साथा। ५३

शिव शंकर मोहि देहु विवेका,
नाम जपउं दिन रातहि एका। ५४

जय शिव शंकर औढर दानी,
तुम सम नाहिं कोउ बरदानी।। ५५

शम्भु चरण रति देहु सनेहा,
आन बसहिं मोरे उर गेहा। ५६

चन्द्र चूँण चूणामणि नामा,
कीजहु मन मति पूरण कामा। ५७

भूत नाथ हे! परम दयालू,
मुझ दीनहि पर होहु कृपालू। ५८

उमा नाथ शंकर अवधूता,
औढर दानी देहि अकूता। ५९

आरत हरण भक्त हितकारी,
कैलाशी शंकर त्रिपुरारी। ६०

शक्ति-उमा-शिव परम-प्रकाशा,
ध्यान किये होवहिं तम-नाशा। ६१

पंचानन शिव रूपहि जाना,
हर सृष्टी ब्रह्माण्ड समाना। ६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया डाकिनि काहि न खावा,
बॉचत जाको शम्भु बचावा। ६३

जग महि बस्तु सबहि भयकारी,
सब तजि नाम भजहु त्रिपुरारी। ६४

तीन ताप त्रय शूल कहाई,
शम्भु भजन बिनु देह न पाई। ६५

नाशय त्रय तापहि त्रिपुरारी,
चरण शरण तोरे असुरारी। ६६

मधुकर हिम गिरि कन्दर खोहा,
शम्भुहि चरननि योगिन्ह सोहा। ६७

भक्ति बिना जीवन दुख कारी,
जेहिन भजहि शंकर त्रिपुरारी। ६८

मुक्ति धाम अन्तर्मन काशी,
मोरे हृदय बसहु कैलाशी। ६९

शंकर नाम जपहु दिन राती,
जागहिं ज्योति दिया बिन बाती। ७०

कहन मरा में ब्रह्म समाना,
वशि वशि कहि भक्तन शिव जाना। ७१

उल्टा नाम जपहि दिन राती,
शिव वशि होवहिं करहिं प्रभाती। ७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

वशि वशि उल्टा मन्त्र है, सीधा शिव का नाम।
उल्टा सीधा जाप करि, भक्त जाहिं शिवधाम।। ७३

वशि बोले शिव होते हैं, मरा कहे से राम।
मरा मरा वशि बोलके, मिलहि राम शिव धाम।। ७४

शंकर शंकर सब कहे, कंकर कहे न कोय।
जो जन कंकर कहत है, शंकर कंकर होय।। ७५

कालहि खावइ जगत को, सो कालहि महाकाल।
शिव पद पंकज जाइये, शक्तिहि परम विशाल।। ७६

बन्द आँख नहिं देखिये, खुली आँख से देख।
तीन ताप त्रय शूल को, हर हर हरहि महेश।। ७७

वे जन जगत सनाथ हैं, कबहुँ न होय अनाथ।
जाके मस्तक हाथ हो, बाबा भूतहिं नाथ।। ७८

नाथों के एक नाथ हैं; बाबा भोले नाथ।
और न कोई नाथ है, जग महुँ सबहिं अनाथ।। ७९

माई माई सब कहें, बाबा कहे न कोय।
बाबा बाबा कहत ही, माई बाबा होय।। ८०

महादेव को पूजिये, और देव नहिं आन।
भक्त जनन को देत हैं, मन चाहा बरदान।। ८१

बा बा ऐसे नाम को, भज लीजै श्रीमन्त।
बाबा भोले नाथ ही, रूप धरे हनुमन्त।। ८२

इस निर्बल संसार में, सबल एक ही जान।
निर्बल जब को जानि के, भजु हनुमत बलवान।। ८३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

बज्र शक्ति बजरंग बली की,
राम कृपा-तरु जनक तलीकी। ८४

सुनहु पवन सुत हमरउ बन्दन,
चरण शरण देवड़ रघुनन्दन। ८५

हनू मान हन मानहि मोहा,
राम चरण हनुमानहि सोहा। ८६

नहिं हनुमत सम कोउ संसारा,
राम चरण रति प्रेम अपारा। ८७

।। दोहा ।।

अव लम्बन एक राम हैं, जननी हैं जगदम्ब।
ब्रह्म शक्ति निर्भेद है, नाम शारदा अम्ब।। ८८

शक्ति बिना नहिं ब्रह्म है, ब्रह्म बिना नहिं शक्ति।
भयहु त्रिवेणी जानिये, जब नर पावहि भक्ति।। ८६

अकथ कीर्ति यश शारदा, नहिं कोउ और समान।
ब्रह्मा विष्णु महेश मिलि, करते हैं गुण गान।। ६०

सब ज्योतिन की ज्योति जग, मातु शारदा ज्योत।
तीनहुँ लोक प्रकाशमय, चरण शादा श्रोत।। ६१

कोटि चन्द्र रवि दामिनी, दमके शारद रूप।
ब्रह्मा हरि हर पूजते, पूजहिं मुनि सुरभूप।। ६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उडगन रवि ग्रह चन्द्रमा, चमक रहे आकाश।
शारद इनको देति है, अपना दिवरू प्रकाश।। ६३

तन्त्रहिं वीणा नाद है, यन्त्र चतुर्भुज रूप।
मन्त्र शारदा नाम है, जाप करहिं सुरभूप।। ६४

नील सरस्वति नील मणि, नील कमल सी देह।
नील कण्ठ चरनन परे, आन बसहु उर गेह।। ६५

शारद इच्छा के बिना, डुलइ न वृक्षन पात।
ब्रह्मा विष्णु महेश भी, लेवइ आज्ञा मात।। ६६

महा रास की नायिका, तुम हो शारद माय।
भाव नृत्य अस दीजिये, जामे जग बिसराय।। ६७

भाव नृत्य की साधना, मातु मिलन की चाह।
दूजो जग नहिं दीखती, इससे अच्छी राह।। ६८

मोहिं न नाचे लाज कछु, भजन मातु का होय।
नाच नाच के शारदे, देवि रिझावहिं तोय।। ६९

जग नाचे चैतन्य प्रभु, मीरा नाची नाच।
झूठ जगत को भूल के, प्रभुहि मिलन जग सांच।। १००

धरा मातु की गोद में, बार-बार सब आय।
भक्ती ऐसी कीजिये, शारद गोद समाय।। १०१

काव्य कला आवइ नहीं, भावो का यह लेख।
चरणों में अर्पित करूँ, शारद दोष न देख।। १०२

माया वश जड़ जीव में, काव्य शास्त्र नहिं बोध।
चरणों में अर्पण करूँ, देवी देबहुँ शोध।। १०३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द-वन्द नहिं जानता, अगड़ तगड़ से दूर।
तव प्रसाद के लेख से, सुख मिलता भरपूर।। १०४

शारद सागर डूबि के, मोती रतनहि बीन।
ज्ञान भक्ति बैराग के, माला गूथहिं तीन। १०५

।। चौपाई ।।

गूढ़ शब्द आखर नहिं जाना,
क्षमहुं मोर त्रुटि बुद्ध सुजाना। १०६

मां शारद मोहि दीन्ह बड़ाई,
दोहा मम मन पैठि लिखाई। १०७

रचना मोर न जानउ काऊ,
लेखहु शारद मात प्रभाऊ। १०८

एकइ धर्म मरम जग एका,
एक बसइ मन रूप अनेका। १०६

।। दोहा ।।

रचना मोर न जानिये, देवहि देवि प्रसाद।
शब्दाक्षर के लेख से, जननि रहे जग याद।। ११०

माई बाबा एक हैं, नाम रूप का भेद।
तत्व ज्ञान से देखिये, समुझि परइ निर्भेद।। १११

सत्य ब्रह्म का रूप है, नित कीजे सत संग।
वर्णन द्वैता-द्वैत का, गावहि शास्त्र प्रसंग।। ११२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ना लिखना और है, सुनहि सुनाना और।
बिना शास्त्र धारण किये, जीव न पावहि ठौर।। ११३

मन के असत विचार तज, सत के राखि विचार।
और विचार न कीजिये, सत्य विचारहिं सार।। ११४

सत्य वचन सत् कर्म हो, सत् के मनहि विचार।
चार वेद छः शास्त्र का, देवि बतावहिं सार।। ११५

असत कर्म बहु सोचिये, सत कर्महि नहिं सोच।
वेद शास्त्र पढ़ि देखिये, सारहिं तत्व निपोच।। ११६

भक्ति नरायण पाइये, सत्य सुधा के पान।
शास्त्र परायण मत यही, सम्मत वेद पुरान।। ११७

अहंकार नर क्रोध वश, अनुचित उचित न जान।
वेद शास्त्र पढ़ि क्या हुआ, अन्तर भयो न ज्ञान।। ११८

शास्त्रहि बांचे वाचका, बचन न धारइ सांच।
जैसे मनुज शरीर में, लागी जोर किमाच।। ११६

पोथी पढ़ि जीवन चुका, चुका न शास्त्रहि लेख।
पढ़ना लिखना छाड़ि के, राम चरन हिय देख।। १२०

शंका कबहु न कीजिये, शास्त्रहिं लेख निशंक।
राम चरण हिय धारिये, मेटहिं भाल कुअंक।। १२१

पंडित कोऊ मूर्ख है, कोउ दोऊ के बीच।
जड़-बुद्धि नहिं जागते, काहि न अमृत सींच।। १२२

राम नाम नहिं लेत है, केवल पुस्तक ज्ञान।
मूरख पंडित जानिये, दोनउ एक समान।। १२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेद शास्त्र बांचे भले, कबहु न हो मन चंग।
राम नाम के जाप से, चढ़ै न जब लौं रंग।। १२४

अहंकार तन मोह का, जब लगि मन में खान।
मूरख पंडित जानिये, दोनेऊ एक समान।। १२५

कलुषित मन की भावना, कलुषित सकल विचार।
वैसे नर को क्या करे, शास्त्रहिं बचन उचार।। १२६

मन की बांत न मानिये, बुद्धी न्यायाधीश।
सत्य कर्म अपनाइये, सत्य समुझि जगदीश।। १२७

सत कर्मों के तेज से, नरहि प्रकाशित होय।
बाहर भीतर सत्य का, उदित ज्ञान जब होय।। १२८

सत् अगनी का रूप है, यज्ञ स्वयं भगवान।
षट विकार की आहुती, देते भक्त सुजान।। १२६

पानी पीटे ना मिले, ना पटके सिर पैर।
कर्म किये बिन सत्य के, जीव न जानहिं खैर।। १३०

असत कर्म बहु सोचिये, सत नहि सोच विचार।
अहं-चित्त-मन-बुद्धि के, बीच रखहि प्रभुचार।। १३१

आतम उत्तम पंथ में, मध्यम दोऊ बीच।
नीच न जाने सत्य पथ, लिपट रहा जगकीच।। १३२

गीता गीता सब पढ़े, तागी पढ़े न कोय।
जो जन त्यागी पढ़ि लिये, गीता ज्ञानी होय।। १३३

क्या झूठा क्या साँच है, जान सके ना कोय।
जो भी साँचा जानता, वह भी साँचा हो।। १३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गली घाट नहिं बोलिये, शास्त्रहि वचन विशेष।
जाकी जैसी पात्रता, ताको तस उपदेश।। १३५

श्रोता सत सुनता नहीं, वक्ता शास्त्रहि बांच।
श्रोता वक्ता मानिये, जो लखि लेवहि साँच।। १३६

पर की बचन सुनाइ के, शास्त्र बचन मत बोल।
श्रोता वक्ता कान से, हो जायेगें गोल।। १३७

पर से पंखा होत है, शास्त्र बचन उड़ि जाय।
सुनिये और सुनाइये, श्रवण रन्ध्र नहिं जाय।। १३८

प्रवचन के सुन्दर बचन, हिय महि करत प्रवेश।
श्रोता वक्ता मानते, शास्त्रहि वचना देश।। १३९

पढ़ि पोथी पंडित भयो, ज्ञान स्वपिण्ड न होय।
जानत जोड़ स्व पिण्ड को, सोई पंडित होय।। १४०

वेद वेद सब ही कहे, कोइ न जाने वेद।
जो जन जाने वेद को, जीवहिं होय न खेद।। १४१

वेद शास्त्र नहिं अन्त है, फिर कैसा वेदान्त।
जो जाने वेदान्त को, हो जायेगा शान्त।। १४२

राम सहारा साँच हैं, और सहारा झूठ।
शब्दाक्षर को जनिये, वाणी देवि अनूठ।। १४३

मै इक शंख ढपोल हूँ, वाणी है अनमोल।
वाणी मोल न छाड़ि दे, भाव भक्ति के बोल।। १४४

चार वेद छः शास्त्र को, सुधा शारदा जान।
चिन्तन चित से कीजिये, तजि माया अभिमान।। १४५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा - महिमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

पराशक्ति हे ! मंगल करणी,
महिमा जाहिं न वेदहिं वरणी। १४६

मूल प्रकृति जगदम्ब भवानी,
ब्रह्मा हरिहर देव न जानी। १४७

जो जग जानइ मंगल मूला,
सार तत्व शारद नहिं भूला। १४८

सरस्वती लक्ष्मी अरु काली,
तीनहुं रूपहिं मैहर वाली। १४९

काली कालहि करइ बिनाशा,
प्रेम भक्ति होवइ विश्वासा। १५०

मैं मूरख जड़ जीव अज्ञानी,
कृपा प्रेम अब देहु भवानी।। १५१

ऐम् ऐम् ऐन्द्राणी रूपा,
ह्रीम् ह्रीम नाशय भवकूपा। १५२

श्रीम् श्रीम् हरि चरण निवासा,
क्लीम् क्लीम् हर हृदय प्रकाशा। १५३

।। दोहा ।।

परम ज्योति जगदम्बिका, जाको शारद नाम।
ब्रह्म तत्व बरदायिनी, बैठी मैहर धाम।। १५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराकार माँ शारदा, भयीं जगत साकार।
बसी चराचर जगत में, सदा मातु ओंकार।। १५५

सब धर्मों के त्याग से, एकइ अंगीकार।
प्रेमी भक्तों के लिये, निर्गुण भा साकार।। १५६

मैहर बैठी शारदा, बन कर न्यायाधीश।
अर्जी आन लगाइये, नहीं लगेगी फीस।। १५७

विद्यालय विद्या बहुत जग, बुद्धिहि आलय एक।
मैहर देवी जाइके, देखहु रूप अनेक।। १५८

मैहर माटी दिव्य है, कण कण शारद वास।
माथा जन जन टेकते, पूरण होती आस।। १५६

शारद माँ सी माँ नहीं, अति सुन्दर सा नाम।
सब धामों का धाम पति, मैं-हर मैहर-धाम।। १६०

शारद नाम जहाज है, भक्तिहिं जग पतवार।
जग सागर जंजाल से, मातु करेगी पार।। १६१

माँ शारद के रूप की, आरति करें कपूर।
आरत ताहि न जानिये, भक्ति किरण नहिं दूर।। १६२

एक भरोसा मातु की, कीजे दृढ़ विश्वास।
इच्छा पूरण जानिये, भक्त न होंहि निराश।। १६३

कर्म समर्पण कीजिये, माँ शारद के द्वार।
अपने पास न राखिये, कर्म अकर्महि भार।। १६४

मैं मैं कहना छाड़ि के, तूँ तूँ कहना बोल।
मैहर माई शारदा, देतीं फाटक खोल।। १६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मै कर्ता को त्यागि के, तू कर्ता पहचान।
कर्ता को कर्ती मिले, सब कर्ता भगवान।। १६६

सब जीवो की साक्षी, देखहि सारे कर्म।
देबी तुमहिं मिनाक्षी, देवहि सांचा धर्म।। १६७

सार नहीं संसार में, तुम सारों की सार।
शारद नाम पुकारता, मोहिं करो भव पार।। १६८

बुद्धि वाणी अरु ज्ञान की, देवि शारदा माय।
आया तोरी शरण में, माता होहु सहाय।। १६९

देवि देहु सत राह को, राही भूल न जाय।
दरशन पाऊँ आपका, एकइ मोरी चाह।। १७०

यश कीरति नहिं चाहिये, नहि वैभव जग केर।
वेगि दरश माँ दीजिये, काहि लगावहु देर।। १७१

माया जग बाजार में, मोसों चलो न जाय।
माता रक्षा कीजिये, लेवहु मोहिं बचाय।। १७२

मोहिं न हर्ष विषाद कछु, तुमहिं करो सो ठीक।
मातु दरश अब दीजिये, जग लागहिं नहिं नीक।।१७३

।। चौपाई ।।

एकइ दुख मोरे मन माहीं,
मातहि दरश केहि बिधि पाहीं। १७४

मातु दरश नहिं जतनइ जानी,
बिनय प्रेम सत मिलहिं भवानी। १७५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोरि माइ। पुरुषारथ हारे,
धाइ पड़ा। मैं द्वार तिहारे। १७६

तोरे चरण मोर मन भाया,
मो पर करहु मातु अब दाया। १७७

जड़ता जाइ। न मन अभिमानी,
कृपा करहु जग जननि भवानी। १७८

श्रुति स्मृति पुराण बहु गाई,
शारद भक्तिहिं जड़ता जाई। १७९

मम ईच्छा पुरवहु महतारी,
आयू शरण जगत मन हारी। १८०

देवि प्रसाद कहत सकुचाई,
अब लौं मातु दरश नहिं पाई। १८१

।। दोहा ।।

सुनहु भवानी शारदा, मन में रहती क्रान्ति।
कृपा मातु दरशाइये, आ जाये मन शान्ति।। १८२

दया सिंधु जग जानता, दया करहु जगदम्ब।
मोरे कारज हेतु माँ, कीजो नाहिं बिलम्ब।। १८३

देवी आवा गमन में, दुख नहिं तनिकउ मोहि।
चरण शरण में लीजिये, नयनन देखहि तोहि।। १८४

योग ज्ञान से हीन मैं, भक्ति न मोरे पास।
फिर भी दरशन चाहता, पूरण कर दो आस।। १८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम क्रोध मद लोभ का, मोरे घट में वास।
आन बिराजो शारदा, छूट जाय भव पास।। १८६

ऐसी बुद्धी दीजिये, मन निर्मल हो जाय।
कोटि जनम सेवा करूँ, चरण शारदा पाय।। १८७

परा शक्ति परमेश्वरी, परा शरण में आय।
शारद मोहीं सम्हारिये, लेहु चरण लिपटाय।। १८८

प्रेमा भक्ती दीजिये, प्रेम बसहिं दिन रैन।
हिय में आन विराजिये, हे! माँ सुन ले बैन।। १८९

देवी! देवि प्रसाद को, दीजो यह वरदान।
माया मय संसार में, होवहिं ना अभिमान।। १९०

जग जननी जग बन्दनीं, जग की पालन हार।
प्रेम चरण का सत्य है, झूठा है संसार।। १९१

मातु चरण सुख-खानिजो, प्रेमा भक्ती होय।
अमृत रस को पाइके, संसारी सुख खोय।। १९२

आचरण की कामना, हिय में आन विराज।
श्रवण रन्ध्र सुनता रहूँ, नूपुर की आवाज।। १९३

नन्द बने आनन्द हैं, महिमा माँ पहचान।
मातु चरण में प्रीति हो, जामे पूरण ज्ञान।। १९४

सद्चित तुम आनन्द हो, और हमारे प्राण।
भक्ति शारदा दीजिये, मिट जाये जग त्राण।। १९५

ज्ञान योग वैराग्य की, मैं नहिं जानूं राह।
एक बात मन में बसी, मातु चरण की चाह।। १९६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋद्धि सिद्धि नहिं चाहिये, नहिं यश कीरति मान।
मातु चरण दो शारदे, दूर करहु अभिमान।। १६७

ज्ञान कर्म अरु योग का, मन में नहि लवलेश।
मातु चरण बसते रहें, हिय में इच्छा शेष।। १६८

चौसठ योगिनि घूमती, माँ शारद के द्वार।
दस द्वारों को खोल के, माँ के चरण पखार।। १६६

मन पवित्र श्री धाम है, जप गंगा स्नान।
मातु चरण में प्रीति हो, धर्म एक सत् जान।। २००

माँ गंगा की धार से, मैल सबहि बहि जाय।
तेरे चरण परवारि के, गोद तेरी नर पाय।। २०१

।। चौपाई ।।

ज्ञान गंग बह चरननि धारा,
चरण शारदा भक्त निहारा। २०२

शारद चरण भगत हिय देखी,
सो नरं जानहिं भगत बिशेषी। २०३

मै अधमी पातक नर एका,
कृपा शारदा देउ विवेका। २०४

जापर कृपा मातु की होई,
प्रेम ब्रह्म जानइ नर सोई। २०५

देवि प्रसाद देहु मन मानी,
तुमहि छाड़ि हम काहु न जानी। २०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरश बिना जीवन दुखदाई,
दरश देहु अब शारद माई। २०७

मो सम नाहिं कोउ बड़भागी,
शारद चरण प्रीति मन लागी। २०८

मातु चरण अवलम्बित जाके,
सकल पदारथ करतल ताके।। २०९

।। दोहा ।।

शारद देवि प्रसाद को, चरण शरण में लेहु।
चरण धूलि पाता रहूँ, ऐसा वर मोहिं देहु।। २१०

तूँ है दाता शारदा, मैं कैसे दूँ फूल।
मैं तो आया मांगने, चरण कमल की धूल।। २११

देवी देहु प्रसाद में, चरण कमल की धूल।
शारद तोहिं चढ़ाऊँ मैं, विनय प्रेम का फूल।। २१२

मातु चरण रज आँजते, साधक सिद्ध सुजान।
बिन आँजे भव जाल का, नहिं जाता अज्ञान। २१३

कोटि जनम के बिनय को, सुनहु भवानी आज।
प्रेम चरण रज दीजिये, सुन मेरी आवाज।। २१४

जन्म मरण के चाक मह, पिसत मरत सब जीव।
चरण भक्त बच जायेगा, जाकी पक्की नीव।। २१५

तुम जननी जगदम्बिका, सब की जानन हार।
चरण शरण में राखिये, बिपदा आन सम्हार।। २१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय हो माई शारदा, जय हो मैहर धाम।
कृपा करहुँ अन पायनी, भक्ति देहु निष्काम।। २१७

दुर्गा बन माँ शारदा, आल्हा खड्गहिं दीन्ह।
तासु भावना भक्ति लखि, ताहि अमर कर दीन्ह।।२१८

एक भरोसा आस मोहि, कृपा करहु जगदम्ब।
मोहिं अमरता दीजिये, काहें करत विलम्ब।। २१६

नहीं भक्ती नहिं योग बल, और न मोरे ज्ञान।
कृपा शारदा की जिये, मै हर ले अज्ञान।। २२०

हरि हर करते बन्दना, ब्रह्मा वेदहिं ध्यान।
मैहर बैठीं शारदा, देंहि ब्रह्म का ज्ञान।। २२१

सद्गति देतीं शारदा, दुर्गति माया जाल।
मैहर माई आइके, करती भक्त निहाल।। २२२

सभी स्वरों की ईश्वरी, वैसा स्वर मोहि देहु।
करुणा भरी पुकार सुनि, हाथ मोर गहि लेहु।। २२३

बाँह पकड़िये शारदा, पुरुषारथ है नाहिं।
सारे जग से हार के, शरणागतिहि समाहिं।। २२४

मै निर्बल मां शारदा, पुरुषारथ नहिं पास।
शरणागति में लीजिये, चरनन देहु निवास।। २२५

जै हो माई शारदा, कृपा करहु भरपूर।
आया तेरी शरण में, अब जनि करिहो दूर।। २२६

छाड़ि तुमहि जाऊँ कहाँ, जगत न देवइ ठौर।
शरणागति में लीजिये, आप सिवा नहिं और।। २२७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरा मुझको चाहिये, यदपि अधूरा काम।
शरण आपनी लीजिये, आया मैहर धाम।। २२८

तुम दाता संसार की, देती हो दिन रात।
शरणागत की रक्षिका, रक्षा कर हे मात।। २२९

।। चौपाई ।।

माया संगहि प्रीति धनेरी,
कृपा दृष्टि से मातहु हेरी। २३०

पुनि पुनि जनम हुआ संसारा,
चरण देइ मम ओर निहारा। २३१

मोरे मन भरोस अब भउऊ,
शारद मातु गोद जब लयऊ। २३२

पाके चरण सुखी मैं माता,
नित गुण गान तोर अब गाता। २३३

मोरे अवगुन अगिन अलेखा,
मातु शारदा तुम नहिं देखा।। २३४

देह गेह परिवर्तन मोरे,
होहिं कृपा जगदम्बा तोरे। २३५

कोटि सूर्य सम परम प्रकाशू,
मोरे मन शारद करि वासू। २३६

पुनि पुनि जनम तरूं भू लोका,
शारद मा तर करहु अलोका। २३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

नित्यानन्दी शारदा, नित्य देहु निज नेह।
विनय मेरी सुन लीजिये, सदा बसहु उर गेह।। २३८

तन मन परमानन्द में, परमानन्द स्वरूप।
अन्त:करण विराजिये, माँ मेरे अनुरूप।। २३६

जड़ चेतन मह देखते, व्यापक रमा निवास।
तिनके हिय में जानिये, पराशक्ति का वास।। २४०

माई मेरी नाव है, माई है पतवार।
माई खेवन हार है, पार करे मझधार।। २४१

एक भरोसा माइ का, भक्तो करके देख।
चार वेद छः शास्त्र मे, तुम्हे मिलेगा लेख।। २४२

मनसा वाचा कर्मणा, शरणागति जगदम्ब।
भक्त जनों के हेतु में, करती नहीं बिलम्ब।। २४३

धर्म कर्म को जानिये, शरणागति हो एक।
मातु चरण को पाइये, मन से माथा टेक।। २४४

देवी के दरबार में, परम शांति सुख चैन।
मातु अविद्या छाड़ि के, भजु विद्या दिन रैन।। २४५

सन्मुख माई शारदा, दाहिन लक्ष्मी माय।
बाएं बैठी कालिका, दुष्टन लेवइ खाय।। २४६

य यम राजहिं बीज है म शक्ती का रूप।
माँ माँ कहते जाइये नाहिं परे भवकूप।। २४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छा माई जगत में, पुत्र देत दुःख देव।
अन ईच्छा की मातु से, बालक हो सुखदेव।। २४८

बाहर फाटक बन्द करि, मन के फाटक खोल।
जै हो माई शारदा, जय माँ जय माँ बोल।। २४९

मा या उल्टा कीजिये, या मां होगी पास।
विद्या पासहि राखिये, तजहु अविद्या वास।। २५०

मा से माई शारदा, 'या' जानहिं यमराज।
माँ माँ कहते जाइये, तारन तरन जहाज।। २५१

अनुचित उचित विचारि के, मीठे बोले बैन।
सुख शान्ती मिल जाएगी, सदा रहे मन चैन।। २५२

बाहर ताला बन्द हो, भीतर ताला खोल।
चिन्ता काहु न कीजिये, माई माई बोल।। २५३

माइ माइ कहते रहो, माइ नहीं है दूर।
माई के दरबार में, सुख पावइ भरपूर।। २५४

ज्ञान भक्ति बैराग का, माँ देती है दान।
विनय प्रेम वश लीजिये, तजिये अपना मान।। २५५

अहं बुद्धि मन चित्त से, दस इन्द्रिय बस होय।
नाम शारदा जपहि जे, चतुर्दशी व्रत सोय।। २५६

विस्मृति कबहू न कीजिये, माँ शारद का नाम।
वाही चरण परवारिये, पावइ चारउ धाम।। २५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

जग महै नहिं कछु सोचन जोगू,
सद् सोची नहिं आत्म वियोगू। २५८

शारद सुमिर मनहि दिन राती,
रटत पपीहा जिमि जल स्वामी। २५६

शक्ति शारदा सब जग जाया,
शिव विरंचि हरि जानि न माया। २६०

अमर गुफा मह ज्योति प्रकाशा,
दरश परस तम होहि विनाशा। २६१

मातु मोहि अब अति विश्वासा,
तोर दरश बिनु जाइ न श्वासा। २६२

क्षमा करहुं जनि मोरि ढिठाई,
करहु आचरण मन चित लाई। २६३

मातु चरण पंकज हिय देखी,
ज्ञान भक्ति बैराग विशेषी। २६४

मंगल मूल अमंगल हारी,
जो नर भजहि जगत महतारी। २६५

।। दोहा ।।

हुकम-उदूली ना करे, साई के दरबार।
सांची बात बतायेगी, बुद्धी की सरकार।। २६६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सार भगति की चाहते, तजि दीजो संसार,
नाम शारदा सार है, बाकी सब निस्सार।। २६७

भक्ती ऐसे नाम को, मत कीजे बदनाम।
इच्छायें सब त्यागि के, लेहु शारदा नाम।। २६८

समर भूमि संसार है, योद्धा मनुज विकार।
विजय श्री को पाइये, मातु नाम तलवार।। २६९

काहि लिखे नर लेखनी, ब्रह्मा थकि थकि जाय।
महिमा शारद नाम की, ब्यासहु ना लिखि पाय।। २७०

हे जननी! जग बन्दनी! जग की पालन हार।
भक्ति आपनी दीजिये, अवगुण मोर विसार।। २७१

देवि पुजारी शारदे, मैं सुमिरूँ दिन रैन।
आन बसहु जगदम्बिके, मोरे दोनउ नैन।। २७२

भाव नृत्य अस डूबिये, तन मन रहे न याद।
कीर्तन शारद नाम का, सुनिये वीणा नाद।। २७३

सुध-बुध अपनी भूलही, भूल सकल संसार।
भूलहु नहिं भय हारिणी, शारद सारहि सार।। २७४

मोहि शरम नहिं लाज कछु, नाचूं जग बाजार।
बीणा मातु सुनाइये, अब सुनि मोरि पुकार।। २७५

जेहि पिता श्री शारदा, देवी पाइ प्रसाद।
कोटि जन्म सुनता रहूँ, तेरी वीणा नाद।। २७६

मैं मूरख संसार वश, सूझ बूझ नहिं मोहिं।
शारद देवि पुकारता, भनक परइ ना तोहिं।। २७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं वाणी के पास में, वाणी मेरे पास।
वाणी से वाणी कहे, भर दो दिव्य प्रकाश।। २७८

अमर गुफा को जानिये, माँ शारद का वास।
सूर्य चन्द्र नभ भूमि सम, होगा मेरा निवास।। २७९

झूठ न जानइ साँच को, साँच न जानेइ झूठ।
झूठ साँच के द्वार से, बाहर होंहि अनूठ।। २८०

रजो तमो सत त्यागिये, हो जाओ गुण पार।
पार किये भव पार है, तजि माया संसार।। २८१

मैं संसारी जीव हूँ, बुद्धि विवेक न ज्ञान।
शारद मोहि न भूलना, हूँ बालक नादान।। २८२

क्षमा करहु अपराध को, मैं हूँ बालक तोर।
आकर मुझे उबारिये, माया है घरघोर।। २८३

देवि न ऐसो राखिये, जस केला का पात।
बेर संग नहिं दीजिये, बार बार फट जात।। २८४

कोउ दाता कोउ दूत है, कोऊ जगत सपूत।
हैं सपूत शारद कोऊ, कोऊ मातु कपूत।। २८५

।। चौपाई ।।

देवी मैं - हर तुम जग जाया,
निर्मल करहु मोर यह काया। २८६

सुनहु मातु मैं तोर कपूता,
मोरे अवगुण अगिन अकूता। २८७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य कहहुं लिखि का गद कोरे,
मुक्ति न होय दया बिनु तोरें। २८८

करहुँ क्षमा शारद मम खोरी,
षट विकार वस मति भइभोरी।। २८६

बारहिं बार परा मैं धरनी,
देवी मोर सुधारहु करनी।। २६०

देवि प्रसाद एक वर दीजे,
बुद्धि विवेक बिमल मति कीजे।। २६१

मोरी व्यथा सम्हारो माई,
दरश देहु अवहु तम छायी।। २६२

मोरे मन नहिं जाय विषादा
मातु देवि कुछ देहु प्रसादा।। २६३

।। दोहा ।।

राई को पर्वत करे, पर्वत करती राइ।
परा शक्ति जगदिम्बका, नाम शारदा माइ।। २६४

पावन को पावन करहिं, कौन बड़क पन तोर।
मातु अपावन पावनी, नाशहु पातक मोर।। २६५

कोटि जनम से पाप रत, अबहूँ अघ आधीन।
कैसे मातु उबारिहो, मैं अघ परम प्रवीन।। २६६

नहिं पूजा नहिं पाठ बिधि, नहीं शास्त्र का ज्ञान।
विनय सुनहु मा शारदे, मैं बालक नादान।। २६७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन जन की जन-ईश्वरी, छलकत नयना नीर।
अन्तर जान निहार तुम, अब हर मोरी पीर।। २९८

क्षमामयी मोहि देक्षमा, क्षमा स्वरूपा आप।
क्षमा योग्य यद्यपि नहीं, तदपि क्षमा कर पाप।। २९९

अवसि चरण रख लीजिये, जदपि कुपुत्रहि जान।
तब विशाल हिय भेद नहिं, पुत्र कुपुत्र समान।। ३००

मैं अज्ञानी मोह-वश, भटक रहा संसार।
तुम बिनु माता शारदा, कौन लगावहिं पार।। ३०१

दाता नहिं संसार में, का से माँगू आज।
माँगहु शारद आप से, मोहिं न लागइ लाज।। ३०२

ज्ञान भक्ति नहिं योग बल, नहिं पुरुषारथ मोर।
चरण शरण में लीजिये, मातु भरोसा तोर।। ३०३

बोध न होवइ शोध बिन, शोध बिना सत्कर्म।
योग भक्ति अरु ज्ञान बिनु, जीव न जानहिं मर्म।। ३०४

कमला विमला शारदा, बइठ कमल मति हंश।
मातु कृपा कर दीजिये, जीव आपका अंश।। ३०५

माँ सर्वज्ञा शारदा, मैं मूरख अनजान।
दया दृष्टि अब कीजिये, हो जाये निजज्ञान।। ३०६

मैंहर माई सारदे, शारद तेरो नाम।
सार तत्व को दीज़िये, हो जाऊँ निष्काम।। ३०७

हे बिमला बिमलेश्वरी, मोहिं बिमल मति देहु।
दुर्मति को हर लीजिये, शरणागति महुं लेहु।। ३०८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातुहि नाम मीनाक्षी, मम इच्छा कर पूर।
षट विकार मन देह से, मातु करहु तुम चूर।। ३०९

ब्रह्म बोध भर दीजिये, मन मानस में आय।
चित्त चढ़ाऊँ आप को, वर दो शारद माय।। ३१०

भुवन पती भुवनरेश्वरी, त्रिभुवन में है राज।
मोरे अन्तः भुवन में, आवहु मातु बिराज।। ३११

सदा रहूँ लव लीन मैं, शरण तुम्हारी आय।
भक्ति आपनी दीजिये, जय हो शारद माय।। ३१२

काम क्रोध मद लोभ की, जारे तन मन ज्वाल।
शीतल कर माँ शीतले, मो पर होहु कृपाल।। ३१३

लख चौरासी देह तजि, पाया मनुज शरीर।
दर्शन अपना दीजिये, मनवा मोर अधीर।। ३१४

नित्या नन्द निवासिनी, नित्य बसहु हिय मोर।
ज्ञान भक्ति भर दीजिये, विनय करूँ मैं तोर।। ३१५

देवी खड़ा जमीन में, आसमान की ताक।
थोड़े दिन की जिन्दगी, मिलइ न ढूढ़े खाक।। ३१६

तू ममता की सिन्धु हो, मैं इक बिन्दु असार।
बिन्दु सिन्धु में लीजिये, करुणा की आगार।। ३१७

तड़पन ऐसी चाहिये, बिन पानी जस मीन।
मिल जायेगी शारदा, मोह जगत हो क्षीन।। ३१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

– प्रसंग सूची –

प्रसंग		संख्या चौपाई, दोहा
२५.	संसार की गति	३१६ से ३२२
२६.	जगमाया, जगत की निस्सारता काल गति, प्रभु शरण की प्रेरणा	३२३ से ३३४
२७.	जीव और माया, जीव की गति	३३५ से ३३८
२८.	मानव तन का महात्म जीवन का उद्देश्य नर तन एक सुअवसर जग निस्सार, कालगति	३३९ से ३५०
२९.	नर तन प्रभु-कृपा, षड्विकार	३५१ से ३५४
३०.	माया मोह का त्याग, तन मन की सुन्दरता असत कर्मो का त्याग, भक्ति भाव, माया मुक्ति	३५५ से ३६६
३१.	माया की प्रबलता, प्रभु सुमिरन, परम लक्ष्य	३६७ से ३७०
३२.	निष्ठुर माया, निस्सारता, काल गति, भगवत् प्रेरणा	३७१ से ३८२
३३.	जग त्राता एक मात्र ईश्वर	३८३ से ३८६
३४.	तन, मन, जगत की निस्सारता भजन की प्रेरणा	३८७ से ३९८
३५.	कर्मगति, भोग	३९९ से ४०२
३६.	कर्मफल, कर्म विधान, योग और भोग और नियति।	४०३ से ४१४
३७.	असत कर्म और फल	४१५ से ४१८
३८.	आत्म निरीक्षण, विधि विधान अटल सत्य निष्कामता, सदाचार प्रभु प्रेम सत संगति	४१९ से ४३०
३९.	असत कर्म ज्ञान की बाधा, कर्मफल भोग	४३१ से ४३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४०.	छल कपट त्याग, विषय वासना का त्याग सतकर्म प्रेरणा, जीवन व काल का महत्व गुरुशरण की प्रेरणा। गुरु महिमा, जीव जागृति	४३५ से ४५२
४१.	ईश्वर से विमुख जीवन जीव जन्तु का है। कुसंग, षड्विकार प्रभु प्रीति में वाधक, साक्षी भाव	४५३ से ४५६
४२.	अज्ञान, सतकर्म, और सत। मन की गति, आत्म ज्ञान साधु, मूंढ़ भाव, शंकालु, सांसारिक वासना की कल्पना की राति कपट पूर्ण व्यवहार प्रभु की लालसा निष्कामता वैराग्य	४५७ से ४७४
४३.	मन, विषय, कलि प्रभाव मन की जड़ता	४७५ से ४७८
४४.	ब्रह्म बोध, आत्मबोध, स्व का ज्ञान निषेध अस्मिता वोध आत्म तत्व ज्ञानभक्ति कर्तापन त्याग कर्मभोग	४७६ से ४६६
४५.	सत संग कुसंग सन्मार्ग	४६७ से ५००
४६.	युग और साधन युग प्रभाव भजन सुमिरन महिमा और महात्म्य आचरण आत्मशोध	५०१ से ५१८
४७.	ज्ञान प्रेरणा	५१६ से ५२०
४८.	आत्मज्ञान देह देही द्वैत अद्वैत साकार निराकार मैं और ब्रह्म पंच भूत अन्तः करण ज्ञानेन्द्रिया और आत्मा, मन और दश इन्द्रिया जीव आत्मा मन और साधन	५२१ से ५४०
४६.	तन मन और अज्ञानता	५४१ से ५४२
५०.	मन की परख, मोह और विकार, वुद्धि विवेक मन से माया त्याग आत्मनन्द की राह मन की साधना ज्ञानमय कर्म ध्यान सुमिरन चिन्तन मनन आत्मा ज्ञान	५४३ से ५६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५१. विरागी, त्यागी, परमहंस, प्रज्ञा स्थिति सम वुद्धि, आत्म तत्व ज्ञान शून्य जगत मन तथा प्रवृत्ति साधना, चित्त की दशायें मै का स्वरूप मुक्ति त्रिगुण सत्य साधु सेवा सतसंग त्याग योग आध्यात्म ब्रह्म वोध ५६३ से ५८२

५२. ऋषि, विज्ञानी ध्यान योग मार्ग, भक्ति मार्ग प्राणायाम, माया, जीव व ईश का भेद, जीव ब्रह्म का सम्बन्ध ब्रह्म वोध राम नाम महान। ५८३ से ६०४

५३. जीव ब्रह्म एकता योग मार्ग, अरूप साधना मनसा जप ॐ रहस्य प्राणों में जप और ध्यान सविचार, निर्विचार अवस्था परमात्म तत्व व्यापकता ज्ञान मार्ग, लय योग, विधि एवं निषेध मार्ग, साधक ६०५ से ६२६

५४. जीव की गति, प्राणायाम, ध्यान, निरख परख साधु शरणागति ज्ञान योग वैराग और अहंकार विश्वरूप द्वैताद्वैत साक्षी भाव साधना ६२७ से ६४८

५५. विद्वता पांडित्य, माया, जीव ईश ज्ञान प्रेरणा माया की गति और मुक्ति, अन्तः करण, दैवी गुण जागरण, प्राणायाम, वैराग कुण्डलिनि साधना, षट चक्र साधना, अमृत पान, साधना का पतन। ६४६ से ६७०

५६. राम नाम महिमा सुमिरन भजन, सोडहँ साधना, जप ध्यान प्रकाश योग, रूप स्वरूप साधना, सहज योग, अनहद नाद ज्ञानी योगी भक्त निर्भेद। साधक सिद्ध सुजान संत सतसंग। ६७१ से ६९२

५७. ईश्वर निर्भरता, राम नाम महिमा, अधोर पंथ तत्व, सम्प्रदाय, सर्व धर्म सम भाव ईश्वर एक जीवनी कला सत्य आचरण, साधक चेतावनी तत्व प्रेरणा। ६९३ से ७१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

देवि प्रसाद विनय कर जोरी,
देहु मातु भव-बन्धन छोरी। ३१९

सागर गहिरो गहिरी खाई,
कृपा करहु जय शारद माई। ३२०

हरण करहु हर संकट मोरा,
मोरे हित नहिं होहु कठोरा। ३२१

जगत प्रपञ्च जग कर्म प्रपञ्चा,
काल खड़ा जग तानि प्रत्यञ्चा। ३२२

।। दोहा ।।

रचना इस संसार की, माया पति का खेल।
दीप शिखा बुझ जायेगी, बिन बाती अरु तेल।। ३२३

जग में योद्धा बहुत कम, जो जीते जग जाल।
समर भूमि नहिं दीखता, जाहिं न खावहि काल।। ३२४

कच्चे फल को देखिये, विटपहि राखे अंग।
इक दिन वह पक जायेगा, आपहि छूटे संग।। ३२५

अण्डा पेड़ विशाल जग, ताकी कोमल शाख।
जो नर चढ़ि के देखिहें, मिलइ न बाकी राख।। ३२६

युवक बाल अरु वृद्ध सब, छोड़हि जीव शरीर।
राम भजन बिन जानिये, सहि न जाय तन पीर।। ३२७

मोह न कीजै जगत से, मोह जगत सब झूठ।
एक दिन सब छुट जायगा, देवी कहत अनूठ।। ३२८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मकड़ी माया जाल का, बिछा दीन्ह संसार।
उलझि पुलझि मर जायेगा, जान बचावनहार।। ३२६

मनुज देह को पाइ के, माया-संग नहिं डोल।
प्राण बिहग उड़ि जायेगा, राम नाम ले बोल।। ३३०

भव सागर की थाह है, निधि आनन्द न थाह।
जाको प्रभु की चाह है, ताही जीव अथाह।। ३३१

जग को झूठा मानिये, केवल सपना जान।
राम भरोसा मानिके, करहु नित्य गुण गान।। ३३२

बिरला कोई जग महूँ, जा की ऐसी चाह।
झूठ जगत को त्यागि के, चलइ सत्य की राह।।३३३

मरना तो सब जानते, जीना भक्तहि राम।
माया वाले यम पुरी, भकत जाय प्रभु धाम।। ३३४

।। चौपाई ।।

माया की गति जग महुं न्यारी,
राम कृपा बिनु लागहिं प्यारी। ३३५

जग की इच्छा बड़ दुखदायी,
राम कृपा बिनु कबहुं न जाई। ३३६

राम कृपा बिनु जीव न जागी,
मिलहि कृपा जे माया त्यागी। ३३७

लख चौरासी नर कहु फेरी,
जे जन राम चरण नहिं हेरी। ३३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

चौरासी की योनि में, दुखमय सकल शरीर।
नर देही को पाइके, छुटबहु भव की पीर।। ३३६

भोजन निद्रा भोग का, सब जीवों को भान।
जो जन हरि नाहीं भजे, नर पशु एक समान।। ३४०

झूठ साँच जग आपदा, जानहु माया जाल।
कर्म शेष फल आंकिये, काहु न छोड़इ काल।। ३४१

राजा योगि फकीर भी, जाये तज संसार।
एक नरक के द्वार है, दूजा भव के पार।। ३४२

हीरा मोती कौड़िया, माल खजाना ढेर।
एकउ काम न आयागा, प्रभु नामहिं कोटेर।। ३४३

बार बार काया नहीं, माया बारम्बार।
नर देही को पाइके, जीवन लेहु संवार।। ३४४

भव सागर नर डूबिहें, बिन नौका पतवार।
राम सहारा लीजिये, सोई खेवन हार।। ३४५

अवसर पाड़ न चूकिये, मिलहिं न पुनि नर देह।
मन महुं सुमिरन कीजिये, राम बसहिं उर गेह।। ३४६

भक्ति भक्त भगवान का, हो जाता लय योग।
संसारी संसार में, मर जांता करि भोग।। ३४७

धन पाना बहु सरल है, तन अति दुर्लभ दूर।
प्रेम भगति से हीन जे, नयन सहित तिन सूर।। ३४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाली आवहि जगत में, जाहु न खाली हाथ।
धर्म-कर्म प्रभु नाम को, राखहि अपने साथ।। ३४६

रे मन मूरख पाप वश, प्रभु के भजन न भाय।
काँचन जैसी देह नर, माटी मोल बिकाय।। ३५०

।। चौपाई ।।

मनुज देह सुन्दर प्रभु देनी,
भगतन हेतू स्वर्ग निशैनी। ३५१

बुद्धि विवेकी सोइ जग प्राणी,
राम नाम सुमिरइ मन वाणी। ३५२

छाड़ि भजन मन भोगहिं लागी,
ते जन जानहिं जीव अभागी। ३५३

नर तन वास अमंगल चारू,
काम क्रोध मद लोभ विचारू। ३५४

।। दोहा ।।

काम न त्यागे मोह को, मोह न त्यागे आस।
बिना त्याग के जानिये, छूटहिं ना भव-पाश।। ३५५

माया सब को मोहती, भक्त न मोहे चार।
जिज्ञासु अर्थार्थी, काम अकामी पार।। ३५६

लख चौरासी भोग कर, पायो मनुज शरीर।
आज सुअवसर पाइके, भजहुं सदा रघुबीर।। ३५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाके मन माया बसी, ता हिय बसहिं न राम।
काम जगत के छाड़ि के, भजहु निरन्तर नाम।। ३५८

भक्ति बिना सब सून है, तन मन सकल शरीर।
प्रभु सुमिरे छुट जायगी, माया मय जंजीर।। ३५६

जिन्दा मुर्दा एक सम, जो न भजे रघुवीर।
सब जीवों में श्रेष्ठतम, पायउ मनुज शरीर।। ३६०

प्रभु दरशन को नयन हैं, कथा श्रवण को कान।
देह मिली सतकर्म को, वाणी प्रभु के गान।। ३६१

मन पायो प्रभु मनन को, चित चिन्तन के हेतु।
तन पायो तप कर्म को, भजहु सदा वृष केतु।। ३६२

इन्द्रिय सुख की कामना, मन के असत विचार।
बुद्धि बिवेकी ज्ञान से, त्यागहिं कांचन नार।। ३६३

काम क्रोध मद लोभ के, हाथ पैर हैं चार।
इनको काटे सो चले, माया के उस पार।। ३६४

माया पति से मांगिये, माया उनके हाथ।
मातु अबिद्या छाड़ि के, बिद्या लेवहु साथ।। ३६५

जाको देते राम जी, वो ही माला माल।
जो चाहो सो मांग लो, भक्ती या जंजाल।। ३६६

।। चौपाई ।।

जग प्रपंच माया बहु रूपा,
वुद्धिमान भव परइ न कूपा। ३६७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया बन्धन बहु भय कारी,
भजन करहु नित अवध बिहारी। ३६८

प्रकृति प्रदत्त मनहु की रीती,
माया राखइ नर बहु प्रीती। ३६९

जग बिष पान करहि अविवेकी,
अमृत पान लक्ष्य महु एकी। ३७०

।। दोहा ।।

प्रकृति पुरुष के खेल का, कोउ नहिं जाना अंत।
व्याधि जरा अरु मृत्यु से, एक बचे ना संत।। ३७१

विष दायिनि विष वर्धिनी, विष मय तेरा शरीर।
माया तेरा नाम है, तूँ क्या जाने पीर।। ३७२

राम रसायन पीजिये, जिसमें रस भर पूर।
माया का रस त्यागि के, पिये कबीरा सूर।। ३७३

धन बैभव या देह का, करहु न पद अभिमान।
पल भर में मिट जायगा, सब कुछ पड़ा उतान।। ३७४

धन की गति को जानिये, नष्ट भोग अरु दान।
अन्त काम नहिं आयेगी, ना समझे नादान।। ३७५

पद के मद को त्यागि के, लेहु परम पद एक।
झूठे जग को भूल के, प्रभु को माथा टेक।। ३७६

सार नहीं संसार में, दरश न पावइ राम।
वृथा जन्म नर देह का, आवइ ना प्रभु काम।। ३७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनेउ काम न आयेगी, मनुज देह की खाल।
देवि भजन कर लीजिये, तजि माया जंजाल।। ३७८

नर शरीर के चर्म से, नीकी पशु की खाल।
ढोल नगाड़ा वाद्य में, देवहि अच्छी ताल।। ३७६

जीवन ऐसा मानिये, जस पानी की बूँद।
सत्य दया पहचानिये, नयनहि को मत मूँद।। ३८०

जीव देह के भोग को, जानहि ज्ञानी भक्त।
संसारी नहिं जानते, माया वसि आसक्त।। ३८१

वह क्षण भी आ जायेगा, होगा काल सवार।
काल काल मत कीजिये, भज लीजे करतार।। ३८२

।। चौपाई ।।

देवि प्रसाद कहहिं सुनु भ्राता,
कोउ न राम बिना जग त्राता। ३८३

जाके मन श्री राम बसेरा,
मोह निशा मन करहि न फेरा। ३८४

राम चरण जाके नहिं प्रीती,
ताको जीवन दुख महुं बीती। ३८५

हाड़ मांस दूषित नर देहा,
निर्मल तन मन राम सनेहा। ३८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

उडगन सकल बटोर ले, हौंहि न रवि आकाश।
माया सुखहिं डुबाय से, होहिं न दिव्य प्रकाश।। ३८७

असुर सम्पदा लोक में, सुर सम्पति पर-लोक।
एक मिले जग शोक है, दूजे होत अशोक।। ३८८

ऋषि वाणी मुनि सम्पदा, बांट रहे बिन मोल।
मन मूरख लेवइ नहीं, राम नाम के बोल।। ३८९

अकड़ जकड़ नहिं कीजिये, पकड़ छोडि मर जाय।
चाकहि बीच न आइये, कीलि संग बचि जाय।। ३९०

ठठरी ठाट सजाय के, छप्पर दीन्हिस डार।
सुघर गुनी को जानिये, कुटिया देहि निकार।।३९१

हाड़ मांस का पींजरा, अन्दर मल की खान।
मन मूरख अभिमान बश, करे न सत् पहिचान।। ३९२

मैं माया के गांव में, माया मेरे ठांव।
बिनु हरि कृपा न जानिये, पार उतारिहों नाव।। ३९३

कण्टक का जग जाल, है चुभे नरहिं के देह।
आन निकारहिं कण्ट को, राखहिं प्रभू सनेह। ३९४

नर्क स्वर्ग संसार में, देखहु बुद्धि विचार।
असत कर्म दुख देत है, सत में सुख का सार।। ३९५

मनुज बुरा नहिं होत है, बुरा कर्म जग माह।
असत कर्म को त्यागते, वो ही शाहं शाह।। ३९६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन मूरख अब मान ले, तन मिलना अति गूढ़।
राम भजन कर लीजिये, रस आनन्द अगूढ़। ३९७

माया के संसार में, 'या' को दीजै छोड़।
'माँ' को हृदय लगाइये, माया से मुख मोड़।। ३९८

।। चौपाई ।।

जाके उर नहिं राम बसेरा,
सोई नर माया कहु चेरा। ३९९

मनुज देह जो व्यर्थ गवाँया,
सांप छछून्दर की गति पावा। ४००

अति दारुण दुख जग महुं देखा,
अनगिन रूप करहिं नहिं लेखा। ४०१

योग वियोगहि दुख-सुख सारा,
भोगहिं फल कर्महि अनुसारा। ४०२

।। दोहा ।।

काया छूटे रोग से, माया छूटे योग।
आवागमन ना छूटिहें, बिन कर्महि के भोग।। ४०३

अटक भटक जी भू धरे, डावर होई जाय।
आपन पीसा कूटना, जैसा हो सो खाय।। ४०४

कोऽउ रंक राजा कोउ, कोऊ जगत फकीर।
ब्रह्मा जाके भाग्य में, जैसा लिखे लकीर।। ४०५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोउ जगत सोवत कोउ, सोवत कोऊ जाग।
कर्महीन का जानिये, साथ न देवहि भाग।। ४०६

सुकृति कर्म नहिं पूर्व के, अबहु सुकृत नहिं कीन्ह।
तासो दुख संसार में, दाता ने फल दीन्ह।। ४०७

दाता सबका एक हैं, दृष्टि सबइ पर एक।
बीजहिं रूप अनेक है, फल के रूप अनेक।। ४०८

सारे जग के कर्म को, देख रहे श्री राम।
वाको वैसा देत हैं, जाको जैसा काम।। ४०६

नर पिशाच नर होत है, नर नारायण होय।
अपने अपने कर्म का, फल पावहिं जग दोय।। ४१०

पुण्य क्षीण हो देव गण, जन्मत हैं भू-लोक।
जब लगि मिलन न ब्रह्म का, तब लगि भव के शोक।। ४११

पंछी शून्यहि देश का, शून्यहि उसका गांव।
कर्म फलहिं को देख ले, समझि परे माठांव।। ४१२

चिनता माया सापिनी, तीनउ एक समान।
जाहि बचावइ रामजी, ताकि रहा बच प्रान।। ४१३

अनिःश्चय चिन्ता तजहु, निश्चय को ठुकराय।
अनिःश्चय निःश्चय मिटै, निश्चय कर्म न पाय।। ४१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

असत विचार असत् मन जागे,
सत् जागहिं प्रभु चरनन लागे। ४१५

सत्य असत्य न कर्महिं जाना,
सोइ मूरख अज्ञान निधाना। ४१६

घृत आहुति जस अगनी बाढ़ी,
काम वासना द्वारे ठाढ़ी। ४१७

भौतिक भोग निरत नर नारी,
तासो जीवन बहुत दुखकारी। ४१८

।। दोहा ।।

तन मन कलुषित आत्मा, असत कर्म अध गाढ़।
रूप न जानइ आपना, भोग योनि नर ठाढ़।। ४१६

को जग करनी को करे, का की को पहिचान।
औरहिं करनी छाड़ि के, निज करनी को जान।। ४२०

मनसा वाचा कर्मणा, असत कर्म की चाल।
यम दूतों को जानिये, ताकी खीचें खाल।। ४२१

बार बार नहिं पाओगे, सुर चाहत नर देह।
अबिरल सुमिरण कीजिये, प्रभु के चरण सनेह।। ४२२

परम सत्य निश्चय अटल, जीव मृत्यु भगवान।
बिनु सतसंग न हरि कृपा, मिटइ न जग अज्ञान।।४२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या के दोइ रूप हैं, माया ईशहि जान।
एक जगत सत राखिके, असत दूसरो मान।। ४२४

जाको आशा राम की, सोई आशा राम।
मातु अविद्या त्याग कर, हो जाते निष्काम।। ४२५

कर्म अकर्महि देखिये, जोड़ देहि फल शेष।
सत्य निकालहिं असत से, साधक सिद्ध विशेष।। ४२६

माया ईशहिं जीव को, जान सके तो जान।
बिन हरि कृपा न जानिया, साधू की पहचान।। ४२७

अनाचार रत जीव जड़, ते असाधु जग जान।
माया के सुख भोग में, ना माने भगवान।। ४२८

माया ऐसी डाकिनी, लूट रही संसार।
प्रभू चरण गहि लीजिये, वाहि लगावें पार।। ४२९

मन बिगड़ाहि कुसंग बसि, तनहि बिगाड़ कुकर्म।
आतम कलुषित जानिये, जो न जानि निजधर्म।। ४३०

।। चौपाई ।।

श्रुति-स्मृति पुराण बहु भांती,
असत कर्म नर नाहिं सुहाती। ४३१

असत कर्म दूषित मन रहऊ,
सोई जीव ज्ञान नहिं भयऊ। ४३२

जस करनी तस नर फल चाखा,
राम कर्ज काहू नहिं राखा। ४३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असत कर्म वश भोगहिं भोगा,
आधि व्याधि चिन्ता बहु रोगा। ४३४

।। दोहा ।।

ऐसी करनी कीजिये, कागा गीध ना खाय।
मनुज देह को पाइ के, नाहक नाहिं गवाँय।। ४३५

शूकर भजे न राम को, कूकर पढ़े न वेद।
सद् बुद्धिहि सतकर्म बिनु, मनुजहि पशु नहिं भेद।। ४३६

एक-एक पल श्वांस की, कीमत है अनमोल।
वृथा न जाने दीजिये, वाणी से हरि बोल।। ४३७

बार बार पछतायेगा, क्षण जायेगा बीत।
आज करे सो पायेगा, काल न मानहिं प्रीत।। ४३८

आज न जानहिं काल को, काल न जानहि आज।
आज काल के फेर में, दुर्गति पाय समाज।। ४३९

भूत काल नहिं सोचिये, भविष्य न जाने कोय।
वर्तमान को मार के, बृथा कालवश होय।। ४४०

समयहिगति नहिं जानते, दुर्गति सद्गति खान।
समयहिगति को समय से, कर लीजे पहचान।। ४४१

बृद्ध की वाणी मानिये, बृद्ध कहहिं आभास।
जो जन वाणी मानते, कबहु न पावहि त्रास।। ४४२

बिष से सुधा बटोरिये, स्वर्ण दूषित स्थान।
विद्या नीचहु से मिले, घटे न एकउ ज्ञान।। ४४३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया बिपिन भुलान नर, ताको सूझ न बूझ।
पंथ पथिक से पूछिये, मन-माना मत जूझ।। ४४४

राजस तामस सत् गुणी, त्याग देहि सब धर्म।
गुरु चरनन में जाइके, जानि ज्ञान का मर्म।। ४४५

गुरु प्रकाश के पुंज हैं, मोह निशा अरि घोर।
कृपा दृष्टि करि दीजिये, देइ किरण की कोर।। ४४६

गुरु समान दाता नहीं, देंहि भक्ति अरु ज्ञान।
माया से मुक्ती मिले, मिट जाये अज्ञान।। ४४७

श्रद्धा और विश्वास वसि, गुरु पद मन लव लीन
ऐसे नर को जानिये, ज्ञान गुरू जन दीन।। ४४८

गुरु से गुरुता होता है, चेला को गुरु कीन्ह।
अपने आपहि आप को, चेला को गुरु दीन्ह।। ४४६

शिव बिरन्चि हरि देव सब, महिमा गुरू बखान।
वेद शास्त्र गाते सभी, गुरुवर के गुण गान।। ४५०

गुरुहि वचन सद्मन्त्र हैं, जानहिं चतुर सुजान।
जो नहिं मानइ मंत्र को, मूरख जन अज्ञान।। ४५१

आपन झूठी वस्तु जग, झूठे सकल बिचार।
काम क्रोध मद लोभ वश, जीव न जानहि सार।। ४५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मज्ञान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

अति पामर रघुपति विपरीता,
जीव जन्तु अस लोकहिं जीता। ४५३

षट विकार, मन करहि अनीती,
तासो राम चरण नहिं प्रीती। ४५४

नर तन पाइ असत् मन राखी,
निज आतम सब कर्महि साखी। ४५५

प्रभु संग प्रीति बढ़ई सत संगा,
त्यागहिं जेईनर संग कुसंगा। ४५६

।। दोहा ।।

कागा बगुला हंस जग, निज गुण परम प्रवीन।
स्व स्वरूप निज भूलि के, माया वश आधीन।। ४५७

संगति सत् की कीजिये, ब्रह्म तुम्हारे साथ।
फल दाता भगवान हैं, कर्म तुम्हारे हाथ।। ४५८

बिकृति बुद्धि सत्कर्म नहिं, वा विन ना सतसंगा।
बिना सत्य भगती नहीं, वा ले तजहि कुसंग।। ४५९

संगत कबहूँ न कीजिये, चपल चुगल चालाक।
समय पाय नहिं चूकता, जस पक्षिन में काक।। ४६०

तन रंगना सरल है, मन को रंगना टेढ़।
बार बार जग फूटहीं, ज्यों बाँधन की मेड़।। ४६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधु तजे नहिं साधुता, बिष नहिं तजत भुजंग।
माया जन संसार को, कबहुँ न छाड़इ संग।। ४६२

खर बुद्धि नाहिं ऊबरे, श्वान सधे नहिं ज्ञान।
पंछी उड़े नहिं भक्ति मग, पशु जड़ जीव समान।।४६३

बाह्य कर्म सब ज्ञान मय, भीतर कलुषित हौय।
वैसे नर को जानिये, ज्ञान तत्व को खोय।। ४६४

कंचन त्यागहु कामिनी, अनासक्त व्यवहार।
साधक सिद्धी साधना, यही शास्त्र का सार।। ४६५

धर्म-कर्म नहिं त्यागिये, जब लगि दरश न राम।
छाड़ि जगत के कर्म को, भजिये प्रभु का नाम।। ४६६

चले फिरे कछु और है, बैठि रहे कछु और।
कर्म किये कछु और है, बिना कर्म नहिं ठौर।। ४६७

हानि लाभ को त्यागिये, कर्म करहु निष्काम।
निरत निरन्तर लीजिये, पावन प्रभु का नाम।। ४६८

तजहिं मान अभिमान को, तजि माया से राग।
प्रीत निरन्तर राम से, लेवहु जग वैराग।। ४६६

साधक साध न साधना, जो न साध मन ज्ञान।
एकइ तन मा साधना, बाकी सब अज्ञान।। ४७०

बुद्धिहि से मन देखिये, अहंकार चित चार।
अन्तः पुर में राखि के, कीजे ब्रह्म विचार।। ४७१

लखा न अपने आप को, भूल गया भगवान।
अहं चित्त मन बुद्धि से, लखते चतुर सुजान।। ४७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने मन का पारखी, धोखा कबहु न खाँय।
बुद्धि कसौटी पाय के, घिस घिस निर्णय पाय।। ४७३

सोना तब कुन्दन बने, गलि गलि पीटा जाय।
बनत कसौटी जा चढ़े, ताकी परख सुहाय।। ४७४

।। चौपाई ।।

मन मधु कर गुन्जत चहुं ओरा,
सबसे बड़का मन महुं चोरा। ४७५

चारि चोर चतुरानन जारी,
काम क्रोध मद लोभ समानी। ४७६

असत कर्म मन पाप प्रवीना,
सत छाड़हिं कलि काल अधीना। ४७७

चेतन के मन जड़ता छाई,
जड़ता जाइ न बिनु रघुराई। ४७८

।। दोहा ।।

अलख ब्रह्म जग लखि परे, लख को लखे न कोय।
जो लख को लख लेत है, लखहि अलख में खोय।। ४७६

ज्ञानी सूरज चन्द्रमा, परहित करहिं प्रकाश।
सम दृष्टी से देखते, वायु अग्नि आकाश।। ४८०

सूत्र विवेकानन्द का, सब लेते आनन्द।
देवी पुष्प पराग से, सुख पाते मकरनन्द।। ४८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व स्वरूप परमात्मा, हम जीवहि प्रभु अंश।
सत के पर उड़ जाइये, परे हुआ पर हंस।। ४८२

आत्म ज्ञान नहिं होत है, बिना किये सत संग।
रोम रोम रंग दीजिये, राम नाम के रंग।। ४८३

जीव आत्मा एक है, माया का है भेद।
जो नहि जानहिं भेद को, ताही को है खेद।। ४८४

एक तत्व से जीव है, पंच तत्व से देह।
परम तत्व को जानिये, निज रूपहि निज गेह।। ४८५

अहं जीव का बोध तन, ब्रह्म-अस्मि सत ज्ञान।
ना समझे नर जीव जड़, माया वश अज्ञान।। ४८६

दृढ़ निश्चय वैराग दृढ़, मनसा दृढ़ अनुराग।
प्रभु चरनत दृढ़ प्रेम जेहिं, दृढ़ माया नहि लाग।।४८७

रहे काम ना जीव को, सो नर बुद्धि निधान।
आत्म तत्व सबमें लखे, जानि ब्रह्म का ज्ञान।। ४८८

नर समर्थ नहिं साधना, परवश जीव न ज्ञान।
स्व बस ब्रह्म जगदीश तुम, दूर करहु अज्ञान।। ४८९

को़ऽउ करइ तन साधना, कोउ साधय मन चोर।
कोउ अन्तर सुख लेत हैं, कोउ मचावे शोर।। ४९०

चादर ऐसे रंग में, रंगते चतुर सुजान।
भक्त अनूठे हो गये, कबिरा अरु रसखान।। ४९१

रामहिं सबको लखत हैं, रामहिं लखे न कोय।
जो जन रामहिं को लखे, स्वयम् राम मय होय।।४९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोह गये ममता गयी, काम गये मन शान्त।
क्रोध लोभ के जात ही, मिट जाये सब भ्रान्त।। ४६३

कर्ता पन के भाव से, कर्ता हो अज्ञान।
निज कर्ता पन त्याग दे, सब करते भगवान।। ४६४

कमलहि सोहे कीच में, साधू माया बीच।
अनासक्त हो जाइये, कीच लगे ना बीच।। ४६५

गुप्त मन्त्रणा गुप्त मत, गुप्त मन्त्र जय गुप्त।
साधक सिद्ध सुजान सत्, कलिमल दोषहिं लुप्त।।४६६

।। चौपाई ।।

षट बिकार कलि काल कुसंगा,
तजि भज राम करहु सत-संगा। ४६७

षट विकार संग करिय लराई,
सोड़इ मनुज सत-मारग पाई। ४६८

हि़त अनहित जानहिं सब लोगा,
अनहित कर्म करहिं दुख भोगा। ४६६

किलनी जौंकहि हते नर जानी,
पर दुख देत आप सुख मानी। ५००

।। दोहा ।।

सत युग में सत जानिये, त्रेता ज्ञान प्रधान।
योग कृष्ण द्वापर रहा, प्रभु सुमिरन कलि जान।। ५०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिना में होत है, पहर जानिये चार।
एक पहर आधो पहर, रामहि नाम उचार।। ५०२

घर से पग बाहर रखे, लेहु प्रभु का नाम।
बिना सुदिन बिन सारब के, हो जाबहि सब का।।५०३

वा घर देवि न जाइये, देखि न मन हरषाय।
नभ ओला को छाड़िके, हीरा जल बरसाय।। ५०४

स्वामी सब में होत है, सब स्वामी में नाह।
स्वामी से स्वामी मिले, याने सच्ची राह।। ५०५

क्रोधी कामी लालची, कपटी कायर क्रूर।
संगति कबहु न कीजिये, तन मन राखहि दूर।। ५०६

संगत कीजे चार की, शुद्ध बुद्ध मन धीर।
सुखी मीन को जानिये, पाइ अगाधहि नीर।। ५०७

साँचे फाँके परत हैं, झूठे मालहिं खांय।
असत कर्म मन बुद्धि में, कल युग राज समाय।। ५०८

दूध दधी माखन बिके, गली गली हर गाँव।
कलयुग मदिरा आइके, बैठि बिकाये ठाँव।। ५०६

सतयुग त्रेता और थे, द्वापर कलियुग और।
राम भजन बिनु जानिये, कलियुग नर नहिं ठौर।। ५१०

पूजा जप तप और युग, कलयुग नाम उचार।
मन मूरख अज्ञान वश, करतइ नाहिं विचार।। ५११

त्रिगुणी माया जगत में, सबहि नचावइ नाच।
त्रिगुण सत्य अपनाइये, नहि आवेगी आँच।। ५१२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाणी से सत बोलिये, मनसा सत्य विचार।
काया से सत कीजिये, सगुण ब्रह्म सत् सार।। ५१३

चिन्ता भय को त्यागिये, जीव मृत्यु ब्रह्म सत्य।
चारो युग में चार है, बाकी जगत असत्य।। ५१४

असत कमाइ जो करे, कबहु न पावइ चैन।
तन मन को दुख देत है, विकल रहत दिन रैन।। ५१५

अपनी करनी देखिये, दूसर करनी नाह।
करनी से भरनी मिले, होय फकीरा शाह।। ५१६

झूठ जगत अपराध बढ़, सब पापन का बाप।
बाप बिना बेटा नहीं, ज़ानहिं आपइ आप।। ५१७

बाट जोहता घाट में, चढ़ि जावहिं निज नाव।
पार होंहि पतवार बिन, लौटन आवहिं गांव।। ५१८

।। चौपाई ।।

देवी कहत सुनहु जन मोरी,
ज्ञान बिना होवइ मति भोरी। ५१९

भ्रम वश मोह अहम् मन जागी,
माया वश नहिं होहि विरागी। ५२०

।। दोहा ।।

एक साधना जगत का, जान सके तो जान।
माया वश क्या डोलता, अपने को पहचान।। ५२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अज्ञानी कोउ ज्ञान मय, कोऊ जग महु मूढ़।
नर देही को पाय के, खोजहि नाहिं अगूढ़।। ५२२

आप न देखन जात हैं, जग को देखन जाय।
भूमि गड़ी जो सम्पदा, बिन खोजे कसि पाय।। ५२३

पक्षि बैठ उड़ जात है, आवत है किस गांव।
पिजरा सूना देख ले, समझ परे ना ठाँव।। ५२४

मैं ही सांचा देह में, देही को पहिचान।
झूठे मैं को त्यागि के, सांचे मैं को जान।। ५२५

या घट भीतर बाहरो, द्वैताद्वैत विचार।
निराकार मन जानिये, बाह्य रूप साकार।। ५२६

मैं माया मैं मोह बस, मैं माया के पास।
मैं को मैं जाना नहीं, तासो जीव उदास।। ५२७

झूठे जग की कामना, झूठा जग व्यवहार।
झूठ सकल जग जानिये, ब्रह्म सत्य जग सार।। ५२८

अहं देह मन बुद्धि चित, पंच तत्व में पांच।
एक तत्व को जानिये, सोई जग महु सांच।। ५२६

नर देहहिं दश पंच है, एकइ है सरपञ्च।
तासो अरज लगाइये, छोड़ जगत परपञ्च।। ५३०

एकइ से दस साधिये, त्रिगुण मयी को तीन।
ब्रह्म सत्य को जानते, साधक सिद्ध प्रवीन।। ५३१

जड़ता जड़ से त्यागिये, चेतन को पहचान।
चेतन की प्रभु चेतना, करहु, आत्म का ज्ञान।। ५३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीव आत्मा एक है, जस चावल अरु धान।
माया के वश जीव है, मुक्त आत्मा जान।। ५३३

अजर अमर नित आत्मा, जानहिं तिलिगुणातीत।
पंचतत्व की देह में, चेतन की परतीत।। ५३४

भोग शोक भय कामना, भ्रम वश नर अज्ञान।
अजर अमर निज आत्मा, जान लेहि सो ज्ञान।। ५३५

मन बुद्धी अरु चित्त को, राखहु मध्य सचेत।
जो नहिं चेता जगत में, सोई पड़ा अचेत।। ५३६

एकइ से दस चलत है, दस से चलइ न एक।
एक चलावड़ एक जो, सोई परम विवेक।। ५३७

दस पंचो के बीच में, एकइ मुखिया जान।
मुखिया को मुखिया लखे, सोई परम सुजान।। ५३८

मनहिं जगत मन खेलता, मन झूठा मन साँच
मन को मनहिं सुधारत्ता, मनहिं नचावइ नाच।। ५३९

मूढ़ प्रवृति से निवृति महु, चहुं दिशि मनहि बिहार।
निज स्वरूप चित साधना, साधक लेहु सम्हार।। ५४०

।। चौपाई ।।

कलुषित तन मन कलुषित वाणी,
सुख सम्पति नहिं पावहि प्राणी। ५४१

तुम तुम्हार तुम ही चहुँ ओरा,
हम हमार प्रभु बन्धन छोरा। ५४२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

काया दस रथ-अश्व है, सारथि है मन जान।
जा पर जीव सवार है, बुद्धि लगाम समान।। ५४३

मन की क्रिया कलाप को, जानइ बुद्धि विवेक।
जो नर नाहीं जानते, वो ही जग अविवेक।। ५४४

कामी क्रोधी लोभ बस, ताके मोह विकार।
सुख शान्ति पावे नहीं, जाके हिय में चार।। ५४५

मन की झूठी कल्पना अरु झूठा व्यवहार।
बुद्धि सहारा लीजिये, मन को लेहु सम्हार।। ५४६

भूला भटका जग फिरै, मृग तृष्णा की चाह
सो नर कबहु न जानता, आत्म नन्द की राह।। ५४७

कारण बन्धन मोक्ष का, केवल मन को जान।
एकइ साधे जगत में, सोई चतुर सुजान।। ५४८

इक जागे इक त्याग से, चारहु से जग चार।
अर्थ धर्म अरु काम से, मोक्ष प्रभू का द्वार।। ५४६

स्थिर मन को कीजिये, वह घूमे चहुँ ओर।
साधक सिद्धी जानिये, जो बाँधे मन चोर।। ५५०

आप बिरोधहि कीजिये, आप करहि अनुरोध।
आप जनावहिं आपको, आपहि मनहिं निरोध।। ५५१

इन्द्रिय विषयन आहुति, ज्ञानाग्नि में देय।
कोटि यज्ञ फल होत है, मन से जो करि लेय।। ५५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँच बनावइ एक को, एकहि दस आधीन।
दस त्यागहिं लखि एक को, पंडित परम प्रवीन।। ५५३

अहंकार मद मोह का, जब लौंघट में वास।
तब लगि जीव न जानिये, भव मुक्ती की आस।। ५५४

साधक साधक सब कहे, साधन करे न कोय।
जो जन मन को साधते, इन्द्रिय साधक सोय।। ५५५

सकल कामना हीन जो, प्रभु जिनके आधार।
बिनु प्रयास नर जानिये, हो जाये भव पार।। ५५६

चित को चित्त न कीजिये, चित राख हि चैतन्य।
चित के असत् विचार को, दूर करहिं सोधन्य।। ५५७

दृष्टा वन के देखिये, कर्तापन को छोड़।
सारे माया जाल से, अपने मन को मोड़।। ५५८

कोउ काग बगुला कोउ, कोउ-जग हंस समान।
परमहंस उड़ि जात हैं, जाके हिय में ज्ञान।। ५५६

चिन्तन चित से कीजिये, मनन करहिं मन मान।
अहम से बोधहिं आत्मा, बुद्धिहि न्यायी जान।। ५६०

बिपिन कन्दरा खोह में, तन राखे नहिं होय।
बसइ चतुष्ठय ऊपरा, सद्-चित-आनन्द सोय।। ५६१

बाह्य ज्ञान कछु और है, अन्तर ज्ञानहिं और।
आत्म ज्ञान बिन जानिये, प्रभु समीप नहिं ठौर।। ५६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

गुन अवगुन मन राग विरागी,
मन से योग मनहि सब त्यागी। ५६३

तम रज सत गुण पारहि जाना,
परमहंस तेइ परम सुजाना। ५६४

।। दोहा ।।

प्रज्ञा स्थिति प्रभु कृपा, कृपा सुअँजन आँजि।
निर्णय बुद्धिहि लीजिये, तन मन लेवहु माँजि।। ५६५

हानि लाभ सम देखिये, यश कीरति अपमान।
सुख दुख बुद्धि विवेक सम, आत्म तत्व का ज्ञान।। ५६६

दस मानहि जग एक की, एकइ जगत विशेष।
दस नहिं मानहिं एक की, शून्यहिं जगत प्रवेश।। ५६७

प्रथम साधिये एक को, पुनि साधय जग चार।
साधक सिद्ध सुजान मन, कीजै सदा विचार।। ५६८

इक सोता इक जागता, स्वप्नहि देखइ एक।
एक काम इक राम का, एकइ कर्म अनेक।। ५६९

मैं माया मैं जीव हूँ, अहंकार मय ज्ञान।
निज मैं को पहचानिये, मैं ही ब्रह्म समान। ५७०

आपहि आपहि को लखे, और लखे ना कोय।
आपहि को लख लीजिये, आपा आपहि खोय।। ५७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्ति मुक्ति सब कोइ कहे, मुक्ति न जाने कोय।
जो जन जाने मुक्ति को, माया वश ना होय।। ५७२

त्रिगुण सत्य अपनाइये, सब दुर्गुण को त्याग।
तबहि जीव को मानिये, इस माया से जाग।। ५७३

योग भक्ति अरु ज्ञान की, भूमि त्रिवेणी गंग।
बुद्धि बिबेकी लोग मन, निर्मल जीवहिं अंग।। ५७४

आज्ञा पालन साधु की, सेवा अरु सत संग।
ध्यान नाम जप कीजिये, पंच तत्व के संग।। ५७५

भोग न कीजे त्याग बिनु, त्याग बिना नहिं योग।
योग भोग महु राखिये, ब्रह्म मिलन संयोग।। ५७६

बैभव सम्पति बांटिये, भोग न बांटो जाय।
योगी अपने योग में, सुख दुख दोनो पाय।। ५७७

स्थिति क्या आध्यात्म की, मन से पूछहु जाय।
औरहु से नहिं पूछिये, आतम देय बताय।। ५७८

मैं से मैं को जानिये, मैं से मैं पहिचान।
मैं से मैं हटि जायगा, सोई ब्रह्म समान।। ५७९

अन्तःपुर में जाइके, चोरउ को लखि लेय।
सोई नर को जानिये, ज्ञानी ज्ञाता ज्ञेय।। ५८०

कर संकल्प विकल्प नहिं, अपने मन को रोक।
प्राण नाम चित रूप हो, लुप्त होहि जग शोक।।५८१

जैसे धन कंजूश का, कबहु न आवे काम।
वैसेहि बुद्धि विवेक भी, जो न भजे हरिनाम।। ५८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

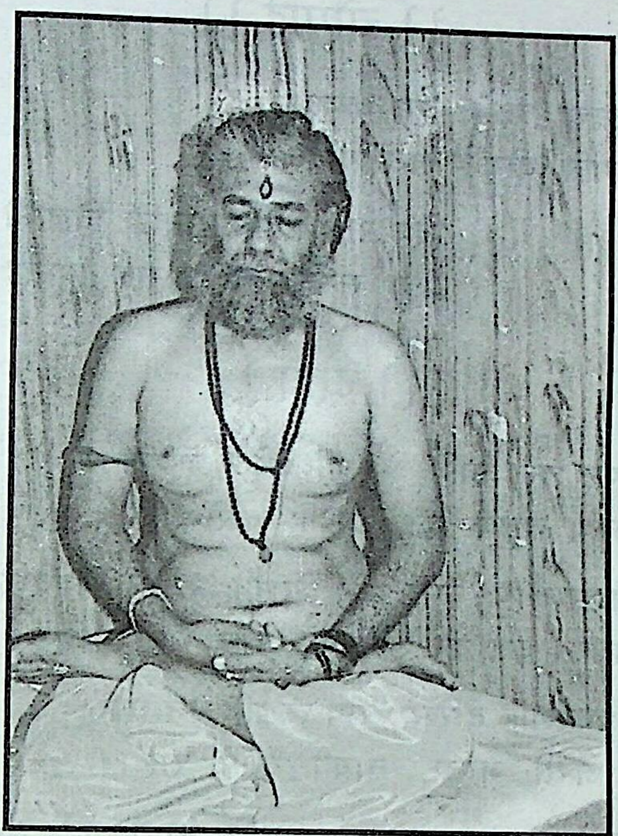

योग भक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

रचिय ऋचा ऋषि नाम कहावा,
ज्ञान भगति योगहिं पथ गावा। ५८३

बिष सम विषय समुझि विज्ञानी,
ब्रह्म समान देखि सब प्रानी। ५८४

।। दोहा ।।

झूठ कपट छल छाड़ि के, पुनि लीजे प्रभु नाम।
अन्तःकरण चतुष्ठ को, देखहिं चारो धाम।। ५८५

श्रद्धा-दीप जगाइये, बाती रखि विश्वास।
मनसा घृत को डालिके, लेवहु परम प्रकाश।। ५८६

अलख प्रकाशहि देखिये, रूप लखहि मन चाह।
जाकी जैसी भाना, ताकी वैसी राह।। ५८७

राही इस संसार में, भांति भांति की राह।
जाको मन जामे रमे, बाकी वैसी चाह।। ५८८

चित को चित्त न कीजिये चित राखहि चित चोर।
चतुराई सब छाड़ि के, मन राखहि प्रभु ओर।। ५८६

ज्ञानी देखत ज्ञान से, आतम दिव्य प्रकाश।
प्रेम बिरह नहिं जानते, उड़ि जाये आकाश।। ५६०

ज्ञान तत्व ज्ञानी लखे, भक्त लखे भगवन्त।
रूप अरूपहि जानिये, महिमा कोटि अनन्त।। ५६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलख रूप नहिं लख परे, लख का लखिये रूप।
निज रूपहि लख लीजिये, जानहि रूप अरूप।। ५६२

बहिर्मुखी बहु जग भयो, अन्तर्मुखी न कोय।
अन्तर्मुख अन्तर घट्यो, बाह्य जगत को खोय।।५६३

ध्यान धारणा जाप में, कल्प विकल्प न होय।
अन्त:पुर में जाय के, मन को देवइ खोय।। ५६४

रेचक पूरक कीजिये, अरु कुम्भक से ध्यान।
योग समाधिहि लायके, कीजै प्राण समान।। ५६५

निज दर्पण को धोइ के, निज देखहिं निज रूप।
निज देखहि निज जानिया, सोई ब्रह्म स्वरूप।। ५६६

सत्य तुम्हारी आत्मा, वही तुम्हारा रूप।
जो नर नहिं पहिचानते, सोइ परे भवकूप।। ५६७

मैं मैं करते युग गया, मैं तूँ का नहिं मेल।
मैं को अपने छाड़ि के, तूँ का देखहिं खेल।। ५६८

तन की स्थिति छाड़ि के, मन की स्थिति जान।
जो नहिं जानइ आपको, सोइ नर अज्ञान।। ५६६

इक माया इक जीव है, एकइ ब्रह्म समान।
त्रिगुण भेद के जात ही, समुझि परे भगवान।। ६००

अहंकार भव-कामना, ता ऊपर निज क्रोध।
तासो जीव न होत है ब्रह्म ज्ञान का बोध।। ६०१

अग्नि दाहिका शक्ति जस, अरु पराग में फूल।
जीव ब्रह्म को जानिये, जो वाके अनुकूल।। ६०२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित वृत्ति को रोकिये, सूर्य चन्द्र को शोध।
मध्य सुषुम्ना ध्यान से, करहिं ब्रह्म का बोध।। ६०३

माया प्रबल प्रचण्ड है, भाग सके तो भाग।
राम नाम की गारुणी, सर पे नाचे नाग।। ६०४

।। चौपाई ।।

योगी योग जतन करि पावा,
जीव ब्रह्म निर्भेद कहाबा। ६०५

दिव्य ज्ञान बिनु कृपा न होई,
सत्य वचन नर पावइ सोई। ६०६

।। दोहा ।।

मन विकार को साधिये, लोभ मोह मद क्रोध।
चित में रूप अरूप हो, होंहि ब्रह्म का बोध।। ६०७

रसरी रामहि नाम की, मन की बांधइ डोल।
ब्रह्म कूप जल लाइके, पीजै रस अनमोल।। ६०८

अँजन आंजिय ओ३म का, अलख निरंजन जान।
जड़ चेतन मँह देखिये, सब जग ब्रह्म समान।। ६०६

मन की आँखे खोल कर, देखहु चारउ वेद।
ओ३म् ओउम् रटि ओ३म तुम, ॐ ब्रह्म निर्भेद।। ६१०

जग का क्षर तो होत है, अक्षर का क्षर नाहिं।
ओ३म ब्रह्म एकाक्षरी, जाप करे क्षर जाहि।। ६११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखासीन हो बैठिये, वायु प्राण को रोक।
मनहि जाप हिय ध्यान हो, व्यापहि मोह न शोक।। ६१२

तन शून्यहि मन शून्य हो, शून्यहि एक विचार।
योग समाधी लीजिये, ब्रह्म मिलन आधार।। ६१३

तम रज सत के फेर में, कागा बगुला हंस।
इन से आगे जो उड़े, जानहु ने पर हंस।। ६१४

परम शान्ति की साधना, निज अनुभूति न बोल।
उचित पात्र को देखि के, सुन्मुख मुख को खोल।।६१५

ब्रह्म ज्ञान कलिकाल महि, पूछे बात न कोय।
जो जन पूछे बात यह, वाही छूछा होय।। ६१६

ब्रह्म ज्ञान की बात को, करते चतुर सुजान।
कलि प्रभाव को देखि के, जाहिं शरण भगवान। ६१७

परम ब्रह्म परमात्मा, सब जीवों के देह।
ज्ञाना भक्तिहिं देखिये, आप मिलइ उर गेह।। ६१८

ज्ञान द्वारिका जाइये, होवहिं वेश कुवेश।
ज्ञान परम ले लीजिये, देश मिलहिं परदेश।। ६१६

ब्रह्म-ज्ञानी संसार में, होंय कमल जस कीच।
तन राखे संसार में, मन ईश्वर के बीच।। ६२०

परम पुरुष जग एक है, और पुरुष जग नाहिं।
नारी सबको जानिये, शक्तिहिं रूप समाहिं।। ६२१

तीरथ व्रत सब व्यर्थ है, अथवा गंगास्नान।
मनसा वाचा कर्मणा, जो न होय प्रभु ध्यान।। ६२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रवण मनन शुचि चार से, प्रेम ध्यान लय योग।
सहस कमल महु देखिये, रहहि न जीव वियोग।। ६२३

एक जोड़िये एक से, योग फलहिं में द्वैत।
एक घटावहि एक से, शून्य ब्रह्म अद्वैत।। ६२४

धारण प्राणायाम से, ध्यान समाधी लाग।
तबहि जीव को जानिये, चर्तुयोग से जाग।। ६२५

ध्याता ऐसा चाहिये, जाको पक्का ध्येय।
ध्यान अवस्था ना रहे, ज्ञानी ज्ञाता ज्ञेय।। ६२६

।। चौपाई ।।

आवागमन देह नहिं मानी,
जीवहिं आय जीव जग जानी। ६२७

नर देही पशु पक्षि समाना,
माया जीव ब्रह्म नहिं जाना। ६२८

।। दोहा ।।

रेचक पूरक कीजिये, पुनि कुम्भक को साध।
भौंह मध्य लख ओ३म को, सहज योग निर्वाध।। ६२६

एक अचम्भा देखवा, मछली बगुला खाय।
जल निधि पानी सूख के, बगुला पेट समाय।। ६३०

शून्य जगत को देखिये, हो जाओ खुद शून्य।
शून्य शून्य से जा मिले, बच जायेगा शून्य।। ६३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हीरा परखे जौहरी, साधक सिद्धहिं आप।
आप न परवहिं आप को, मिटहिं न जग संताप।। ६३२

पुरुषारथ में है अहम्, निःस्वारथ में नाहिं।
द्वैतहि गुण के त्याग से, अद्वैतहि मिलि जाहिं।। ६३३

साधू के मन साधुता, तन से साधुइ कर्म।
ईश्वर मय जग लखि रहे, जानइ साधुहिं धर्म।। ६३४

हानि लाभ यश कीर्ति में, साधू जन सम होय।
प्रभुता प्रभु से पाइ के, कबहु न जग में खोय।। ६३५

अर्पण एकइ जानिये, जग नहिं राखहु शेष।
सब अर्पण कर दीजिये इच्छा नहिं लवलेश।। ६३६

शरणागति में मैं नहीं, मैं शरणागत नाहिं।
मैं को अपने त्यागि के, प्रभु शरणागति जाहिं।। ६३७

शुभ कर्मों को कीजिये, आसक्तिहि को त्याग।
वासुदेव मय जगत को, देखहि सो बैराग।। ६३८

जग रागी बहु दीखते, अन्तर मन बैराग।
बाह्य जगत के त्याग में, होंहि न प्रभु अनुराग।। ६३९

मातु-पिता नहिं त्यागिये, नहिं त्यागहु घर द्वार।
जगासक्ति ही त्यागिये, प्रभु को नाहिं बिसार।। ६४०

पाँच बिना नहिं एक है, एक बिना नहिं पाँच।
पाँच मिलावहि पाँच में, एक शून्य लख साँच।। ६४१

ज्ञान योग वैराग में, भूलहि ना श्री मन्त।
अहंकार में हो गया, बड़े बड़ों का अन्त।। ६४२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानी भूले ज्ञान में, योगी हो गये मौन।
भक्त मिले भगवान से, बात बताये कौन।। ६४३

एकइ मन तन एक है, एकइ बुद्धि विवेक।
विश्व भहरण जग एक है, नामहि रूप अनेक।। ६४४

एकइ बाँधे एक को, एकइ का जग खेल।
एक लखे जब एक को, द्वैता-द्वैतहि मेल।। ६४५

पाँच तीन के फेर में, तीन एक आधीन।
एक लखहिं दस लोग जो, हंससि परम ब्रह्मलीन।। ६४६

हम देही की भावना, अहम् ब्रह्म का रूप।
अहमाहम को जानिये, सोई आत्म स्वरूप।। ६४७

आते जाते देखिये, सब जीवों का खेल
बिना ज्ञान होता नहीं, जीव ब्रह्म का मेल।। ६४८

।। चौपाई ।।

शास्त्र विपिन तिमि केहरि बागे,
जिमि पीजड़ महुं पंछी लागे। ६४६

मोरे मन प्रभु बड़ विश्वासा,
दरश बिना नहिं छूटइ श्वांसा। ६५०

।। दोहा ।।

नहिं जानहि जड़ जीव जन, माया जीवहिं ईश।
सोई नर दोइ पाट में, पुनि पुनि जावहिं पीस।।६५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल समय को जानिये, काल न आवइ आज।
इक दिन ऐसा आयेगा, मिट जायेगा साज।। ६५२

माया की गति मोह से, फँसे जीव दिन रैन।
त्याग बिना मुक्ती नहीं, कबहु न पावहिं चैन।। ६५३

धन दौलत की लालसा, काम जगत भरपूर।
सोई नर को जानिये, परम शान्ति से दूर।। ६५४

अहंकार नर क्रोध-वश, करत असत व्यवहार।
मन-बुद्धि चित-अहम् की, विकृतवस्था चार।। ६५५

काम क्रोध मद लोभ से, युद्ध करो दिन रैन।
मनुज रूप को जानिये, तभी मिलेगी चैन।। ६५६

मृत्यु ईश सत जानिये, थिर स्थिर लय योग।
प्रकृति पुरुष के खेल में, झूठे जग के भोग।। ६५७

अहंकार मद मोह बश, दैवी शक्ति न जाग।
असत् कर्म तन मन भये, होंहि न जग वैराग।। ६५८

काया को बहु मन्त्र हैं, माया को नहिं मन्त्र।
षट कोणहिं में देखिये, समुझि ज्ञान का तन्त्र।। ६५९

चल को कुछ अचला करे, वायू प्राण वियोग।
ब्रह्म जीव को जानिये, ओउम् हि करि संयोग।। ६६०

इक जागहिं इक त्याग से, छः जागहिं छः त्याग।
छः मैं दीजै भाग छय, शून्य ब्रह्म वैराग।। ६६१

नौ नब्बे के फेर में, भूल कदापि न मूढ़।
शून्य ब्रह्म सत् एक है, जामें ज्ञान अगूढ़।। ६६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोवत से जागे जगत, कुण्डलि ताकी जाग।
मृग कस्तूरी ढूढ़ता, जग में भागम भाग।। ६६३

ज्ञान मिले निज ज्ञान से, भक्ति मिले प्रभु प्रेम।
योग समाधी लीजिये, जानि चक्र के नेम।। ६६४

मूलाधार के मूल में, गण पति जी महाराज।
स्वाधिष्ठान में देखिये, अजहू कमल विराज।। ६६५

मणिपुर बैठी शारदा, अन-हत काली माय।
बिशुद्ध शुद्ध में लक्ष्मी, आज्ञा विष्णु समाय।। ६६६

सह सहस्त्र में ब्रह्म शिव, सहस कमल में देख।
षट-विकार को त्यागिये, छः चक्रों को पेख।। ६६७

पंच तत्व की देह में, अमृत कलश प्रमान।
जो नहिं करता पान रस, पंडित मूर्ख समान।। ६६८

साधक करते साधना, चाहत बनना सिद्ध।
भौतिक इच्छा पूर्ति में, हो जाते हैं गिद्ध।। ६६६

कथा राम की होत है सुन लो चतुर सुजान।
राम कथा हिय धारिये जीवहिं मुक्ति विहान।। ६७०

।। चौपाई ।।

अगम अथाह अनन्त अपारा,
राम नाम नहिं पावहिं पारा। ६७१

राम नाम सुमिरहुं दिन राती,
तीन ताप नहिं जारइ छाती। ६७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रिय जीत साधना येकू,
तन यह साधन बुद्धि - बिबेकू। ६७३

कुटिल हृदय नर भक्ति न पावा,
बाह्य ज्ञान बसि गाल बजावा। ६७४

।। दोहा ।।

भोजन ऐसा कीजिये, आत्म सुधा मिट जाय।
मानुष तन बिन भजन के, आत्म तृप्ति नहिं पाय।। ६७५

सो रूपहिं परमात्मा, हम् जिवहि का रूप।
सोऽहम् में हम त्यागिये, जीवहिं ब्रह्म स्वरूप।। ६७६

अग्नि पुंज परमात्मा, जीवहिं चिनगी जान।
जारइ बढ़ि संसार को, सोऽहँ ब्रह्म समान।। ६७७

सिंधु समाये बिन्दु में, बिन्दु समाये सिन्धु।
सिन्धु बिन्दु के मेल से, बिन्दु कहाये सिंधु।। ६७८

द्रुत गति जापइ नाम प्रभु, बिशुद्ध बुद्धि में ध्यान।
आज्ञा चक्रहिं देखिये, परम ज्योति ब्रह्म ज्ञान।। ६७९

एक अचम्भा देखता, सूखा पड़ा तलाव।
उल्टी नैया बैठि के, पहुँचा अपने ठाँव।। ६८०

शास्त्र बचन अनमोल है, व्यर्थ बात मत बोल।
हिय प्रभु धारण कीजिये, माया से मत तोल।। ६८१

दीपक घृत बाती जगे, साधक दृढ़ विश्वास।
स्वार्थ रहित प्रभु ध्यान से, तन मन होंहि प्रकाश।। ६८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनहि बुद्धि को छोड़िये, देह न कीजे ध्यान।
रूप स्वरूपहिं देखिये, परम तत्व का ज्ञान।। ६८३

मन हद से अनहद मिले, पड़े सुनाई नाद।
जपा जाप अजपा मरे, रहे सुरति में याद।। ६८४

शब्द ब्रह्म की आत्मा, मन मन्दिर आवाज।
गुनी धुनी सुन जानते, रूपहि रूप बिराज।। ६८५

निश्चय मन में कीजिये, निश्चय हैं भगवान।
हिय में रामहि धारिये, करहु निरन्तर ध्यान।। ६८६

ज्ञानी-योगी-भक्त में, कोइ न मानउ भेद।
भक्ति-भक्त-भगवान को, शास्त्र कहें निर्भेद।। ६८७

सदा एक-रस जानिये, साधक सिद्ध सुजान।
मन से माया त्याग कर, सदा करें प्रभु ध्यान।। ६८८

राम रसायन पीजिये, चढ़ जायें दो नैन।
मस्ती में तन झूमता, मुख नहिं बोलइ बैन।। ६८९

स्वामी सबमें होत हैं, सब स्वामी में नाह।
स्वामी से स्वामी मिले, यामे सच्ची राह।। ६९०

हम संतों की आत्मा, संत हमारे रूप।
नित कीजै सत संग को, छूटि जाय भवकूप।। ६९१

मैं को मैं नहिं जानता, तूं नहिं जाने मोय।
तूं को मैं जब जानता, मैं भी तूं मैं खोय।। ६९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

राम चरण अवलम्बन एकू,
बुद्धि ज्ञान नर पाइ विवेकू। ६६३

को करि सके प्रभु नाम बड़ाई,
जिमि प्रभाव जड़ता जड़ जाई। ६६४

राम नाम लेकर नहिं जीते,
ताको जीवन रोवत बीते। ६६५

विकल बुद्धि मन शान्ति न पावा,
जब लगि राम नाम नहिं गावा। ६६६

।। दोहा ।।

देवि प्रसादान्ह लीजिये, ज्ञानहि कर्म अनूठ।
बिना कर्म मिल जायेगा, जग को मानहि झूठ।। ६६७

नयन पाइ जग अन्ध बहु, सत्य पंथ नहिं सूझ।
विन सुकर्म नर जानिये, भक्ति भाव नहि बूझ।। ६६८

पुरुष विवेकी बहुत हैं, परम विवेकी एक।
एक पंथ प्रभु नाम का, छाड़इ पंथ अनेक।। ६६६

घोर अघोरी घोर कोउ, कोऊ घोरा घोर।
जो जन मन कहु घोरते, सोई जगत अघोर।। ७००

औषड़ पंथ अघोर में, चौघड़ को पहचान।
अहं बुद्धि मन चित्त में, होय स्वरूपहि ज्ञान।। ७०१

सुपथ पंथ साधक चले, कुपथहिं चले कपूत।
बिना पंथ बालक चले, ताको जानि सपूत।। ७०२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्प्रदाय बन्धन जगत, तज कर भक्त सुजान।
बन निबंध हरि नाम भज, रह सत कामहि धाम।। ७०३

सारे मजहब एक हैं, सबका इक ईमान।
खुदा राम भी एक है, ना माने बेइमान।। ७०४

प्रभु के नाम अनेक हैं, गाड खुदा अरु ईश।
मन्दिर मस्ज़िद गुरुद्वार में, बसत एक जगदीश।। ७०५

जीव जीवनी की कला, कला न जाने कोय।
जो जाने जीवहिं कला, काल न कवलित होय।। ७०६

वाणी से सत बोलिये, मनसा सत्य विचार।
काया से सतकर्म हो, देवि बतावहिं सार।। ७०७

मान चाहिये जगत में, यश कीरति की चाह।
ऐसा निश्चय मानिये, मिलइ न सच्ची राह।। ७०८

पहलवान जग चार हैं, लोभ मोह मद काम।
बिजय युद्ध करि पाइये, कीजहु जग में नाम।। ७०६

रोग होंहि भव भोग से, भोग होंहि जस कर्म।
राम भजन नर कीजिये, नर कहु एकइ धर्म।। ७१०

बिना दिये रघुनाथ के, मिलें न देवी दास।
जो प्रपंच जग में करें, वाही जन बदमाश।। ७११

वा को ज्ञान न दीजिये, जा को नहीं समाय।
सूखे बिरवा बाग के, सींचे नहिं हरि याय।। ७१२

भक्त गुरु भगवान अरु, भक्ती चारेउ एक।
ज्ञान दृष्टि से देखिये, नामहि रूप अनेक।। ७१३

साख पात ढुढ़ि पेड़ का, गिन गिन थाके लोग।
मूल बीज लखि लीजिये, होवहिं नाहिं वियोग।। ७१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

– प्रसंग सूची –

प्रसंग	संख्या चौपाई, दोहा
५८. सत संगति की महिमा, कुसंग वर्जना शास्त्र अनुकरण षड्विकारों का त्याग	७१५ - ७१८
५९. सतसंग प्रेरणा क्रोध चिन्ता अहंकार व असत कर्मों का त्याग, भक्ति प्रेरणा निष्काम भक्ति समर्पण शरणागति ज्ञानी भक्त निर्भेद। ज्ञान, मन, मै और कर्म, दोष दोषी का निराकरण ईश्वर की व्यापकता, असाधुता	७१९ - ७३६
६०. चित्त की दशा और उपलब्धि, ब्रह्मज्ञान, जप से ईश्वर दर्शन, अहंकार और ब्रह्म।	७३७ - ७४०
६१. वुद्धि योग, साक्षी भाव, ज्ञान प्रेरणा, सुमिरन स्व स्वरूप साधना ब्रह्मज्ञान, प्रभु दर्शन महात्म्य।	७४१ - ७५८
६२. द्वैत अद्वैत तत्व, ज्ञान-भक्ति, राम नाम महिमा	७५९ से ७६२
६३. ज्ञान वैराग्य, कामना त्याग, राग द्वेष, सुख दु:ख, मन का द्रष्टा आत्म ज्ञान, मृत्यु का दृष्टा भक्ति मै, दृष्टि, सदाचार, नियति की स्वीकृति जप, मन	७६३ से ७८०
६४. भक्ति प्रेरणा।	७८१ से ७८४
६५. विनय, मन से ईश्वर सानिध्य, निर्भरता, इन्द्रिय साधना (तप) पंच महाभूत, कर्मेन्द्रिय,	७८५ से ८०२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानेन्द्रिय और मन। निवेदन, सत्य की भक्ति, ज्ञान विवेक की प्रेरणा, ज्ञानी भक्त योगी और भोगी द्वैत अद्वैत सिद्धान्त से पारब्रह्म की प्राप्ति।

६६. सत असत कर्म, स्थिति प्रज्ञ जीवधर्म सदाचार ८०३ से ८०६

६७. तन का महत्व, तन मयता, मायाऔर अन्त:करण की प्रेरणा सांसारिक कामना असत कर्मों का त्याग सन्मार्ग मन का दृष्टा, प्रभु प्रेम और निष्कामता ज्ञान विवेक, त्रिगुण समर्पण, भक्त की दृष्टि, संसारी और भक्त ज्ञान भक्ति। ८०७ से ८२४

६८. रामकृपा, उपवास और व्रत का तत्व मूढ़ मति ८२५ से ८२८

६६. तत्व ज्ञान, कामना, प्रति स्पर्धा, धर की रिसन, सुमिरन त्रिगुण, सत्य ध्यान, सतकर्म, भजन प्रभु शरण और संसार। ८२६ से ८४६

७०. वैधी पूजा पाठ, साधु वाना सत्य सत्कर्म, वैराग, सत्य और साधुता, साधु आचरण ८४७ से ८५०

७१. सन्त और तत्व, त्यागी, सत्य आचरण, जपदान सतकर्म, शरीर की उपयोगिता, मौन वृत ८५१ से ८६८

७२. कलि प्रभाव विषयी वृत्ति, वीरागी वैरागी ८६६ से ८७२

७३. श्रद्धा विश्वास की कमी, कामना और साधक धर्माचरण, योग प्रभु प्राप्ति, कृपा, वैराग तत्व माया रागी, वीत रागी, जग रागी, त्याग ८७३ से ८८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और वैराग मन और उसकी गति।

७४. माया जीव संसार वन्धन मुक्ति ८६० से ८६३

७५. तन मन साधन आत्मानुभूति, मन की चाल ८६४ से ६११
माया षड्विकारों से युद्ध जीव धर्म सुमिरन

७६. भजन की प्रेरणा ६१२ से ६१५

७७. जप, ध्यान योग, समर्पण भाव ६१६ से ६३३
मन्त्रोद्घाटन राम नाम महिमा वाणी
संयम प्रभाव

७८. प्रभु कृपा, नाम महिमा, नर तन साधन ६३४ से ६३७

७६. भजन, नाम महिमा, आषम्बन ६३८ से ६५५

८०. मानव तन जीव ब्रह्म, धर्म निष्काम कर्म ६५६ से ६५६

८१. ध्यान तत्व, त्याज्य, ज्ञान और भक्ति जीव, ६६० से ६७७
ईश्वर घट घट वासी, जड़ता प्रभु प्रेम ज्ञान
वैराग्य माया समय की पहचान निर्भरता
समता ममता, साधना

८२. प्रभु शरण भगती की महत्ता तथा मद्यप ६७८ से ६८१

८३. असत कर्म, कुसंग परिणाम, साधक के ६८२ से ६६६
गुण, सिद्ध सुजान, आचरण, तत्व धारणा
मन और जप ध्यान।

८४. चित्त वृत्ति निरोध, सुमिरन ध्यान योग, १००० से १००३
सूरति

८५. सन्यास योग, चित्त निरोध, ध्यान विधि १००४ से १०२१
सगुण निर्गुण चित्त की अवस्थायें, प्राणों में
जप, सुमिरन समर्पण ध्यान, चित्त से ध्यान।

८६. नर तन का महात्म्य, नाम रूप तत्व, १०२२ से १०२५
सुमिरन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८७.	आत्म निवेदन मन की स्थिरता अज्ञानता निर्गुण सगुण ब्रह्म समर्पण-शरणागति सदाचार	१०२६ से १०४३
८८.	ज्ञान, उपकार अज्ञान हिंसा	१०४४ से १०४७
८६.	सत्य, निराकार साकार निगुर्ण सगुण त्रिगुण सत्य, अन्तःकरण, मृदुभाषा पर हित धर्म हिंसा और परिणाम।	१०४८ से १०६५
६०.	अकर्म कर्म सत असत तथा षड्विकार	१०६६ से १०६६
६१.	तन का सौन्दर्य, व्रत, वाणी संयम अन्तःकरण का संयम, भक्ति आत्म शोध दृढ़ता, प्रभु निर्भरता आत्म शोध दृष्टा भाव पर ब्रह्म सगुण निर्गुण तत्व विश्वरूप	१०७० से १०८७
६२.	ब्रह्म की वहुरूपता, सन्त, ज्ञानी, भूसुर असुर	१०८८ से १०६१
६३.	प्रभुशरण समर्पण विनय गुरु महात्म्य	१०६२ से ११०६
६४.	ब्रह्म शक्ति, ज्ञान प्रकाश, अरूप सरूप भक्त	१११० से १११३
६५.	भविष्य वक्ता साधू, वर्तमान, संग कुसंग जप त्रिशंकु सदाचार सतकर्म भक्ति प्रेरणा भजन भक्त महिमा अवतार रहस्य अनन्यता	१११४ से ११३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

सत् संगति महिमा नहिं जाना,
वेद पुराण वृथा जग छाना। ७१५

असत कर्म अरु चोर जुआरी,
संग न कीजिये लम्पट चारी। ७१६

वेद शास्त्र भगवत अरु गीता,
विन अनुकरण जीव जन रीता। ७१७

काम क्रोध मद अन्जन नयना,
आँजे से फूटत दोउ नयना। ७१८

।। दोहा ।।

रे मन कर सतसंग तूँ, सीख भजन की रीत।
काम क्रोध मद लोभ तजि, करहु राम से प्रीत।। ७१६

क्रोध घटावहिं रक्त नर, चिन्ता मांस शरीर।
अहंकार हड्डी घट्यो, असत् कर्म तक़दीर।। ७२०

जन्म हुआ दुख भोग को, सुख इच्छा अज्ञान।
ज्ञान भक्ति वैराग से, होंहि सत्य का ज्ञान।। ७२१

मानुष तन को पाइके, करहु न दूजो काम।
तन से विचरण हो भले, मन से लीजो नाम।। ७२२

तन मन ऐसा बांटिये, हो जाये दो भाग।
एक प्रभू के चरण में, दूजा जग में लाग।। ७२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाहर भीतर कर्म का, राम समर्पण होय।
भक्ति होंहि निष्काम की, मन को अपने धोय।। ७२४

मैं चाकर श्री राम का, नाहिं चाकरी दोय।
जो चाकर संसार का, वह संसारी होय।। ७२५

तुच्छ जीव माया बसे, दिव्य बसें शिव लोक।
जाके मन माया नहीं ताको मोह न शोक ।। ७२६

भक्ति बिना भगवन्त के, आत्म बिना नहि ज्ञान।
तत्व दृष्टि से देखिये, ज्ञानी भक्त समान।। ७२७

कोऽउ छोट कोऊ बड़ा, कोउ बड़ कोऊ छोट।
कोऊ निर्मल होत है, सब कहु मन का खोट।। ७२८

ज्ञान भक्ति वैराग को, शब्दाक्षर नहिं बाँच।
मन को सांचा कीजिये, घट भीतर लख साँचं।। ७२६

साँचा केवल आप हैं, बाकी झूठा मै।
मैं नहिं जाना साँच को, ता सो जग का मै।। ७३०

मन अभिमानी मोह वश, करहिं झूठ बहु काम।
अनइच्छित अभ्यास रत, भजे प्रभू का नाम।। ७३१

मन को अपने देखिये, जाता है किस ओर।
औरहि खोर न दीजिये, आपहि दीजे खोर।। ७३२

खोरी खोर न दीजिये, खोरी है कोउ और।
खोरी मन जग खोर में, काहि न पावे ठौर।। ७३३

अपने घर को देखिये, बैठा बड़का चोर।
करवरी लरिका दाबि के, गाँव मचावहि शोर।। ७३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तन पापी मन पाप मय, झूठे सकल विचार।
काम क्रोध मद लोभ से, घिरा असाधू चार।। ७३५

विष को अमृत जानिये, अमृत को बिष जान।
बुद्धि विवेकी कीजिये, विष अमृत पहिचान।। ७३६

।। चौपाई ।।

प्रवृत्ति मार्ग जे निवृत्ति प्रवीना,
ताको राम परम पद छीना दीन्हा। ७३७

आपन आतम सम जग देखा,
सोइ महात्मन जानहु लेखा। ७३८

निर्मल मन सत्कर्म प्रभाऊ,
नाम जपहि सो दर्शन पाऊ। ७३९

अहंकार प्रभु करहिं अहारा,
जान लेहु जो जानन हारा। ७४०

।। दोहा ।।

अपने तन मन ताप को, आप सुनावहिं आप।
और न जानहिं ताप को, ताप मिटावहिं आप।। ७४१

आप जनावहि आपको, आप न जानहिं आप।
जो जन जाने आप को, मिट जाये संताप।। ७४२

बाहर ज्ञानहि बाहरा, भीतर करे प्रकाश।
जाप निरन्तर कीजिये, पञ्च भूत की श्वांस।। ७४३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमिरण ऐसा कीजिये, पपिहा स्वाती बूँद।
माया से मुख मोड़ि के, लेवहु आँखे मूंद।। ७४४

क्षर में अक्षर आइके, करहि जीव उद्धार।
ओ३म् ओ३म् कहते रहें, तन मन होंहि सुधार।। ७४५

दैवी गुण निज रूप में, बाहर खोजन पाय।
अपने मन को खोजिये, स्व-स्वरूप मिल जाय।। ७४६

जीव दृष्टि को त्यागि के, ब्रह्म दृष्टि जग देख।
या विधि ज्ञान प्रकाश नर, वेद शास्त्र भरि लेख।।७४७

पंच तत्व की देह में, अमर तत्व की खान।
ब्रह्म स्वरूपी आत्मा, कर लेवहुँ पहिचान।। ७४८

आन भरोसा त्यागि के, आप भरोसा मान।
देख सकइ तो देख लें, आतम को पहचाना।। ७४६

मैं माया मैं ब्रह्म सम, मैं ही जीव स्वरूप।
निज मै को पहचानिये, मै ही आतम रूप।। ७५०

आपन कीजो चाकरी, और न कीजे आप।
आप आपकी जो करे, आप मिटे संताप।। ७५१

हीरा घट के भीतरा, ढूढ़ रहा चहूँ ओर।
गहराई से खोद के, लेवहु रतन बटोर।। ७५२

जीवन अपने हेतु नहिं, परहित मिला शरीर।
जीवहि देखिय ब्रह्म मय, छूटहि कालहि पीर।। ७५३

अपनी डफली ढोल को, पीट रहे दिन रात।
ताके मन फीको लगे, सप्तम सुर की बात।। ७५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलते चलते थक गया, आप चले ना कोय।
आप चलावे आप को, आपहि आपा खोय।। ७५५

कोऊ साधक सिद्ध है, कोऊ चतुर सुजान।
बिना दरश रघुनाथ के, मानव पशुहि समान।। ७५६

करुणानिधि करुणा करें, सुन के करुण पुकार।
द्रुपद सुता की टेर में, आये कृष्ण मुरार।। ७५७

हार गया मैं जगत से, बची आपकी टेर।
मैं कपूत प्रभु आपका, काहि लगावहि देर।। ७५८

।। चौपाई ।।

द्वैताद्वैत भेद नहिं येकू,
ज्ञान भक्ति नर होंहिं विवेकू। ७५९

ज्ञान बिशुद्ध शुद्ध मन पाये,
मन विशुद्ध रामहि गुण गाये। ७६०

जा हिय मन श्रद्धा विश्वासा,
सोई नर जानहिं प्रभु दासा। ७६१

राम नाम जड़ चेतन वासा,
सबहि लोक महिं परम प्रकाशा। ७६२

।। दोहा ।।

बात ज्ञान की कीजिये, मोर तोर दे त्याग।
इच्छा मन होवइ नहीं, जान लेहु वैराग।। ७६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अति दुष्कर अतिशय कठिन, परमानन्दी राह।
परमानन्दी राह में, तज दो अपनी चाह।। ७६४

मान-अमान न मानिये, राग द्वेष को त्याग।
बहुत गवांया सोय कर, अब तो मनुआ जाग।। ७६५

आगी खा पानी पिये, पानी पीके आग।
बुद्धि विवेकी जानिये, मनहिं छुड़ावे दाग।। ७६६

प्रभु प्रभाव नहिं जानते, माया वसि मति मूढ़।
भक्ति करत मन देखिये, यामहि रहस अगूढ़।। ७६७

मन मूरख अज्ञान बसि, करे न खुद पहचान।
खुद में खुद को देखिये, मिल जाये भगवान।। ७६८

अन्तन होंहि अनन्त को, होंहि अनन्त न अन्त।
जो नर जानहिं अन्त को, ताको जानहिं सन्त।।७६६

चाहत ऐसी चाहिये, जैसे चन्द्र चकोर।
प्रभु चरणन चित बांधिये, कबहुँ न टूटे डोर।। ७७०

निजानन्द निज रूप में, निज को निज से जान।
द्वैताद्वैत विशिष्ट मैं, सगुण रूप पहचान।। ७७१

योगी मन से लखत है, ज्ञानी सबके देह।
भक्त सगुण साकार हो, लखइ सदा उर गेह।। ७७२

आत्म जगत की साधना, समुझि परे मन एक।
प्रभु सुमिरण चित राखिये, लक्षहिं भेद अनेक।। ७७३

असत कर्म नहिं कीजिये, सत से रहहुँ न दूर।
नित्या नन्दी नित्य में, मन राखिहि भरपूर।। ७७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन लकड़ी मलयागिरी, सुकर्म शिला घिस डारि।
मस्तक अपने धारते, कैलाशी त्रिपुरारि।। ७७५

अपने सोच न सोच है, प्रभु सोचे सब सोच।
सोच प्रभुहिं को दीजिये, सोचहिं देय निपोच।। ७७६

एक साधना कीजिये, मन ही मन प्रभु जाप।
आपै आप सम्हारिये, और न माई बाप।। ७७७

मन को खाली कीजिये, सत के भरहि विचार।
परमानन्दी मार्ग का, सन्त बतावहि सार।। ७७८

मन में सुमिरन नाम का, चित में धारइ रूप।
तन राखइ संसार में, साधन परम अनूप।। ७७९

आत्म समर्पण कीजिये, अहंकार को त्याग।
पूर्ण समर्पण जानिये, मन लीजे बैराग।। ७८०

।। चौपाई ।।

मनुज देह की बड़ मनुसाई,
राम भगति जिनके हिय आई। ७८१

राम चरण धारइ नहिं छाती,
वा को जानहु परम कुजाती। ७८२

रामहि नाम करहिं सतसंगा,
बिनु प्रयास होवहिं जस गंगा। ७८३

विनय करइ छल बल सब हीना,
सकल पदारथ रघुपति दीना। ७८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

गंधी के संग डोलिये, बिन पैसा बिन मोल।
अपनी वास-सुवास से, मन को देवहि घोल।। ७८५

मन के जानन हार प्रभु, दर्शन चाहउँ तोर।
सकल कामना हीन मैं, लक्षहिं पुरवहु मोर।। ७८६

विनय न ऐसी कीजिये, जामे प्रीति न होय।
प्रीतिभाव बिनु जानिये, सुनइ न जग महु कोय।। ७८७

करुणा निधि करुणा कर, करुणा सिंधु सुनाम।
जो करुणा तेरी मिले, हो जाऊँ निष्काम। ७८८

मनघट से पनघट मिले, पनघट प्यास बुझाय।
घट घट में यम घट रहे, या घट लौट न आय।। ७८९

एक भरोसो राम करि त्याग देहिं अपराध।
निश्चय ऐसा कीजिये, इन्द्रीय मन को साध।। ७९०

एक बनइ जग पाँच से, पाँच क्रियारत जान।
ज्ञान पाँच नर देत हैं, एकइ से भगवान।। ७९१

काहि कहूँ प्रभु आपको, कृपा सिन्धु रघुनाथ।
मोहिं कृतारथ कीजिये, सदा रहें मन साथ।। ७९२

अन्दर बाहर पोछिये, मन शीशे का मैल।
बिना सफाई जानिये, नर कोल्हू का बैल।। ७९३

बाहर भीतर पूजिये, राखहु बाहर नाहिं।
बाहर से बाहर रहे, भीतर नाहिं समाहिं।। ७९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य बिना नहिं भक्ति है, भक्ति बिना नहिं ज्ञान।
काम क्रोध मद लोभ से, जाइ न तम अज्ञान।। ७९५

मन के साधे साधना, बहुते बड़का चोर।
छिन छिन पल पल भागता, भ्रमण करे चहुँ ओर।। ७९६

निज मन को पहचानिये, निज को दीजे ज्ञान।
काम क्रोध को छाड़िके, सदा सुमिर भगवान।। ७९७

चाहत नहि संसार की, चाहत प्रभु की चाह।
चाह गये प्रभु चाहते, और न होवइ चाह।। ७९८

मन के हारे हार है, तन हारे नहिं हार।
राम नाम जप कीजिये, सार लखहु संसार।। ७९९

ज्ञानी देखे ज्ञान से, नयनन देखत भक्त।
योगी देखे योग से, भोगी भोगा सक्त।। ८००

साधक साधे इन्द्रियाँ, मन को सिद्ध सुजान।
पार ब्रह्म को पाइये, द्वैता-द्वैत बिधान।। ८०१

बिना जोड़ नहि पाइया, दो जोड़हि दो चार।
एक मिलावहि एक से, द्वैता-द्वैत विचार।। ८०२

।। चौपाई ।।

नर पिशाच नर देहि कहावा,
सत्य-असत्य कर्म-फल पावा। ८०३

हानि लाभ सुख-दुख मन एकी,
सो नर जानइ बुद्धि बिबेकी। ८०४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूठ कपट छल जिनमहि होई,
बार बार दुख पावहिं सोई। ८०५

शुद्ध चित्त मन होंई विवेका,
जीवहिं धर्म जगत नर एका। ८०६

।। दोहा ।।

मानुष तन गुण खान का, जानहिं परम निधान।
कर्महीन नर जानिये, मिलइ न एकउ ज्ञान।। ८०७

तन वाणी कछु और है, मन वाणी कछु और।
एक दूजे के मेल बिनु, जीव न पावइ ठौर।। ८०८

मूक बधिर हो जात नर, कामिनि कंचन संग।
वाणी ज्ञान प्रकाश बिनु, होई न निर्मल अंग।। ८०६

दिन कर ढांके बादला, असत ढंके सतकर्म।
मन को ढांके कामना, त्यागि देहि सो धर्म।। ८१०

असत कर्म दुख देत हैं, सत कर्महि सुख खान।
तबहु न सुख नर लेत है, मन मूरख अभिमान।। ८११

जर्जर तन बूढ़ा भयो, मन तो भयो न बूढ़।
मन को बूढ़ बनाइये, सत् मारग को ढूँढ़।। ८१२

निज अवगुण अव लोकिये, औरहि के गुण जान।
मन को देख सुधारिये, देवी वचन प्रमान।। ८१३

छोड़हु जग की चातुरी, चार चतुरिया चोर।
काम क्रोध मद लोभ का, जगमहुँ ओर न छोर।। ८१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर्ग नर्क जग देखिये, निज कर्मों के भोग।
काहू को प्रभु योग सुख, काहू को भव रोग।। ८१५

पतितों को पावन करे, प्रभु चरणों की प्रीति।
एकइ को जग मारि के, दस को लेवइ जीत।। ८१६

षट विकार की आहुती, देते ज्ञानी भक्त।
माया मोहहि त्यागि के, होवहि नाहिं असक्त।। ८१७

प्रभु अर्पण गुण तीन हैं, तन मन नहिं संसार।
एक दरश की लालसा, दूजो नाहिं विचार।। ८१८

जो देखत वे सूर हैं, नहिं देखत वे सूर।
सूर सूर को जानिये, परानंद नहिं दूर।। ८१६

जग के चाकर लोग सब, राम न चाकर कोय।
जो जन चाकर राम के, रामहि ताकर होय।। ८२०

मन के असत विचार तजि, सत को लीजे धार।
अविरल गति सुमिरन करे, भक्त होहि भवपार।। ८२१

सियाराम की चाँदनी, छिटक रही चहुँ ओर।
कोऊ चुपके लेत है, कोउ मचावे शोर।। ८२२

अनगिन उडुगन ऊगते, जाहि न तम आकाश।
एक उदित रवि आपना, चहुँ दिशि करहिं प्रकाश।।८२३

आपन स्वारथ देखिये, परमारथ को त्याग।
अपनी कुटी प्रकाशिये, ज्ञान भक्ति से जाग।। ८२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

क्रोध मोह मद काम बिशाला,
शमन होहि जब राम कृपाला। ८२५

षड़विकार प्रभु करहि विनाशा,
सत्यव्रती जो करहिं उपासा। ८२६

जड़ मति मनुज ज्ञान नहिं पावा,
ब्रह्म देव सन्मुख समझावा। ८२७

काम क्रोध मद लोभ न जाके,
भक्ति हृदय मन आवहि ताके। ८२८

।। दोहा ।।

जीने से मरना भला, जो न भजे भगवान।
पण्डित से मूरख भला, जेहि तत्व का ज्ञान।। ८२९

अट पट वाणी देवि की, झट पट समझ न आय।
खट पट या संसार का, समझे जरि जरि जाय।। ८३०

चाहत रूपी बिटप से, बिपिन भरा भरपूर।
मन केहरि जग जाल से, निकल सकहिं ना दूर।।८३१

कलुषित मन की भावना, प्रति स्पर्धा छोड़।
काम क्रोध मद लोभ से, मन को अपने मोड़।। ८३२

मोह कपट छल छिद्र से, घट की रिसन न जाय।
जीव पियासा ही रहे, पानी ना ठहराया।। ८३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया मोह बिसारि के, छाड़ि जगत के काम।
शुद्ध बुद्धि मन कीजिये, सुमिरि सुमिरि प्रभु नाम।। ८३४

चेतन मन नहिं चेतता, चेतन पड़ा अचेत।
त्रिगुण सत्य अपनाइये, कीजे मनहि सचेत।। ८३५

जो मन वाचा कर्मणा, सत्य करइ स्वीकार।
ताहि न व्यापहि जगत में, माया का व्यवहार।। ८३६

मन कर्ता नहिं दीखता, तन कर्ता कछु दीख।
प्रभु का सुमिरण कीजिये, गुरु वाणी कहु सीख।। ८३७

क्षीर जमे दधि होत है, दधी नीर संग माठ।
माखन भक्ति निकालिये, मथि डारे तन काठ।। ८३८

नित्या नन्दी नित्य हैं, नित्य करहि नित ध्यान।
नित्य अनित्यहिं से मिले, भक्त नित्य भगवान।। ८३९

मन मथिये मन मारि के, तन मथिये सत्कर्म।
नाम मथानी राम की, मथि लेवहिं सो धर्म।। ८४०

दिन कर बदलि दिशान को, शशि भूतल आ जाय।
मनुज देह बिनु भजन के, कबहुँ मुक्ति नहिं पाय।। ८४१

या घट में दस प्रेत हैं, ता पर जिन्न सवार।
बिनु हरि भजन न मानिहे, कोटिन कर उपचार।। ८४२

दस को साधे एक से, एक साधिये बुद्धि।
प्रभु का सुमिरण कीजिये, हो जाये मन शुद्धि।। ८४३

झूठे मन की कामना, काहि लगावे दौड़।
प्रभू चरण जब पाओगे, जगत दिखेगा गौड़।। ८४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जड़ चेतन मन जानिये, कर्म अकर्महि देख।
जड़ जीवहिं जग जात है, राम रसायन पेख।। ८४५

चरण शरण प्रभु मांगिके, रागी लै वैराग।
जड़ जीवहि को जानिये, अंधकार से जाग।। ८४६

।। चौपाई ।।

बिधि बिधान पूजा बिधि नाना,
जैसे साधु ऊपरी बाना। ८४७

बाल राखि मुड़ धोटा होई,
सत्य बिना नहि साधू कोई। ८४८

उदर पूर्ति जे निरत प्रयासा,
वृथा देह नर खोवइ श्वांसा।। ८४६

नर सम कोऊ और न दूजा,
सत्कर्महि बस होवइ पूजा। ८५०

।। दोहा ।।

जगरागी नहिं जानते, वैरागी का देश।
बृथा रमाये भागते, लम्बे लम्बे केश।। ८५१

राख कमण्डल ऊपरा, मूड़ मुड़ा रखि केश।
साँच बिना साँचा नहीं, गृह रखि जा परदेश।। ८५२

घर से भागे साधु जो, ले भगदड़ वैराग।
बगदर सम साधू बने, साँचा जगधर राग।। ८५३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधू माया जाल से, तन मन राखइ दूर।
कर्म फलहिं को त्यागि के, सुख पावहिं भरपूर।। ८५४

सब जन साधु न होत हैं, सब नहिं होंहि असाधु।
बैर-प्रीति सम योग महुं, जीव चलहिं निर्वाधु।। ८५५

सकल कामना जगत की, त्याग देहि सो सन्त।
जाके मन सुख भौतिकी, सोई जानि असन्त।। ८५६

संसारिकता का हुआ, जिसके मन से अन्त।
वाही को कह लीजिये, ऋषी मुनी और सन्त।। ८५७

जग तो पाथर लेत हैं, हीरा लेवहि सन्त।
अन्तहि जग रहि जात है, साधू जाहि अनन्त।। ८५८

तन को रंगना है सरल, झांकहु अन्तर कूप।
अन्तः कलुष उलीच कर, धरहु संत का रूप।। ८५९

मन साधे सो सिद्ध जन, साधक साधे देह।
भक्त सुजान हि साधि के, प्रभु राखे उर गेह।। ८६०

बिना धर्म सतकर्म के, संत न जगत सुहाय।
बिन पानी जस मीन के, प्राण पखी उड़ि जाय।। ८६१

धर्म कर्म के त्याग से, कोउ न त्यागी होय।
कृष्ण भजे माया तजै, त्यागी जाने सोय।। ८६२

वाणी असत् न बोलिये, कर्म सत्य व्यवहार।
काम क्रोध मद लोभ जग, नाहिं सतावहिं चार।। ८६३

मन निर्मल प्रभु जाप से, धन निर्मल करि दान।
तन निर्मल सतकर्म से, होय जीव कल्याण।। ८६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तन की शोभा भक्ति से, मन की शोभा ध्यान।
वाणी शोभा राम से, धन की शोभा दान।। ८६५

बुरा न सुनिये कान से, बुरा न बोलहि बैन।
बुरा न काहू कीजिये, बुरा न देखहि नैन।। ८६६

अपनी निन्दा कीजिये, पर निन्दा अपराध।
औरहुँ का मन छाड़ि के, अपने मन को साध।। ८६७

मौन नहीं सत बोल बड़, रसना से रस घोल।
ढाई अक्षर प्रेम से, कृष्ण-नाम को बोल।। ८६८

।। चौपाई ।।

कलि करतल भयोउ संसारा,
झूठहिं चाल असत व्योहारा। ८६६

नर पिशाच नर देह कहावा,
काम क्रोध मद लोभहिं भावा। ८७०

नग्नावेश वसन जन त्यागी,
सो नर जानि विरल मन रागी। ८७१

मन क्रम वचन कर्म फल त्यागी,
सो नर जानहि जग वैरागी। ८७२

।। दोहा ।।

श्रद्धा और विश्वास बिनु, कोउन साधक सिद्ध।
उड़ि जावे आकाश महि, जस पाखिन मेंगिद्ध।। ८७३

मान बड़ाई कामना, यश कीरति अभिमान।
पतन सुनिश्चय जानिये, साधक सिद्ध सुजान।। ८७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरित बिना नहिं धर्म है, धर्म बिना नहिं योग।
योग बिना नहिं प्रभु मिले, त्यागहु जग के भोग।। ८७५

तन से भोगहि भोगिये, मन से कीजे त्याग।
योग भोग महु राखिके, मन लीजे वैराग।। ८७६

बिना कृपा रघुनाथ के, चलइ न जप तप योग।
माया कठिन कठोर अति, जाहिं न जग के भोग।। ८७७

श्रद्धा सुमन चढ़ाइये, बाह्य सुमन को त्याग।
अन्तर्मन से जागिये, मिलइ तोहिं वैराग।। ८७८

जग रागी बागी भये, पाय कृपा की कोर।
माया रागी बहुत हैं, वैरागी जग थोर।। ८७९

वैरागी के देश में, रागी कबहु न जाय।
जो जावहि यहि देश को, वैरागी कहलाय।। ८८०

बैरागी के राग में, रीति प्रीति परमार्थ।
रागी का मन राग में, सदा रहे जग स्वार्थ।। ८८१

माया रागी बहुत हैं, बैरागी जन थोर।
कर्म फलहि को त्यागि के, पुनि कहते नहिं मोर।। ८८२

बीत राग में राग नहिं, सोई जन बैराग।
अनासक्ति से होत है, सब कर्महि का त्याग।। ८८३

बैरागी रागी कोउ, कोउ दोनों के बीच।
मान सरोवर बैठि के, खिले कमल अस कीच।। ८८४

रागी जग बैराग नहिं, बैरागी नहिं राग।
योग भक्ति अरु ज्ञान से, जीव जगत में जाग।। ८८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राग रखहि नहिं त्याग में, सोई जग वैराग।
कर्म करे आसक्ति बिनु, होवहिं बिनु अनुराग।। ८८६

जानहुँ बाल अबोध मन, अनुचित उचित न जान।
जैसे कीजै संग जब, वैसे उपजे ज्ञान।। ८८७

दिग दिगन्त दौड़ा करे, मन की चाल बिशाल।
साधन मनाहि शरीर से, मन को आप सम्हाल।। ८८८

दुर्गाति से सद्गति मिले, मन की गतिहि सम्हार।
माटी से घट ढालता, जैसे चाक कुम्हार।। ८८९

।। चौपाई ।।

मनुज देह मन देवहु खोरी,
माया के बस मति भइ भोरी। ८९०

यह संसार जीव कहु फंदा,
राम भजन करि परमानन्दा। ८९१

शील स्वभाव न मन झुठलाई,
भजहु राम सत नाम सुहाई। ८९२

अन्तर मन के जानन हारी,
कइसे वरणो अवध बिहारी। ८९३

।। दोहा ।।

मनुज रूप मन साधना, तन साधन को पाय।
जो न तरइ मति मूढ़ता, ताको कौन उपाय।। ८९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने मन को छाड़ि के, दूजे का नहिं ढूढ़।
रूपहिं आप संवारिये, आप न ढूढ़हि मूढ़।। ८६५

अपना पता न जानिया, दूसर काही लेव।
दूसर को निज दीजिये, पुनि दूसर से लेव।। ८६६

मरना जग में सरल है, जीना है दुस्वार।
नर देही के देह में, दशरथ मनहिं सवार।। ८६७

पवन वेग से वेग अति, मन चाही मन चाल।
बिषयन देत कुअंक नर, प्रभुहिं सुदर्शन भाल।। ८६८

दूषित मन दूषित भयो, दूषित कर्म प्रधान।
वैसे नर संसार में, कबहुँ न पावहिं ज्ञान।। ८६६

चक्रव्यूह संसार में, महारथी हैं चार।
काम क्रोध मद लोभ से, बिरले पावहिं पार।। ६००

योद्धा बाको जानिये, जो मन लेवइ जीत।
षड्विकार को त्याग कर, चलइ शास्त्र की नीति।। ६०१

विजय श्री नर हाथ है, चरण गहे श्री-नाथ।
माया-श्री को त्यागिये, श्री-पति तुम्हरे साथ।। ६०२

माया पति दोऊ जगत, में गरल सुधा के रूप।
एक भरा भव कूप है, दूजा ब्रह्म स्वरूप।। ६०३

माया निश दिन छोड़ती, तर कश से बहुतीर।
रोम रोम भिद जाय नर, छेदय सकल शरीर।। ६०४

चक्रव्यूह जग जानिये, सेनाविद चतुरंग।
महारथी मन मारि के, जीत जाय नर जंग।। ६०५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant 2

जीव जगत घट बैठि के, माया तजै न कर्म।
मनुज रूप क्यों त्यागता, आपहिं अपना धर्म।। ६०६

धर्म युद्ध त्यागो नहीं, क्षत्रिय धर्म प्रधान।
पार्थ धनुष को लीजिये, छोड़ो अपने वान।। ६०७

माला कबहू न त्यागिये, माला अस्त्र समान।
समर भूमि फीकी लगे, जस बिनु तीर कमान।। ६०८

माला ऐसी चाहिये, जामे थाक न होय।
सुमिरन निश-दिन कीजिये, मनुवा जाये खोय।। ६०६

देवी माला लाकड़ी, कह साधक समुझाय।
मन नहिं रोका आपना, मोहीं काहि चलाय।। ६१०

मन को पहले रोकिये, पुनि कीजे प्रभु जाप।
आप न जाने आप को, आप जनावहि आप।। ६११

।। चौपाई ।।

सत्य भजन प्रभ नाम प्रभाऊ,
कलियुग में समुझे नर काऊ। ६१२

राम नाम महिमा जे जानी,
सोइ जानहु जग महु विज्ञानी। ६१३

शोक व्याधि चिन्ता बहु नाना,
राम भजन जन जान निदाना। ६१४

बालक बृद्ध युवा सब कोई,
भजहि राम नहिं कालहु खोई। ६१५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

जान बूझ अनबूझ है, काहि परे नहिं सूझ।
माया भीषण युद्ध में, राम नाम ले जूझ।। ६१६

चिन्तन कीजै चार की, नाम रूप हिय ध्यान।
प्राणों में जप कीजिये, कृपा करहिं भगवान।। ६१७

चलते फिरते कर्म रत, भजिये प्रभु का नाम।
तन राखहु संसार में, मन महु जपिये राम।। ६१८

भोगी भोगे रोग को, रोगी भोगे भोग।
भोग रोग मन त्यागि के, राम नाम जप योग।। ६१९

को जाने संसार गति, को जाने जप जोग।
बिनु हरि कृपा न छूटिहें, मन संसारी भोग।। ६२०

कृपा कृपा कहते रहे, राम कृपा नहि लेहि।
मनहि पात्र निर्मल करे, कृपा पात्र भर देहि।। ६२१

सत्य कर्म हरि आस्था, सुमिरन करि दिन रैन।
प्रभुहि मिलन हित त्यागिये, दुनिया के सुख चैन।। ६२२

जो करता सो भोगता, नहि करता नहिं भोग।
कर्म फलहि को त्यागि के, कृष्ण भजहि जय योग। ६२३

प्रथम उचारहिं ओ३म् को, दूजे नमः लगाय।
तीजे नामहि मध्य में, सबहि मन्त्र बन जाय।। ६२४

राम राम रटते रहो, स्वाति पपीहा जाति।
नर तन को लख लीजिये, जिये न पशु की भांति।। ६२५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल कल करते कल गया, काल करे सो आज।
आज करे से काज भा, रामहि नाम जहाज।। ६२६

नीचं कींच के बीच में, राखहि दीना नाथ।
तुमहिं छाड़ि इस जगत में, कोउ न देवइ साथ।। ६२७

जग सोवन भल जानिये, जागन भला न होय।
वाणी देवि प्रसाद की, अन्तर जग में खोय।। ६२८

वाणी बोल विचार के, सुख पावहि सब लोग।
वाणी से वाणी मिले, जय वाणी का योग।। ६२६

वाणी बोलो सोच के, बिन सोचे मत बोल।
वृथा बात मत बोलिये, बोल बात को तोल।। ६३०

वाणी शोभा कोकिला, बगुला शोभा ध्यान।
गो शोभा शुचि क्षीर से, मानव शोभा ज्ञान।। ६३१

राम नाम के रतन की, परख न जाने कोय।
जो नर जानइ रतन को, सोइ पारखी होय।। ६३२

रत्न प्रभू का नाम है, सागर जानहु क्षीर।
पाद निरन्तर जो करे, मिटै सकल भव पीर।। ६३३

।। चौपाई ।।

सीता राम मोह मद भज्जन,
भजन करइ सो नर जग सज्जन। ६३४

बार बार नर देह न पावा,
राम नाम पारहि भव नावा। ६३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया कठिन कठोर कराला,
छूटहि नहिं बिनु राम कृपाला। ६३६

बुद्धिमान बिचलित नहिं होई,
भगति बिमुख रहि समय न खोई। ६३७

।। दोहा ।।

बीज न उपजै वारि बिन, सुख जाहिं सब खेत।
तासो प्राणी भजन बिन, मूरख फिरत अचेत।। ६३८

अचेतन चेतन कहई, चेतन कही अचेत।
मन मूरख जड़वत भयो, राम नाम नहिं लेत।। ६३९

तर्क-वितर्क न कीजिये, बुद्धि अतर्कहि राम।
निर्मल मन से लीजिये, प्रभु का सांचा नाम।। ६४०

खेती ऐसी कीजिये, जामइ पेड़ विशाल।
राम नाम के बीज से, नाहिं करे कछु काल।। ६४१

कल्प वृक्ष को जानिये, राम नाम संसार।
मन चाहा फल लीजिये, कर सुमिरन कर्तार।। ६४२

चोरी करते चोर जो, बन के साहूकार।
राम नाम के चोर को, कोउ न जानन हार।। ६४३

साधक ऐसा चाहिये, जैसे धन कंजूस।
राम तिजोरी राखते, बन कर मक्खी चूस।। ६४४

रोते-रोते युग गया, अब तो रोना छोड़।
राम नाम चित दीजियो, अपने मन को मोड़।। ६४५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जित देखहि तित दीखिया, रहत नयन की ओट।
जैसे मोतिया बिन्द से, समुझि परे ना खोट।। ६४६

बुद्धि विवेकी जीव जन, रामहि नाम बटोर।
आपन आपा ना कहे, कहत जगत सब तोर।। ६४७

जग में कोउ न आपना, केवल प्रभु का नाम।
सबकी आशा छाड़ि के, भजहु निरन्तर राम।। ६४८

पद का मद नहि कीजिये, मद पद दोनों जाय।
राम सहारा लीजिये, जगत देह नर पाय।। ६४६

झूठा साँचा छाड़ि के, फेर फेर मन डार।
भजिये केवल राम को, जो सारहि का सार।। ६५०

सुमति सुमंगल जानिये, जाके मन महु राम।
मोह निशा नहिं छायेगी, भजहु निरन्तर नाम।। ६५१

राम नाम का साबुना, मलि मलि धोवहु लेइ।
मन निर्मल हो जायेगा, पावइ दर्शन तेइ।। ६५२

काम-धेनु श्री-राम हैं, इच्छित फल दातार।
बिनय प्रेम-वश जानिये, सब करते करतार।। ६५३

भगिये नहीं भगाइये, माया खुद भगि जाय।
राम नाम का रूप जब, हिय में लेहु बसाय।। ६५४

माया ममता मोह से, ग्रसित सकल संसार।
राम नाम बिनु जानिये, होहि न भव से पार।। ६५५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

मानव तन की बड़ मनुसाई,
तुच्छ जीव नर ब्रह्म समाई। ६५६

प्रभुहिं कृपा से मिलइ सतकर्मा,
निज स्वरूप जानहि निज धर्मा। ६५७

एकइ मन ममता सब ओरी,
तासो प्रीति न राम घनेरी। ६५८

धर्म अनन्त अन्त नहि धरमा,
बिरत निरन्तर कीजै करमा। ६५९

।। दोहा ।।

नर देहहिं सम देह नहिं, बुद्धिहिं परम विवेक।
सकल मोह को त्यागि कै, ध्यावहु नर प्रभु एक।। ६६०

अर्थ जानिये एक का, एकइ होय अनेक।
तूँ तूँ मैं मैं त्यागि कै, निर्मल होय विवेक।। ६६१

काया माया से परे, परम पिता का ज्ञान।
भक्ति सुधा पीते रहो, याही में कल्यान।। ६६२

नेह न होवइ देह में, देह न होवहिं गेह।
पंछी को पहचानिये, तासों राखि सनेह।। ६६३

प्रभु को कहीं न ढूढ़िये, अपने घट में वास।
निर्मल मन से देखिये, सदा मिलेगें पास।। ६६४

सूझ बूझ नहिं चेतना, जड़ समान हिय जान।
मन मूरख चेतइ नहीं, मिल जाये भगवान।। ६६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जड़ से जड़ता जायेगी, जड़ में देखहु राम।
निश दिन सुमिरन कीजिये, हो जाओ निष्काम।। ६६६

धर्म एक मानहि जगत, प्रभु चरनन में प्रीति।
गीता आदि पुराण में, प्रति पादित यह नीति।। ६६७

अन्दर मन कुछ और है, बाहर मन कुछ और।
ताही नर को जानिये, प्रभु चरनन नहिं ठौर।। ६६८

मान मान अभिमान नहिं, षड्बिकार मन त्याग।
निर्मल भगती कीजिये, जान लेहि बैराग।। ६६९

षट-बिकार की आहुती, ज्ञान-अग्नि में देय।
राम नाम मन जाप से, कोटि यज्ञ फल लेय।। ६७०

स्मृति भूत न कीजिये, भविष्य आपके हाथ।
वर्तमान लख लीजिये, राम तुम्हारे साथ।। ६७१

माया दुइ फण नागिनी, इक कंचन इक नारि।
हरि भक्तों को छाड़ि के, सब पर होत सवार।। ६७२

रामहि इच्छा मानिके, दुख सुख रहे समान।
अपनी इच्छा त्यागि के, प्रभुइक्षा को मान।। ६७३

समता से ममता मिले, ममता से प्रभु पास।
भक्त सुदामा जानिये, और भयहु रैदास।। ६७४

काम क्रोध मद लोभ असि, जाके मनहु न आन।
निन्दा स्तुति एक रस, लक्षण साधू जान।। ६७५

तन राखे संसार में, मन राखे भगवान।
कमल रूप हो जाइये, देवी करहिं बखान।। ६७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनसंग इन्द्रिय साधि के, हो गये सिद्ध सुजान।
आत्म चित्त मन रूप में, बसते हैं भगवान।। ६७७

।। चौपाई ।।

निगमागम पुराण पढ़ि गाई,
बिन प्रभु शरण न जड़ता जाई। ६७८

द्वेष भाव कलुषित मन राखा,
भक्ति न पाय देवि अस भाखा। ६७९

पशु पक्षिन सम कामहि देहा,
ताते भगति न राम सनेहा। ६८०

मदिरा पान करहिं दिन राती,
सो नर जानहिं आतम धाती। ६८१

।। दोहा ।।

दोऊ जग में पियत है, इक मदिरा इक क्षीर।
इक तन का सुख देत है, दूजे नाश शरीर।। ६८२

मन बीमार न कीजिये, तन को होने देव।
तन सत कर्म न होत है, मन से तो कर लेव।। ६८३

चोर जुआरी मसखरा, झूठ चुगल बइमान।
कबहु संग नहिं कीजिये, संकट डारहिं प्रान।। ६८४

संगति कबहुँ न कीजिये, कपटी चोर गवाँर।
झूठा कबहुँ न आपना, जान लेउ नर चार।। ६८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दया क्षमा अरु शीलता, साधक के गुण चार।
वाणी प्रभु के नाम से, पहर चले दिन चार।। ६८६

जीना सब नहिं जानते, जीते सिद्ध सुजान।
निरत निरन्तर नाम प्रभु, गावत प्रभु गुण गान।। ६८७

जिन्दा में उपवास नहिं, मुर्दा करे उपास।
बिना पंख पंछी चहत, उड़ जावहिं आकाश।। ६८८

तन को गिरवी कीजिये, मन गिरवी नहि कीन्ह।
जाको हक जामे बने, ताको तैसा दीन्ह।। ६८९

यह तन माटी काठ अस, अंक न जान्यो साठ।
पञ्च द्वैत को जानिये, अंक घटावहु आठ।। ६९०

कोऊ तन का चोर है, कोऊ मन का चोर।
चोर चोर घन घोर जग, पकड़हु माखन चोर।। ६९१

पद का मद नहिं कीजिये, मद पद दोनउ झूठ।
मनहु निरापद कीजिये, देवी कहत अनूठ।। ६९२

कर्ता धर्ता एक है, दूजा कर्ता नाह।
जेहि प्रभु कर्ता मानतइ, वे ही शाहंशाह।। ६९३

चिन्ता मन से त्यागिये, प्रभु चितवन भरपूर।
चिन्ता सब मिट जायेगी, सुख-शान्ति नहिं दूर।। ६९४

निर्विचार मन कीजिये, बिना विचारे ध्यान।
जाप मनहि मन कीजिये, रहहि रूप का ज्ञान।। ६९५

सत्य दृष्टि मन देखिये, कल्पित प्रभु का रूप।
धारण ध्यान समाधि से, जानहिं ब्रह्म स्वरूप।। ६९६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्प नाथ हो, कल्पना, हेतु देहु आधार।
तुम्हें चढ़ाता नित रहूँ, प्रेम पुष्प का हार।। ९९७

झूठ न जानइ साँच को, साँच न जानइ झूठ।
द्वैत परे हो जाइये, देवी वचन अनूठ।। ९९८

सोच विचार न कीजिये, मन को राखहि शान्त।
स्मृति में परमात्मा, मिट जाये दिग भ्रान्त।। ९९९

।। चौपाई ।।

चञ्चल चित चञ्चलता रोकी,
ते नर जानहु तत्व विलोकी। १०००

मंगल रूप अमंगल हारी,
नाम लेत प्रभु पातक हारी। १००१

कोटि सूर्य सम ओ३म् प्रकाशा,
ब्रह्म स्वरूप करहिं तम नाशा। १००२

सूरति रत मन मोरहु कीजै,
राम चरण चितवहुं चित दीजै। १००३

।। दोहा ।।

अशुभ कर्म शुभ त्यागिये, फल की करइ न आस।
चित्त निरोधहिं कीजिये, मन लेवहु सन्यास।। १००४

नयन खुले या बन्द हों, चित्त चढ़हिं चित चोर।
चरण शरण में राखिये, चितवहु नन्द किशोर।। १००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तःकरण चतुष्ट में, चित की चाल कुचाल।
नाहिं सम्हारहिं चित्त को, सोइ परइ भव जाल।। १००६

चित्त निरोधहि चार से, काम क्रोध मद लोभ।
इनके साधे साधना, मिट जाये मन क्षोभ।। १००७

स्वप्न सुषुप्ति जागृती, चित्त अवस्था तीन।
तीन घटावे तीन से, तुरिया सिद्ध प्रवीन।। १००८

सुस्मृति चित की साधना, प्राण वायु को रोक।
घिर सुस्थिर मन जाय से, होवहिं जीव अशोक।। १००६

चेतन चित्त में धारिये, सद् चित घन आनन्द।
तबहिं जीव को जानिये, पावहिं परमानन्द।। १०१०

जड़ समाधि को त्यागिये, सहज समाधी ठीक।
शान्त चित्त से ध्यान हो, प्रभु लागहिं बहु नीक।। १०११

चित्त वृत्ति सद्रूप हो, इन्द्रिय मन से ध्यान।
निश-दिन सुमिरण कीजिये, मिल जायें भगवान।। १०१२

कलि महु सांचो एक है, जो मन उपजइ राम।
चित महु चिन्तन एक रस, निश दिन सुमिरहि नाम।। १०१३

राम चरण चित लाइये, चिन्ता दीजे त्याग।
चिन्ता ज़िन्दा जारती, मुर्दा जारइ आग।। १०१४

कामहि कंचन चित्त से, साधक देहु उतार।
तभी राम को जानिये, कर देवहिं भव पार।। १०१५

चित्त चरण की ओर हो, मनहि रूप का ध्यान।
माया दूर हटाइये, मिट जाये अज्ञान।। १०१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्त निरोधहि कीजिये, पुनि कहिये मै तोर।
माया काया और मैं, लेहु समर्पण मोर।। १०१७

चित्रण चित्रित कीजिये, चित्र बसहि चित माहिं।
अविरल सुमिरन नाम का, जग विसरहि प्रभु आहिं।। १०१८

चित से चिन्तन कीजिये, हिय में रमा निवास।
मन में करिये नाम जप, जव तक तन में श्वास।। १०१९

जागृति स्वप्न सुषुप्ति की, लखहि अवस्था तीन।
स्वप्न सुषुप्तिाहे त्यागि के, जागृति प्रभु आधीन।। १०२०

जग की चिन्ता छाड़ि के, एकइ चिन्ता होय।
भक्त रहे भगवान जग, और न जग महुं खोय।। १०२१

।। चौपाई ।।

सुर से अधिक मनुज बड़ भागी,
राम चरण रति जेमन जागी। १०२२

नाम रूप धारे मन एका,
शुद्ध प्रेम प्रभु देहु बिबेका। १०२३

माया वश जे नर नहि मोहा,
राम चरण पंकज उर सोहा। १०२४

ज्ञान बिराग न जप तप जोगू,
सुमिरि राम नाशहि सब रोगू। १०२५

।। दोहा ।।

मैं मूरख मति मन्द अति, बुद्धि न मोरे पास।
तुमहिं बुद्धि दातार हो, पुरवहु मोरी आस।। १०२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार गया सब यतन कर, प्रभु नहिं रीझे मोर।
तुमहि कृपा करि दीजिये, चरनन लागहि डोर।। १०२७

थिर को सुस्थिर कीजिये, परा शक्ति की ओट।
पुनि पुनि भूमि न आयेगा, मिट जावहि् मन खोट।। १०२८

अंधे को अंधा मिले, राह बतावे कौन।
नयनोवाला देख के, बैठ रहा जग मौन।। १०२९

अगुणहि सगुणहि ब्रह्म दो, इक अण्डी इक रूख।
रूख रसहि को देत हैं, अण्डी का रस सूख।। १०३०

लखते हो संसार को, हम को लखते नाहिं।
अलख निरन्जन लख परो, तुमहिं छाड़ि कँह जाहिं।। १०३१

अपने करे न होय कछु, तुमहि करो सो होय।
अब काहें कछु हम करीं, कर्म समर्पण तोय।। १०३२

नकल अकल से कीजिये, सद्गुण अंगीकार।
दुर्गुण दूर भगाइये, ज्यों सूपा की धार।। १०३३

श्रद्धा सुमन चढ़ाई के, अर्पण कीजै प्रेम।
कोटि जनम का पातकी, राम करहिं सब क्षेम।। १०३४

अपर्ण ऐसा चाहिये, बिल्ली बच्चा केर।
माई को ही जानते, माँ ओ माँ ओ टेर।। १०३५

अर्पण अर्पण सब कहें, अर्पण करे न कोय।
जो भी अर्पण करत हैं, प्रभू समर्पण होय।। १०३६

नहिं पूजा नहिं पाठ बल, योग भक्ति नहिं ज्ञान।
आप हमारा ध्यान धरि, कृपा सिन्धु भगवान।। १०३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बिनय है आपसे, सुनहु मोर सरकार।
अपने हारे हार है, राम कृपा नहिं हार।। १०३८

दाता केवल राम हैं, देते हैं दिन रैन।
मन मूरख लेता नहीं, रहता है बेचैन।। १०३७

भोजन निश दिन कीजिये, आतम भूख मिटाय।
बाहर थैली चाम की, भरे न स्वर्गहि जाय।। १०४०

साधुन भोजन के निमित, घटे न घर आनाज।
कोषालय के कोष में, दिन दिन बाढ़इ ब्याज।। १०४१

धोखा खावहि आप भल, और न धोखा देय।
धोखा से धोखा मिले, धोखा मोल न लेय।। १०४२

क्षमा दान सम दान नहिं, पर जीवहिं उपकार।
पार ब्रह्म को पाइये, भजहु सगुण साकार।। १०४३

।। चौपाई ।।

पंकज कीचहिं सर मंह सोहा,
ज्ञान पाइ जस नर नहिं मोहा। १०४४

सत्य वचन मन निर्मल काया,
पर उपकार जीव पर दाया। १०४५

मानुष तन साधन सत्कर्मा,
मूढ़ प्रवृति नर चलहि न धर्मा। १०४६

बहु बड़ पातक जीवहिं मारे,
ब्रह्म अंश जीवहिं जग सारे। १०४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

त्रिगुण रहित सत् जानिये, कीजे अंगीकार।
नामहि रूप अनन्त है, निगुर्ण भा साकार।। १०४८

एकहि के बहु रूप हैं, रूप अरुपहि देख।
रूप भेद नहिं मानिये, देवि प्रसादहिं लेख।। १०४६

सगुण रूप में गुण नहीं, निर्गुण में गुण एक।
निराकार साकार हो, धारइ रूप अनेक।। १०५०

सत रज तम से दूर हो, माया के उस पार।
परमानन्दीनन्द में, त्रिगुण सत्य जग सार।। १०५१

श्वासा में हरि नाम हो, वाणी करे उचार।
चिन्तन चित सो कीजिये, मन से करहु विचार।। १०५२

कागा वकुला हंस जग, त्रिगुणमयी है रूप।
जो जाके वश होत है, फल ताके अनरूप।। १०५३

जाके मन इस जगत में, चढ़ा हुआ बहुरंग।
ताको ऐसा मानिये, सदा रहत चितभंग।। १०५४

मन के असत विचार तज, मन के झूठे कर्म।
वाणी से सत् बोलिये, दया जीव पर धर्म।। १०५५

प्रेम जीव से कीजिये, मीठे बोलहिं बोल।
सत कर्महि को कीजिये, आपन मनहि टटोल।। १०५६

अपने हित में हित नहीं, परहित में हित होय।
निश दिन परहित कीजिये, अपने हित को खोय।। १०५७

होय बुद्धि विपरीत जब, असत होंहि सब कर्म।
मन के असत् विचार से, सूझहिं जीव न धर्म।। १०५८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूठ कपट छल छाड़िये, छाड़हि असत् विचार।
काम क्रोध मद लोभ को, जान खड्ग की धार।। १०५६

जीव बधन नहिं कीजिये, अवध बिहारी वास।
अस विचारि रे जीव तू, जीव न देवहु त्रास।। १०६०

मानव जगत पिशाच बहु, करहिं दानवी कर्म।
कलि प्रभाव के कारणे, भूल गयउ सब धर्म। १०६१

पर जीवहिं दुख देइ जे, निज दुख खोलइ द्वार।
सुख की कोरी कल्पना, पावहिं क्लेश अपार।। १०६२

असत् कर्म को जानिये, जैसे ताड़ खजूर।
ना जाने गिर जाय कब, होवहिं चकनाचूर।। १०६३

जड़ बुद्धि चेतन भयो, चेतन जड़हि समान।
जीव कर्म को देखि के, फल देते भगवान।। १०६४

रोग भोग के जाल में, लिपटा मनुज शरीर।
राम नाम मन लीजिये, मिटे सकल भव पीर।। १०६५

।। चौपाई ।।

वेद पुराण सन्त मुनि भाखी,
कर्म अकर्म स्वरूपहिं साखी। १०६६

सत्य असत्य मिलन नहिं भाई,
जस कँचन लोहा बिलगाई। १०६७

मोह निशा छाई चहुँ ओरा,
ज्ञान उदय बिनु होहिं न भोरा। १०६८

षट बिकार अरि तनय विशेषी,
राम कृपा बिन जाइ न देखी।। १०६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

नैन पाय नहिं देखता, सुनहिं न पाये कान।
वाणि पाय नहिं बोलता, प्रभु नामहिं विज्ञान।। १०७०

वृथा न वाणी बोलता, रत रहता दिन रैन।
ताही को व्रत जानिये, रामहि बोले बैन।। १०७१

निश दिन वाणी बोलिये, राम नाम के बोल।
हरि-चर्चा को छाड़ि के, मुख नहिं आपन खोल।। १०७२

काम न जाने राम को, क्रोध न जाने बोध।
लोभ न जाने क्षोभ को, मोह न जाने शोध।। १०७३

चिन्ता कीजै चार की, लोभ क्रोध मद काम।
इनसे जीव न बाचिहें, बिना कृपा श्री राम।। १०७४

ज्ञान कृपाण न काटती, जड़ बुद्धिहिं पाषाण।
अमृत काम न आयेगा, निकल गये हों प्राण।। १०७५

भक्ति मिलहिं आसक्ति से, शक्ति ब्रह्म का बोध।
दे अनुरक्ति विरक्ति को, आत्म शक्ति को शोध।।१०७६

दृढ़ निश्चय विश्वास दृढ़, सुमिरन दृढ़ संकल्प।
बिन दृढ़ता नहिं आत्म बल, दृढ़ नहिं और विकल्प।।१०७७

आप न जानहिं आपको, सो नहिं जानहि बाप।
जो जानहिं जग बाप को, जीव मिटहि संताप।। १०७८

दृढ़ निश्चय कर लीजिये, निश्चय हैं भगवान।
अपना निश्चय त्यागि के, प्रभु का निश्चय मान।। १०७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का तोरा का मोर है, का मोरा का तोर।
तोर मोर के फेर में, तोर रहा नहिं मोर।। १०८०

अन्तर्मुख अन्तर्जगत, बहिर्मुखी जग केर।
पार ब्रह्म को पाइये, अन्तर्घट से टेर।। १०८१

बिरह प्रेम दुख कामना, सगुण रूप गुण ज्ञान।
निर्गुण ज्योति बिलोकिये, मिट जाये अज्ञान।। १०८२

बृक्षहिं चेतन जानिये, जड़ जानहि जड़ जान।
तत्व दृष्टि से देखिये, वास करहिं भगवान।। १०८३

अखिल विश्व की आतमा, अखिलेश्वर प्रभुनाम।
सब जीवों में देखिये, घट घट वासी राम।। १०८४

काहू ज्ञान न दीजिये, निज स्वरूप नहिं ज्ञान।
जड़ चेतन में देखिये, ज्ञान पुरित विज्ञान।। १०८५

विषय न छूटे वासना, नहि जग के जंजाल।
विनय राम से कीजिये, होवहिं कबहुँ कृपाल।। १०८६

छोड़त छोड़त जुग गया, छोड़ सका ना कोय।
बन्द करहु सब छोड़ना, राम पकड़ हिय दोय।। १०८७

।। चौपाई ।।

एकइ ब्रह्म भयउ बहु रूपा,
सगुण रूप महि चरित अनूपा। १०८८

जाके मन संसारहि अन्ता,
ताको जानहु जग महु सन्ता। १०८९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानी जन कहु अस विश्वासा,
जड़ चेतन महि ब्रह्म निवासा। १०६०

भूसुर असुर भेद जग माहीं,
असत दनुज सत देवहिं जाहीं। १०६१

।। दोहा ।।

प्रभुहिं शरण में जाइये, कर्म समय पर युक्ति।
तबहिं जीव को जानिये, मिलहिं जगत से मुक्ति।।१०६२

मैं दुर्गुण की खान हूँ, प्रभु सद्‌गुण की खान।
दुर्गुण मोर हटाइये, मैं बालक नादान।। १०६३

सकल वस्तु अरु देह भी, सब कुछ जग महुं तोर।
सबहि समर्पण कर दिया, प्रभु का प्रभु की ओर। १०६४

मै पापी पापातमा, पाप राशि यह देह।
जो कुछ हूँ प्रभु आपका, देवहु मोहि सनेह।। १०६५

रूखे सूखे भोग का, लगा भोग भगवान।
तेरा तुझको दे दिया मेरा ना कुछ जान।। १०६६

श्रद्धा बिना विश्वास नहिं, बिनु विश्वास न भक्ति।
त्रिगुण सत्य पहचानिये, जागहिं आतम शक्ति।। १०६७

ज्ञान भक्ति दोनो मिले, गुरु चरन चित दिन्ह।
लेते सुख संसार मा, ईश्वर वश करि लिन्ह।। १०६८

गुरु चरनन की धूलि से, शुद्ध बुद्धि अरु ज्ञान।
परम प्रीति मन राखिये, मिट जाये अज्ञान।। १०६६

गुरु जीव नहिं होत हैं, गुरु भक्तों के भाव।
जाकी जैसी भावना, ताकी तैसी नांव।। ११००

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु निन्दक अघ खानि नर, कबहु न पावहिं शान्ति।
भूल जाहिं निज रूप को, फंसि माया की भ्रान्ति।। ११०१

अर्थ धर्म अरु काम जग, मोक्ष देहि गुरु ज्ञान।
गुरु ब्रह्म सम जानिये, निज कर्मों को छान।। ११०२

गुरु चरणों में प्रीति हो, श्रद्धा अरु विश्वास।
सोई नर को जानिये, पार ब्रह्म के पास।। ११०३

शिव विरंचि हरि देव गुरु, सब देवन के देव।
जीव ब्रह्म सम होंहि जब, चरण पादुका सेव।। ११०४

गुरू गुरू सब कहत हैं, चेला कहे न कोय।
जो भी चेला कहत है, चेला से गुरु होय।। ११०५

गुरुवर गुरुवर कह दिया, वरण किया ना कोय।
वरण किया पाया गुरू, चरण शरण में होय।। ११०६

आप हमारी नाव हैं, आप हमारी ठांव।
गुरु शरण मोहि दीजिये, वही हमारा गाँव।। ११०७

निज स्वरूप को जानिये, पुनि गुरु को पहचान।
आत्म समर्पण कीजिये, जानि गुरू का ज्ञान।। ११०८

गुरुवर मेरे आप हैं, आप बसे मन आप।
आप आप से आ मिले, आप मिटहिं संताप।। ११०६

।। चौपाई ।।

ब्रह्म शक्ति मानहु दोउ एका,
नामहिं रूप अनन्त अनेका। १११०

ज्ञान प्रकाश प्रकाशक रामू,
भजहु निरन्तर मन महुँ नामू। ११११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञान अरूप भगति सा रूपा,
भक्त प्रेम रस पाय अनूपा। १११२

भक्त हेतु प्रकटे बहु काला,
ऋषि मुनि जन सब भयउ निहाला। १११३

।। दोहा ।।

कहि के भूत भविष्य की, साधू मांगे भीख।
वर्तमान निज देख ले, कुछ तो लेवइ सीख।। १११४

भूत काल मत सोचिये, भविष न जाने कोय।
वर्तमान भजते रहो, प्रभु के सन्मुख होय।। १११५

दुर्बुद्धि उपजि कुसंग से, सद्‌बुद्धि साधू संग।
राम नाम के जाप से, माया भिदय न अंग।। १११६

दसों दिशा में राज हो, दक्ष इन्द्रीय वश होय।
तन रूपी रथ बैठिया, जानिय दशरथ सोय।। १११७

मैं त्रिशंकु सम जीव हूँ, लटक रहा आकाश।
आवहु प्रभू वचाइये, देकर दिव्य प्रकाश।। १११८

योग भक्ति नहि ज्ञान बल, जप तप नाहीं पाठ।
जैसा हूँ प्रभु आपका, खोलहू मोरी गांठ।। १११६

माया वश जड़ बुद्धि में, कबहु न आवइ होश।
जग को मनुज बिसारि के, भजिले आशूतोष।। ११२०

कण कण जोड़ि पिपीलिका, रस के बूँद मछोह।
दो पर काहि न जोड़ता, जोड़े बिना बिछोह।। ११२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्कर्मों के पंथ में, चलते सबल सपूत।
असत मार्ग पर जो चले, भूतल भार कपूत।। ११२२

आपन बुरा न देखते, और देखि मन लाय।
देवी ऐसे मनुज को, सद्बुद्धिहि नहिं आय।। ११२३

मनसा वाचा कर्मणा, कर्म करहि सब झूठ।
ऐसे नर को जानिये, जिमि बृक्षन में ठूंठ।। ११२४

काम क्रोध मद लोभ का, जब लौं तन में वास।
तब लौं नर को जानिये, करहिं न राम निवास।। ११२५

जीवहि मन जो वासना, जल्द न होवहिं दूर।
मदहारी के भजन बिनु, मद होवइ नहिं चूर।। ११२६

अंधकार में देखिये, जुगुनू उड़त अकाश।
बिना उदय रवि चन्द्र के, जग नहि होत प्रकाश।।११२७

नाम प्रभुहिं भज लीजिये, नामी रूप अनेक।
जाकी जैसी भावना, वाको वैसा एक।। ११२८

अतुलित महिमा भक्त की, प्रभु लीन्हे अवतार।
बार बार जग आइके, गहत भक्त का भार।। ११२६

कहत अजन्मा आपको, जन्महिं बारम्बार।
भक्त हेतु आते सदा, करते हैं उद्धार।। ११३०

परिक्रमा कर एक की, जैसे कीन्हि गणेश।
अग्र पूज्य तिहु लोक फिरि, आये चरण महेश।। ११३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारदा सागर

– प्रसंग सूची –

प्रसंग		संख्या चौपाई, दोहा
९६.	भक्ति, षड्विकार शमन, सगुण ब्रह्म भक्त वत्सलता।	११३२-११३३
९७.	आस्था अनुराग भक्ति मुक्ति, भक्ति तत्व भक्ति भक्त भगवान, संत भक्ति, ज्ञान और भक्ति, माया और भक्ति, अघोर तत्व, भजन मन, बुद्धि आचरण, शुद्धाभक्ति ज्ञानमय भक्ति	११३४-११५३
९८.	भक्त पर प्रभुकृपा, चौरासी से मुक्ति	११५४-११५७
९९.	भक्ति में प्रेम तत्व, योग तत्व, भक्ति दाता ईश्वर	११५८-११७५
१००.	प्रभु पद प्रीति की याचना, कृपा की याचना, शरण	११७६-११७९
१०१.	ज्ञान व योग मार्ग पुरुषार्थ भक्ति शरणागति नाम जप, कर्तापन का त्याग, योग समर्पण सुबुद्धि और सतकर्म अनन्त भक्ति, प्रभू का भरोसा प्रेम भक्ति तत्व दाता और गुण।	११८०-११९७
१०२.	भक्ति, कर्तापन का त्याग, आचरण और प्रभुकृपा	११९८-१२०२
१०३.	माया भेद कामना, परोपकारी भाव आत्म ज्ञान ध्यान ईश्वरेच्छा भक्ति का समर्पण प्रभु सेवा आध्यात्म की गहराई, मंगलरूप राम शरणागति समर्पण और निष्कामता	१२०३-१२१९
१०४.	पुरुषार्थ और कृपा, विवेक ख्याति प्रभु स्नेह निर्गुण सगुण प्रेमाभक्ति और प्रभु का	१२२०-१२२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रगटीकरण

१०५. धर्माचरण महात्म्य, कृपा की याचना, आत्मदोष निष्काम प्रेम, सगुण प्रेमा भक्ति गुरुवाणी महात्म्य, बैधी भक्ति, गुरु ईश्वर तुल्यता गुरु भक्ति भाव भक्ति और गुरु भगवान आस्था भक्ति — १२२४-१२४१

१०६. प्रेम भक्ति, दीन भाव, प्रभु महिमा — १२४२-१२४५

१०७. मन का ईश्वरोन्मुख होना, साधना, प्रज्ञा कर्तापन जड़ चेतन का ज्ञान, समतत्व योग नियति की स्वीकृति ज्ञान योग कालगति प्रभुकृपा कर्म त्याग, समर्पण, प्रवृत्तियां और परमहंस से आत्मज्ञान, स्वामी तत्व — १२४६-१२६३

१०८. ईश्वर और निर्भरता, माया, साधक का पतन — १२६४-१२६७

१०६. स्वामी, दरता, सेवक और स्वामी प्रेम राम नाम धूनी, भक्ति, ईश्वर निर्भरता प्रभु की भक्ति वातसल्य — १२६८-१२८५

११०. राम चरित मानस कथा, तत्व महात्म — १२८६-१२६७

१११. जगत और संसार याचना भरोसा शरीर की शोभा सुकर्म तप सदाचार आत्मबोध ब्रह्म बोध, ब्राह्मी गति दृष्टि, सात चक्र बल की याचना योगी और पुरुषार्थ, संत — १२६८-१३१५

११२. त्यागी, वैरागी, साधना, मुनि, औघड़ अवधूत भजन सुमिरन और साधु — १३१६-१३२७

११३. साधक साधक साधु सधुता आचरण प्रभु कृपा विनय — १३२८-१३४५

११४. कलयुग और संत समाज, संसारी, — १३४६-१३६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काकवृत्ति, ईश्वर की आड़ में संसारी
वृत्ति दुष्ट आचरण दुष्टता असंत महिमा
सत्य आचरण शुभगति
११५. सुख दुख और सुमिरन, ज्ञान की महिमा १३६४-१३६५
११६. राम नाम सुमिरन भजन प्रभु की भक्ति १३६६-१३६६
११७. चार धाम, तीर्थराज, प्रभु नाम तरणी, १३७०-१३८७
सार-असार सुमिरन भजन आनन्द, चाह,
सच्चा सुख प्रेम
११८. प्रेम और भक्ति विह्वलता १३८८-१३६१
११६. मन-मालिन्य प्रेम भक्ति प्रेरणा प्रेम तत्व १३६२-१४०६
सर्वोपरि जागतिक प्रेम और प्रभु प्रेम विरह
वेदना, प्रेम ब्रह्म प्रेम प्रभु साक्षात्कार का साधन
१२०. जप तप भजन सुमिरन मैं प्रेम की भूमिका, १४१०-१४१३
प्रेम व सगुण भक्ति।
१२१. ज्ञानी योगी और प्रेमी, प्रेम का प्रभाव, प्रेम १४१४-१४३१
विवश भगवान, अनन्य भाव, प्रेम समस्त
परिधियों से परे प्रेम बिना सब शून्य प्रेम और
वाणी संयम प्रेम और शरणागति प्रेम कृपा
१२२. संसार और जीवन का सत्य, माया और १४३२-१४४६
प्रभु कृपा, मन की चंचलता और फल
कर्म विधान प्रभु प्रेम सर्वोपरि प्रेम तत्व
और भक्ति ज्ञान ध्यान भजन सुमिरन
पूजा पाठ और प्रेम।
१२३. प्रेम दरश, प्रेम-सगुण रूप, प्रेमी, प्रेम १४५०-१४६७
और सगुण भक्ति में प्रेम का प्रभाव
१२४. ब्रह्म का प्रकटीकरण, ब्रह्म का चरित १४६८-१४८५
अवूझ पहेली सीता का व्यवहारिक त्याग,
दीनों से प्रेम माता पिता व गुरु की महत्ता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेम याचना, अनन्यता राम नाम महामन्त्र,
कामना युक्त मन कर्म धन

१२५. प्रेम और विरह समाधि, शोक, मोह और ज्ञान प्रेमी प्रेमास्पद और प्रेम। ज्ञान व योग निष्ठा में प्रेम तत्व, प्रेम जप, प्रेम ब्रह्म। (कुण्डली) १४८६-१५०३

१२६. व्रत उपवास, आत्माभिमानी, विमुख भाव १५०४-१५०७

१२७. परम लक्ष्य, रामकथा रहस्य और सन्त ध्यान सिद्धि रचनाकार का निवेदन, शारदा सागर, समर्पण शरणागति १५०८-१५२५

१२८. सतसंग से प्रेमाभक्ति की प्राप्ति शास्त्रों के प्रति आस्था और अवगाहन का महत्व शास्त्रीय विधान और प्रेम, समस्त का १५२६-१५२६

१२६. योग भोग और ब्रह्म संयोग, संसारी और प्रभुप्रेमी क्षमा प्रार्थना, वर्तमान एक बहुमूल्य अवसर सत्य को जानना लक्ष्य, पूर्ण ब्रह्म की चाह, पूर्ण सत्य और उसका वोध सतसंग से सत के सत का अवगाहन मन का समर्पण आप का समर्पण, सन्त के चाह का रहस्य, प्रभु के लिये प्रचण्ड माया की स्वीकारोक्ति भी सहन है परन्तु अनासक्ति की याचना। संसार में मेरापन का आधार प्रभु होवें संसार को मेरा कहते संसारी हुआ प्रभु को मेरा कहते प्रभु का रहना। परम भातव की साधना। गुरु, गुरुता और गुरुत्व पद। १५३०-१५४८

१३०. प्रातः कालीन आरती स्तुति वन्दन, श्री शारदा चालीसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ चौपाई ॥

माया झलक देखि मन मोहा,
भक्ति बिना नहिं जीवहिं सोहा। ११३२

महा रथी षड् रिपु संसारा,
भक्ति शक्ति बिनु जाहि न मारा। ११३३

अवलोकी सब लोकन वारे,
भक्तन के जीवन रख वारे। ११३४

अगम अगोचर शास्त्र बरवाना,
भक्तन हित प्रकटे प्रभु जाना। ११३५

॥ दोहा ॥

आस्था बिनु अनुराग नहिं, बिन अनुराग न भक्ति।
भक्ति बिना भव धार मे, जीव न पावहिं मुक्ति।। ११३६

भक्ती ऐसी कीजिए, भक्त मिलइ भगवन्त।
वाणी देवि प्रसाद की, जो मानहिं सो सन्त ११३७

प्रभु को धारण कीजिये, हो जाओगे धन्य।
भक्ति भक्त भगवान का, जानहु रूप अभिन्य।। ११३८

डाकू चोर लुटेर में, मांग खाय सो संत।
चतुर भक्त अव लोकिये, मंगन भक्ति अनंत।। ११३६

बाह्य ज्ञान कुछ और है, तत्व ज्ञान कुछ और।
ऐसी भक्ति कीजिये, जीव मिले जिमि ठौर।। ११४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सागर से सरिता भली, जो नहिं सूखइ धूप।
बाह्य ज्ञान भगती भली, छूट जाय भव कूप।। ११४१

माया भक्ति बिरोध है, कबहुँ न होवहिं साथ।
भक्ति साथ कर लीजिये, माया होय अनाथ।। ११४२

औघड़ के घड़ साइयाँ, साघन घोर अघोर।
भक्ति साधना जानिये, आप राखि मन बोर।। ११४३

समझ समझ का फेर है, कुछ नहिं समझे आप।
आप आप को जानिये, समुझ परहि संताप।। ११४४

आज नहीं कल जायेगें, राजा रंक फकीर।
भगती ऐसी कीजिये, मीरा तुलसि कबीर।। ११४५

जाकी स्थिर बुद्धि हो, अरु निर्मल मन कीन्ह।
ताको निश्चय जानिये, भक्ति राम ने दीन्ह।। ११४६

भगती ऐसी कीजिये, मिले भगत भगवन्त।
मानव तन को पाइके, व्यर्थ न होवइ अन्त।। ११४७

ऐसी करनी कीजिये, जीव न पावइ त्राण।
मुकुती पावहि भक्ति से, वेदहि शास्त्र प्रमाण।। ११४८

मनुज रूप को जानिये, देवन से बड़ आज।
भक्ती ऐसी कीजिये, नहिं आवइ यमराज।। ११४९

ज्ञान योग के पंथ में, भक्ति हुयी सरताज।
रूप सगुण सिय राम का, हिय में आन विराज।। ११५०

अधम भक्ति माया बसे, मध्यम दो के बीच।
उत्तम तम से दूर है, कमल रहत जस कीच।। ११५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुख की कोरी कल्पना, दुख मय सकल शरीर।
भक्ति बिना नहिं जायगी, मनुज देह की पीर।। ११५२

मनुज देह को पाइ के, भज लो सीता राम।
अन्त समय नहिं आयेगी, माया कवनेउ काम।। ११५३

।। चौपाई ।।

जीवन मरण खेल प्रभु केरा,
भक्ति भाव चौरासि न फेरा। ११५४

भक्ति प्रभाव न जाइन जेऊ,
अमृत छाड़ि विषहिं ते लेऊ। ११५५

भक्तिहीन नर दुख जग पावा,
अन्तकाल कीन्हिसि पछतावा। ११५६

को कहि सकइ कृपा प्रभु केरी,
भक्त हेतु नहि लावहिं देरी। ११५७

।। दोहा ।।

भक्ति भक्ति सबही कहें, भक्ति न जाने कोय।
जो जन जाने भक्ति को, भक्ति प्रेम रस खोय।। ११५८

भगती रस सम रस नहीं, पीते चतुर सुजान।
राम रसायन पी गये, महावीर हनुमान।। ११५९

मैं निर्बल बलराम तुम, सारे बल के धाम।
भक्ति योग बल दीजिये, बड़ा आपका नाम।। ११६०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी अपनी राह से, चलत जगत के लोग।
बिना दिये रघु नाथ के, मिलइ न भक्ति सुयोग।। ११६१

मनहि बसत हैं वासना, तन महु जग को काम।
भक्ति बिना नहिं जीव को, कबहु मिलहि विश्राम।। ११६२

मलि मलि धोवहि देह को, मन का मैल न धोय।
भक्ति साबुना जो मले, मन नहि मैला होय।। ११६३

दुख सोषहि नर देह को, चिनता सोषहिं खून।
सोषहिं अवद्या भक्ति को, भक्ति बिना सब सून।। ११६४

इच्छाओं की कण्टिका, चुभती सकल शरीर।
भक्ति बिना नहिं जायेगी, मानव तन की पीर।।११६५

वेद शास्त्र सतसंग की, महिमा कहत अनन्त।
मायावी नहिं जानते, जानहिं केवल संत।। ११६६

अगणित सम्पति हो भले, अरु जगती में राज।
भक्ति शून्यता रोग बड़, जस मानुष तनखाज।। ११६७

झूठे जग की राह में, तन मन सकल शरीर।
भक्ति बिना नहिं छूटिहें, माया की जंजीर।। ११६८

एकादश भक्ति है गुरु चरण, दूजे साधू संग।
तीजे सुनबे हरि कथा, चौथे मांन अभंग।। ११६६

पंचम हरि गुन गाइये, छाड़ि कपट जंजाल।
मन्त्र जपे विश्वास से, जीत सकहि नरकाल।। ११७०

षड्-विकार को त्यागिये, कीजे वेद प्रकाश।
शील निरत सत्कर्म से, हो जाओ प्रभु पास।। ११७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम प्रभुमय देख जग, और जगत कुछ नाहिं।
संत शरण में जाइये, माया को बिसराहिं।। ११७२

हानि लाभ नहिं व्यापते, अष्टम् है संतोष।
अपने गुण अवगुण लखे, परिजन देहु न दोष।। ११७३

नवम् भक्ति इक राम की, सदा करे विश्वास।
तब लगि नाम न छाड़िये, जब लगि घट में श्वांस।। ११७४

अपने इन्द्रिय दमन को, दशम भक्ति जग जान।
एकादश मन मारिके, आतम को पहचान।। ११७५

।। चौपाई ।।

मोरे मन इच्छा प्रभु जागी,
बन वउ मोहिं चरण अनुरागी। ११७६

तुम बिन कोउ न मम संसारा,
अब प्रभु आन करहु भव पारा। ११७७

नहिं जानउ कछु बिधि कर रीती,
केहि बिधि होई प्रभु सन प्रीती। ११७८

कृपा करहिं प्रभु कृपा निकेता,
शरणागत जन विनय समेता। ११७९

।। दोहा ।।

ज्ञानी ध्यानी शूरमा, विजय श्री को पाय।
भक्त शिरोमणि जानिये, प्रभु चरनन लिपटाय।। ११८०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

दया प्रभू की चाहिये, रगड़ नाम जप होय।
शरणागत हो जाइये, नारायण में खोय।। ११८१

क्रिया कर्म को जानिये, सब कर्ता के हाथ,
अपना कर्ता छाड़ि दे, कर्ता दीना नाथ।। ११८२

काह कहूँ प्रभु आपको, हरते हो सब पाप।
आप आपसे जो मिले, मिट जाये संताप।। ११८३

तन मन धन सब राम का, ऐसा मन महुं मान।
राजस तामस सात्विकी, करहु समर्पण जान।। ११८४

मैं अबोध प्रभु बोधमय, मोहिं करावहु बोध।
षड्विकार को दूर कर, मोरे मन को शोध।। ११८५

ज्ञान भक्ति नहिं योगबल, मै मूरख अन्जान।
भूल रहा अभिमान वश, कृपा करहु भगवान।। ११८६

मोसम अधम न पातकी, कोउ न जग महु आन।
कृपा अकारण कीजिये, कृपा सिंधु भगवान।। ११८७

मैं पामर अति दीन हूँ, काम क्रोध की खान।
कारण रहित दयालु हो, कृपा सिंधु भगवान।। ११८८

विनय प्रेम के पाश में, बँध जाते भगवान।
जग का बन्धन छाड़ि दे, मन मूरख नादान।। ११८९

विकृत बुद्धि सुकृति नहीं, सुकृति बिना सतकर्म।
सत्य जीव नर लक्ष्य च्युत, नहीं जानता धर्म।। ११९०

दृढ़ निश्चय करि लीजिये, भगती होय अनन्य।
जग को देखहि ब्रह्म मय, सोइ मानुष जग धन्य।। ११९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

आशा प्रभु की कीजिये, और न कीजै आ[illegible]।
जाकी ऐसी भावना, सो नहिं होत निराश[illegible]। ११६२

सारे जग को भूलिये, रामहि क[illegible]हिं भूल।
भक्ति भाव से जाइये, लीजै चरन[illegible] धूल।। ११६३

लाल बिहारी पाइके, चरनन परिये [illegible]
नर नारी सब देखि के, नयन नीर भरिआ[illegible] ११६४

चरणामृत के पान से, मन महि भ[illegible] आनन्द।
निरत निरन्तर राम कह, जो हैं द[illegible]नन्द।। ११६५

दाता सबके राम हैं, देते हैं भर[illegible]
कोई प्रभु के पास है, कोई प्रभु से दूर[illegible] ११६६

दाता के जग तीन गुण, देवहिं या [illegible]हिं देय।
दे करिके जड़ जीव से, पुनि वापस ल[illegible]लेय।। ११६७

।। चौपाई ।।

भक्त न व्यापहि राहू केता,
कृपा करहि जब कृपा निकेता।। ११६८

कर्तापन त्यागहिं नर सोई,
जाके भक्ति हृदय मँ[illegible] होई। ११६६

वेद पुराण शास्त्र बहु भाषी
तन माया प्रभु संग मन राखी। १२००

मनसा जाप करहिं दिन राती,
मिलइ कृपा प्रभु की यहि भांती। १२०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यश अपयश अरु कीर्ति में, सदा रहे लव लीन।
ताको जग में जानिये, भक्ति भाव से हीन।। १२०२

।। दोहा ।।

मोर मोर के फेर में, माया लेवहिं घेर।
मोर मोर को छाड़ि के, तोर तोर की टेर।। १२०३

करहि काम ना सुखहि सब, निज सुख चाहसि होय।
औरन को सुख दीजिये, दुख नहिं व्यापहिं तोय।। १२०४

मानापमान न मानिये, भय चिन्ता से दूर।
अभिमानहु को त्यागिये, आत्म सुखहि भरपूर।। १२०५

आँख होत नर अन्ध है, देखइ नाहिं स्वरूप।
रूप अरूपहिं जानिये, छूट जाय भव कूप।। १२०६

नित्यानन्दी एक है, बाकी सबहि अनित्य।
नित्य राम के रूप को, धारइ अपने चित्त।। १२०७

एक देव को छाड़ि के, करइ और विश्वास।
वाही नर को जानिये, होंहि न प्रभु के पास।। १२०८

को जाने प्रभु रामगति, जब चाहा जस कीन।
रावण को परलोक गति, राज्य विभीषन दीन।। १२०६

भक्त और भगवान की, गति नहिं जाने कोय।
जो जन जाने रामगति, कबहुँ न दुर्गति होय।। १२१०

अपनी गति से गति नहीं, केवल दुर्गति मान।
शरणागत श्री राम जो, ताकी सद्गति जान।। १२११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

भक्त बड़ा भगवान से, भक्ति सुधा रस होय।
प्रभु का आपा राखि करि, आपन आया खोय।। १२१२

धिक धिक इस नर देह को, आवहि ना प्रभु काम।
तन से कीजे कर्म को, मन से लीजे नाम।। १२१३

भक्तिहि सागर डूबि के, मोती लेवहु बीन।
राम नाम के रत्न को, जानहि भक्त प्रवीन।। १२१४

जगत अमंगल रूप है, प्रभु मंगल का नाम।
गिरह अमंगल त्यागिये, मंगल भवनहि राम।। १२१५

चरण शरण की लालसा, बनी रहे दिन रैन।
तब ही मानव पायेगा, इस जीवन में चैन।। १२१६

भक्त जनन के भार को, सहते हैं भगवान।
पूर्ण समर्पण कीजिये, हो जाये निष्काम।। १२१७

माटी बने कुम्हार की, चाकहि पर चढ़ि जाय।
मन चाहा बन जायतो, जग में आन सुहाय।। १२१८

पूजा ऐसी कीजिये, मिट जाये अभिमान।
राम नाम को प्राण में, रहे न निज का मान।। १२१६

।। चौपाई ।।

पुरुषारथ नहिं साधन एकू,
बिनु हरि कृपा न पाय विवेकू। १२२०

बुद्धि विवेक सकल मनु देहा,
जागइ नहि बिनु राम सनेहा। १२२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्गुण एक सगुण बहु रूपा,
रूप धरिय महि चरित अनूपा। १२२२

अगम अगोचर गोचर जानी,
प्रेम भगतिमय होवहिं प्रानी। १२२३

।। दोहा ।।

पूजा करिये चार की, कर्म धर्म सत् ज्ञान।
कण कण वासी लख परे, लखते चतुर सुजान।।१२२४

याचक बन रघुनाथ का, मांग कृपा की भीख।
पुरुषारथ थकि जायेगा, गुरु वाणी कहु सीख।। १२२५

झोली फाटी आपनी, दाता दोष न देय।
फटी सिलाई के बिना, काही मा भरि लेय।। १२२६

मैं पामर अति नीच हूं, काम क्रोध की खान।
कारण रहित दयाल ढिग, आया हूँ भगवान।। १२२७

अपने बल का बल नहीं, निर्बल के बल राम।
चरण शरण में राखिे, देकर अपना धाम।। १२२८

होय न पूजा पाठ कछु, माया के बाजार।
तेरी मरजी गरज हो, मोहि करो भव पार।। १२२६

माया के सुख मैल हैं, उज्जवल गुरु का ज्ञान।
आसुरि सम्पति त्यागि के, लेहि भक्ति-विज्ञान।। १२३०

श्वांस चले प्रभु नाम से, ताको भगती नाम।
शरणागत हो जाइये, प्रेम करहु निष्काम। १२३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

इक देखइ नर एक को, दो मिलि हो गये चार।
द्वैत रूप लखि लीजिये, देवि बतावहिं सार।। १२३२

गुरू बचन को मानिके, कर्म करहिं अनुरूप।
सोई नर को जानिये, परहि न अस भव कूप।। १२३३

चन्दन बन्दन कीजिये, और चढ़ावहु फूल।
अगर धूप नित कीजिये, सगुण रूप नहि भूल।। १२३४

गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु हैं, गुरु महेश हिय जान।
गुरु भक्तों की भावना, प्रेम-भक्ति भगवान।। १२३५

भाव भजन भगती मिले, गुरुहि कृपा जो होय।
कंचन कामिनि त्यागि के, भक्ति प्रभू संग होय।।१२३६

गुरु पद पंकज धूलि का, भक्त मधुप रस लेत।
चहुँ दिशि लोक दिगन्तरा, भक्ति सुधा भरि देत।।१२३७

ब्रह्म गुरू जग भेद नहिं, जाके ऐसे भाव।
सो नर जग सर ताज है, चढ़े भक्ति की नाव।। १२३८

गुरु भक्तों की भावना, जो देखहिं जिस रूप।
प्रेमा भक्ती कीजिये, जानहिं ब्रह्म स्वरूप।। १२३९

गुरु शब्दों में ब्रह्म हैं, गुरु भक्तों के भाव।
बिना भाव गुरु ब्रह्म नहिं, जीव न पावइ ठाँव।। १२४०

नाहिं भगत भगवन्त बिनु, ज्यों चकोर बिनु चन्द।
त्यों गुरु ईश अधार बिनु, छूटइ ना भव फंन्द।। १२४१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

प्रेम भगति बिनु द्रवइ न रामू,
माया वश नहिं छूटइ कामू। १२४२

हे दशरथ के दशरथ नन्दन,
स्वासुर देवहु असुर निकन्दन। १२४३

मो सम पतित जगत को आना,
पतित पावनहि राम सुजाना। १२४४

अस जागइ जस तुलसी दासा,
सदा राम हिय करहिं निवासा। १२४५

।। दोहा ।।

गीता के उपदेश में, पाठ अष्टदश देख।
मानस वेदहि शास्त्र में, पुराण अठारह लेख।। १२४६

भाव जगहिं निज भवन में, भवन वास दस एक।
एक मिलावहिं एक में, देखहिं रूप अनेक।। १२४७

अटपट वाणी देवि की, जान सके नहिं कोय।
जो भी वाणी जानता, मै ली चादर धोय।। १२४८

दस इन्द्रिय मन साधना, साधक मनुज शरीर।
साध बिना नहिं साध्य प्रभु, जीव बंधे जंजीर।। १२४६

पकड़ो ना कुछ छोड़िये, प्रज्ञा स्थिति होय।
राम चरण चित राखिये, प्रभु चरणों में सोय।। १२५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

इक देखइ नर एक को, दो मिलि हो गये चार।
द्वैत रूप लखि लीजिये, देवि बतावहिं सार।। १२३२

गुरू बचन को मानिके, कर्म करहिं अनुरूप।
सोई नर को जानिये, परहि न अस भव कूप।। १२३३

चन्दन बन्दन कीजिये, और चढ़ावहु फूल।
अगर धूप नित कीजिये, सगुण रूप नहि भूल।। १२३४

गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु हैं, गुरु महेश हिय जान।
गुरु भक्तों की भावना, प्रेम-भक्ति भगवान।। १२३५

भाव भजन भगती मिले, गुरुहि कृपा जो होय।
कंचन कामिनि त्यागि के, भक्ति प्रभू संग होय।।१२३६

गुरु पद पंकज धूलि का, भक्त मधुप रस लेत।
चहुँ दिशि लोक दिगन्तरा, भक्ति सुधा भरि देत।।१२३७

ब्रह्म गुरू जग भेद नहिं, जाके ऐसे भाव।
सो नर जग सर ताज है, चढ़े भक्ति की नाव।। १२३८

गुरु भक्तों की भावना, जो देखहिं जिस रूप।
प्रेमा भक्ती कीजिये, जानहिं ब्रह्म स्वरूप।। १२३६

गुरु शब्दों में ब्रह्म हैं, गुरु भक्तों के भाव।
बिना भाव गुरु ब्रह्म नहिं, जीव न पावइ ठाँव।। १२४०

नाहिं भगत भगवन्त बिनु, ज्यों चकोर बिनु चन्द।
त्यों गुरु ईश अधार बिनु, छूटइ ना भव फन्द।। १२४१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant 2

।। चौपाई ।।

प्रेम भगति बिनु द्रवइ न रामू,
माया वश नहिं छूटइ कामू। १२४२

हे दशरथ के दशरथ नन्दन,
स्वासुर देवहु असुर निकन्दन। १२४३

मो सम पतित जगत को आना,
पतित पावनहि राम सुजाना। १२४४

अस जागइ जस तुलसी दासा,
सदा राम हिय करहिं निवासा। १२४५

।। दोहा ।।

गीता के उपदेश में, पाठ अष्टदश देख।
मानस वेदहि शास्त्र में, पुराण अठारह लेख।। १२४६

भाव जगहिं निज भवन में, भवन वास दस एक।
एक मिलावहिं एक में, देखहिं रूप अनेक।। १२४७

अटपट वाणी देवि की, जान सके नहिं कोय।
जो भी वाणी जानता, मै ली चादर धोय।। १२४८

दस इन्द्रिय मन साधना, साधक मनुज शरीर।
साध बिना नहिं साध्य प्रभु, जीव बंधे जंजीर।। १२४६

पकड़ो ना कुछ छोड़िये, प्रज्ञा स्थिति होय।
राम चरण चित राखिये, प्रभु चरणों में सोय।। १२५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

मैं कर्ता संसार में, है भारी अज्ञान।
निज कर्तापन छाड़ि के, प्रभु को कर्ता जान।। १२५१

अपना कहना छोड़ि के, सब कुछ प्रभु का जान।
नाश वान संसार में, जड़ चेतन पहिचान।। १२५२

समता योगहि राखहीं, निरत राम रत होय।
तन मन धन अर्पण करे, कर्तापन को खोय।। १२५३

मोरे हाथ न हार है, मोरे हाथ न जीत।
जैसा भी प्रभु जी करें, वैसी हो परितीत।। १२५४

का तोरा का मोर हैं, का मोरा का तोर।
तोर मोर के फेर में, मिलइ न वाको छोर।। १२५५

नीच न जाने ऊँच को, ऊँच न जानहि नीच।
ऊँच नीच के बीच से, मन को लेवइ खींच।। १२५६

भूत काल नहि सोचिये, वर्तमान है हाथ।
सत्कर्महि को कीजिये, राम तुम्हारे साथ।। १२५७

काँचन कामिनि क्या करे, जो सहाय रघुवीर।
काम क्रोध मद लोभ के, वाणहिं छूटे तीर।। १२५८

कर्म शुभाशुभ त्यागिये, मिल जावें भगवान।
जड़ चेतन महु देखिये, सो नर पावहि राम।। १२५६

बाहर पूजा देव की, जस पानी की फूट।
अन्तर्मन से पूजि के, जो चाहे सो लूट।। १२६०

कउवा बगुला हंस की, अलग अलग है चाल।
परम हंस के हंस को, काहि करेगा काल।। १२६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोउ आवइ पुनि जाय नर, कोउ जावइ नहिं आय।
कोऊ नर ऐसे जगत, आवे और न जाय।। १२६२

स्वामी स्वामी सब कहें, स्वामी परमानन्द।
मुझे न स्वामी बोलिये, मैं हूँ मूरख चन्द।। १२६३

।। चौपाई ।।

विश्वनाथ केवल रघुनाथा,
मन मूरख जन लेवहु साथा। १२६४

कलियुग संगहिं करिय लराई,
रामचरण पंकज उर लाई। १२६५

बाणी अटपट देवि बुझाई,
माया वश नर समुझि न पायी। १२६६

यश कीरति अरु मानहि चाहा,
साधक सिद्ध पतन यहि राहा। १२६७

।। दोहा ।।

स्वामी स्वामी सब कहें, स्वामी दीना नाथ।
मैं ढपोल का शंख हूँ, सबहिं नवाऊं माथ।। १२६८

स्वामी केवल एक हैं, जगतपिता श्रीराम।
मनुज देह स्वामी नहीं, स्वामी प्रभु का नाम।। १२६९

दाता कोई और है, देता है दिन रैन।
मुझे न दाता मान लें, तासो नीचे नैन।। १२७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाता जगपति एक हैं, बाकी मांगन हार।
दाता सबको देत हैं, मांगहु हाथ पसार।। १२७१

गीध अजामिल तारि के, राम हुये करतार।
भक्त न चिंता रकत हैं, राम सम्हारहिं भार।। १२७२

साहब से सब होत है, सेवक से कछु नाहिं।
सेवक से साहब भयो, साहब सेव्य समाहिं।। १२७३

सेवक जन अरु सेव्य से, हो जाती है प्रीति।
प्रभु पद पंकज जाइये, प्रेम भगति की रीति।। १२७४

मैं चाकर श्री राम का, रामहि चाकर मोर।
चाकर से चाकर मिले, मिटहिं चाकरी तोर।। १२७५

कैसी जग की चाकरी, कैसी जग की चाक।
आवत जावत देखिये, काहि न लागहि थाक।। १२७६

भक्तों के आनन्द से, हमको है आनन्द।
प्रेम स्वरूपहि जानिये, मिलता परमानन्द।। १२७७

भक्त कहे भगवान से, ढूँढ़ रहा मैं तोय।
ऐसा भी दिन आयेगा, तू ढूढ़ेगा मोय।। १२७८

यन्त्र शिरोमणि हैं नहीं, और न जानहुँ तन्त्र।
सर्व शिरोमणि जानिया, राम नाम का मन्त्र।। १२७९

ऐसी धुनी रमाइये, रोम रोम रम जाय।
लागी नहिं धुन राम की, धूनी व्यर्थ रमाय।। १२८०

सागर मोती खूब है, मोती सागर डूब।
बिन डूबे मोती नहीं, ऊपर तैरो खूब।। १२८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक भरोसा राम का, और भरोसा झूँठ।
किया नहीं कर देखिये, देवी कंहत अनूठ।। १२८२

दश बीछी का डंक सिर, अरु ऊपर से नाग।
राम नाम औषधि बिना, जीव न मुर्दा जाग।। १२८३

आशा कबहु न छूटती, जब लगि श्वांसा डोर।
राम भरोसा आपका, खबर करोगे मोर।। १२८४

रामहि तारे थोर जन, नामहि तारे ढेर।
दुर्योधन मेवा अरुचि, भीलन खाये बेर।। १२८५

।। चौपाई ।।

राम कथा सुनिये मन लायी,
बार बार नर देह न पायी। १२८६

राम चरित मानस उर राखी,
भक्ति मिलहिं शास्त्रहिं बहु साखी। १२८७

राम चरित मानस वसि जाके,
सपने माया मोह न ताके। १२८८

कबहुं न होय अमंगल काजू,
जो नर भजहि राम युवराजू। १२८६

राम कथा के जो अनुरागी,
सो नर जानु जगत बड़ भागी। १२६०

लखइ राम सो लखन कहाई,
सदा राम संग नाम सुहाई।। १२६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवत रत सो भरत कहाई,
राम पादुका मन चित लाई। १२६२

षट विकार शत्रुन रण मारे,
सो शत्रुघ्न दशरथ के बारे। १२६३

जनक विदेह विदेह विशेषी,
राम रूप बालक सम देखी। १२६४

जनक कुँआरि जनक गृह सोहा,
जनक विदेह देह मन मोहा। १२६५

भरत सरिस न कोउ बड़ भागी,
चरण पादुका हिय मन लागी। १२६६

मातु-पिता-गुरु नावहिं माथा,
सो नर जग महु होंहि सनाथा। १२६७

।। दोहा ।।

जगती जन दुख देत हैं, सुख देवइ भगवान।
जो मूरख नहिं जानते, वाको मन अज्ञान।। १२६८

भीख मांगिये एक से, प्रभु देते भरपूर।
परिजन द्वार न जाइये, जो आवे सो सूर।। १२६६

दुनिया वाले मांगते, वो क्या देगें दान।
मांगो सीता राम से, शास्त्र वचन को मान।। १३००

नर की आशा झूठ है, नारायण की साँच।
हीरा नाम न त्यागिये, त्यागहि जग के काँच।। १३०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुख दाता संसार है, सुख दाता भगवान।
ऐसे प्रभु के नाम को, भज मूरख नादान।। १३०२

कामिनि सोहे काम से, कंचन सोहे देह।
वाणी प्रभु के नाम से, राम बसहि उर गेह।। १३०३

इक वाणी दुख देत है, इक वाणी सुख देव।
वाणी के हि प्रभाव से, जो चाहे सो लेव।। १३०४

कुन्द मन्द दुर्बुद्धि में, षड्विकार बस जान।
करहु अकारण तुम कृपा, कृपा सिन्धु भगवान।। १३०५

मन मैला तन कूचरा, ता पर पूजा पाठ।
बिन काटे नहिं काम में, जस लकड़ी की गांठ।। १३०६

निन्दा कबहु न कीजिये, निन्दा बड़ अपराध।
साधक मन को साधिये, एहि साधन निर्बाधा।। १३०७

मैं कर्ता मैं भोगता, मैं चेतन चित रूप।
निज मैं को पहचानिये, मैं ही ब्रह्म स्वरूप।। १३०८

आत्म ब्रह्म जग देखिये, जड़ चेतन भगवान।
ताही पंडित जानिये, समझि ब्रह्म का ज्ञान।। १३०६

बोलें आप आप बोल वायें, आपहि हैं भगवान।
आत्म तत्व अस देखिये, मिलहिं ब्रह्म का ज्ञान।। १३१०

ब्रह्म ज्ञान वेदान्त सब, कागज पर है लेख।
निज आतम सम आत्मा, सब जीवों में देख।। १३११

कोई आवइ कोइ जात है, कोई जावइ नहिं आत।
एक न आवइ जात है, फाटक भेदइ सात।। १३१२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम दाता संसार के, देते हो दिन रात।
मेरे फाटक खोलिये, लगे हुये हैं सात।। १३१३

अपने बल का बल नहीं, तुम्हरे बल नहिं देर।
निर्बल को बल दीजिये, राम लगावहुं टेर।। १३१४

जंगहि जीते जोगड़ा, रंग रंगे सो संता।
ऐसे नर को जानिये, कबहुँ न होवहिं अंता।। १३१५

।। चौपाई ।।

नर तन पाइ विषय रस त्यागी,
ताको जानहु जग बैरागी। १३१६

माया त्याग करइ सो त्यागी,
राम भजन मन प्रेमहि जागी। १३१७

त्यागहिं झूठ कपट छल नाना,
साधक के गुण प्रथम प्रधाना। १३१८

राम नाम मोहे मुनि मोहा,
जाके दम्भ कपट नहिं छोहा। १३१६

साहस बिना धैर्य नहिं भाई,
धीरज बिना शान्ति नहि पाई। १३२०

मनन करइ प्रभु मुनी कहावा,
तद् अनरूप श्याम गुण गावा। १३२१

संत कृपा औघड़ अवधूता,
जे पावइ ते परम सपूता। १३२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतल के सम और न लोका,
ब्रह्म भजन सब जावहिं शोका। १३२३

मूल धर्म जग एकइ जाना,
सब तजि भजन करहुं भगवाना। १३२४

अविरल नाम सुमिरि भगवाना,
बार बार नहिं आना जाना। १३२५

इन्द्रिय मन साधहि सोइ साधू,
प्रभुहि चरण पावइ निर्वाधू। १३२६

समय काल नहिं परिखइ साधू,
भजन करइ दिन रात अगाधू।। १३२७

।। दोहा ।।

साध गये की साधना, साधक साधू होय।
बिन साधे संसार में, साधक साधु न कोय।। १३२८

साधू साधू सब कहें, साधु भया नहिं कोय।
जो भी साधू होत हैं, साधय पूरा सोय।। १३२६

साधु करइ मन साधना, रचइ असाधु शरीर।
रस भक्ती दोनउ रंगे, भव की छूटे पीर।। १३३०

साधू याचक एक का, सबको देवन हार।
जो जन मांगे और कुछ, ता पर करो विचार।। १३३१

साधु कबहु नहिं मांगता, जग वालों से भीख।
ज्ञान भक्ति बैराग की, सबको देवइ सीख।। १३३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जटा बाल को राख के, राख कमण्डल लेय।
गेरुआ कपड़ा धारिके, साधू रहा अदेय।। १३३३

विषधर त्यागे केचुली, बिष नहिं त्यागे अंग,
साधु न त्यागहिं वस्त्र बस, त्यागहिं माया संग।। १३३४

नहिं कँचन नहिं कामिनी, नहिं चिन्ता भय दोष।
षड् विकार मन त्यागि के, साधु रहे मद होश।। १३३५

जे त्यागी सो वीर नर, लेवइ मन को जीत।
धरम करम मन राखिके, राखइ प्रभु संग प्रीत।। १३३६

साधु कबहुँ बोलें नहीं, स्वप्नहु झूठे बैन।
औरन को सुख देन को, सदा रहें बेचैन।। १३३७

साधू को साधू लखें, और लखे ना कोय।
साधू को जो लखत हैं, साधू के सम होय।। १३३८

नींद न आवइ तीन को, कामी साधू चोर।
चोर व कामी काम वश, साधू भजन विभोर।। १३३९

साधु सनत के वेश में, अधिकाधिक पाखण्ड।
नाच रहा कलिकाल में, कर्महि असत प्रचण्ड।। १३४०

बाहर दीखे साधुता, भीतर कर्म असाध।
स्वर्ण कलश में जानिये, विष से भरा अगाध।। १३४१

केश रखाये साधु यदि, सब जन लेइ रखाय।
केवल केश रखाय ते, नारि न मुक्ती पाय।। १३४२

बुद्धि हमारी भ्रष्ट हैं, किं कर्तव्य विमूढ़।
कृपा दृष्टि प्रभु कीजिये, माया अगम अगूढ़।। १३४३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मो सम अधम न पातकी, तुम सम क्षमा न शील।
गीध अजामिल तारिके, तारइ कोलन भील।। १३४४

झूठे जग के लोग बहु, इनका नहि विश्वास।
और भरोसा छाड़ि के, करहि राम की आस।। १३४५

।। चौपाई ।।

महा धाम जग संत समाजू,
थोरे जन महु कलियुग राजू। १३४६

जग वाले मानहिं जग अपना,
जागत सो देखहि बहु सपना। १३४७

मोरे मन विचार अस जागा,
कबहुं न आमिष त्यागहिं कागा। १३४८

देव-पुजाय जो भोजन करहीं,
ते नर जाय ख्वान अवतरहीं। १३४९

झूठ चाल अरु असत् प्रवीना,
ता संगति मन दूषि कीना।। १३५०

षड़ अपराध जीव दुख दीन्हें,
ब्रह्म स्वरूप न जग महु चीन्हें। १३५१

सहि न जाय जग अत्याचारा,
करहु प्रभू दुष्टन संहारा। १३५२

राम कथा अति अगम अगाधू,
नहिं समुझहिं कलयुग नरसाधू। १३५३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुन असत्त महिमा मैं गावा,
झूठ कपट छल छिद्रहि भावा। १३५४

सत्य बचन कबहूँ नहिं बोले,
माया के बस जग महु डोले। १३५५

पर सम्पति नारी पर ध्याना,
मूढ़ प्रकृति सत कर्म न जाना। १३५६

शास्त्र वचन जे सुनहि न काना,
तेइ असन्त जगत नर जाना। १३५७

देवि देवता एक न मानै,
मात पिता गुरु का नहिं जानै। १३५८

कपटी कुटिल कुचाल कुबाचा,
कर्म करइ कबहूँ नहिं साँचा। १३५९

मन बाहर कछु भीतर होई,
तेहि असन्त जानइ नर सोई। १३६०

काम क्रोध मद लोभ बसेरा,
रहत सदा मन धन कहुचेरा। १३६१

सत्य वचन जिन्ह भजन सुहाई,
परमानन्द परम सुख पाई। १३६२

भजन बिना दुर्गति जग माही,
सुमिरन करि शुभ गति नर पाही। १३६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

सुख में सुमिरण होत है, दुख में करो न होय।
जो दुख में सुमिरण करे, सुख काहे का खोय।। १३६४

बिन मारे बोले नहीं, देखहु जग में ढोल।
अज्ञानी जन ज्ञान से, बिन मारे नहिं डोल।। १३६५

।। चौपाई ।।

राम नाम सम मन्त्र न कोई,
सुमिरन से भव तारइ सोई। १३६६

शुद्ध बुद्धि मन परम बिरागी,
राम भजन महुँ रत अनुरागी। १३६७

जग महुँ भक्ति एक नहिं दूजा,
सुमिरिय राम करहिं पद पूजा। १३६८

अविरल गति जे सुमिरहिं नामू।
अति प्रसन्नचित राखहिं रामू।। १३६६

।। दोहा ।।

रोम रोम में रम रहे, जाके हिय में राम।
ताको मानो जगत में, हो गये चारो धाम।। १३७०

रामचरण रति राखिये, जामे तीरथ-राज।
भव सागर नहिं डूबिये, रामहि नाम जहाज।। १३७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भव सागर को देख के, मन डूबे उतराय।
नइया प्रभु के नाम की, देवहि पार लगाय।। १३७२

सत रज तम की धार में, बहे सकल संसार।
राम नाम की नाव में, भक्त हुए भव पार।। १३७३

ऐसो मन पाथर पड़े, जामहि राम न होय।
मन जागहि संसार में, जान मंथरा सोय।। १३७४

सार सार को लीजिये, मनीधनी का त्याग।
नारायण के नाम से, साधक जीवहि जाग।। १३७५

आया माया पतिहिं की, माया मय संसार।
माया पूर्ति के भजन से, माया जाहिं बिसार।। १३७६

धर्म कर्म संसार में, केवल प्रभु का नाम।
मानुष तन को पाइके, भज ले सीता राम।। १३७७

भक्ति परागहि लीजिये, लेते जस मकरनन्द।
शम्भु का सुमिरण कीजिये, भक्त मिलहि आनन्द।।१३७८

भक्ति किये शक्ती मिले, और मिलहिं सुख चैन।
प्रेम-सिन्धु में डूब कर, भजन करे दिन रैन।। १३७६

कबहु चाय नहिं पीजिये, यामे यम का बीज।
'य' हटाय 'ह' राम पद, हृदय पटल की चीज।। १३८०

प्रभु सुमिरन होता रहे, जब लगि श्वांसा डोर।
आरत जान पुकार सुनु, विनय आप से मोर।। १३८१

सुमिरन प्रभु का कीजिये, माया को रख दूर।
मन में राम बसाइये, सुख पावई भरपूर।। १३८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने बल का बल नहीं, निर्वल के बल राम।
निश दिन सुमिरन कीजिये, पावन प्रभु का नाम।।१३८३

ऐसा सुमिरण कीजिये, रोम रोम भिद जाय।
पुनि पुनि जनम न होय महि, जीवहि जाय न आय।।१३८४

चेतन की प्रभु चेतना, चेतहु मूरख चन्द।
चिनतन चित से कीजिये, सुमिरहु बाल मुकन्द।। १३८५

नन्द बाबा के नन्द का, एक भरोसा आस।
जब तक घट में प्राण हैं, चले नाम की श्वांस।। १३८६

आरत होय पुकारिये, आरति प्रभु की जान।
प्रेमा ज्योति जगाइये, प्रेम प्रकट भगवान।। १३८७

।। चौपाई ।।

प्रेम भगति जग महुं आनन्दा,
भजन करहि तब छूटहिं फन्दा। १३८८

नयन कलश जल प्रिय रघुनाथा,
भरि भरि पान करहु दोउ हाथा। १३८९

जा मन प्रभुहि प्रीति अति गाढ़ी,
प्रेम बिन्दु नैनन ले ठाढ़ी। १३९०

राम प्रेम लोचन जल ढारे,
ऐसो भगत राम कहुं प्यारे। १३९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दोहा ।।

मोह शोक भय कामना, मन से दीजो त्याग।
ब्रह्म कृष्ण कहते रहो, राखि चरण अनुराग।। १३६२

ज्ञान ध्यान सब चरण में, चरण चित्त की चाह।
प्रेम चरण में राखिये, मिल जायेगी राह।। १३६३

प्रेम भक्ति नहिं छाड़िये, जब लगि मानव देह।
ऐसा सुमिरन कीजिये, राम बसहि उर गेह।। १३६४

नित्या नन्दी नित्य में, सदा रहें लवलीन।
माया जड़ता त्याग कर, प्रेमा भक्ति प्रवीन।। १३६५

मानुष तन को पाइके, यही लगावहु अर्थ।
प्रेम भक्ति प्रभु कीजिये, नहिं जायेगा व्यर्थ।। १३६६

मन से गति ना जानिया, बुद्धिहिं जानहिं नाह।
प्रेम सिंधु में डूबि के, प्रेमी पावहि थाह।। १३६७

प्रेमा भक्तिहिं सिंधु में, मनुवा डूबहिं जाय।
प्रेम बिना भगती नहीं, कोटिन करइ उपाय।। १३६८

प्रीति न ऐसी कीजिये, जामे स्वारथ होय।
स्वार्थ न अपना राखिके, प्रेम पात्र नहिं खोय।। १३६६

धिक धिक जग के प्रेम को, जामें मोह प्रवेश।
प्रेम प्रभुहिं से कीजिये, मोह नहीं लव लेश।। १४००

प्रतिकारहि नहिं प्रेम में, मोह न चाह न जाय।
निर्मल भगती प्रेम की, प्रेम करे सो पाय।। १४०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तन मन हारी राम को, हारी कर्म विचार।
सबहिं साधना प्रेम की, आत्म नन्द सत सार।। १४०२

योग ज्ञान नहिं ध्यान जप, नहिं पूजा नहिं पाठ।
बिना राग - प्रभु प्रेम के, मनुज देह जस काठ।।१४०३

प्रेम बिना सम्बन्ध नहिं, ताहि बिना नहिं त्याग।
बिना त्याग अनुराग के, जीव न कबहूँ जाग।। १४०४

बिरह प्रेम की वेदना, गोपी बन कर देख।
और न कोई जानता, शिव जाने सखि भेष।। १४०५

ज्ञान योग नहि पास में, प्रेम पियासे नैन।
प्रभू कृपा करि दीजिये, भक्ति बसे दिन रैन।। १४०६

खोजत खोजत युग गया, खोज सका ना कोय।
बिन खोजे मिल जायेगा, प्रेमा भक्ती होय।। १४०७

रतन मिलइ कछु यतन से, भक्ति यतन ते नाहिं।
प्रेम लगाये हरि मिले, जाको प्रीति समाहिं।। १४०८

अलख ब्रह्म भी लख पड़े, लखते भकत सुजान।
प्रेमा भक्तिहि कीजिये, प्रकट होंहि भगवान।। १४०६

।। चौपाई ।।

विविध भांति पूजा जप कीन्ही,
प्रेम बिना प्रभु दरश न दीन्ही। १४१०

जग संग प्रेम झूठ सब मानी,
प्रभु सन प्रीति अगोचर जानी। १४११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाप ग्लानि जल नयनन भरई,
पावन हिय प्रभु चरनन परई। १४१२

राम चरण असुंवन जल धोई,
प्रेमा भक्ति जान उर सोई। १४१३

।। दोहा ।।

ज्ञानी ढूढ़े ज्ञान को, योगी ढूढ़े जोड़।
भक्त चरण प्रभु ढूढ़ते, प्रेम दिशा मन मोड़।। १४१४

मनन कोउ पाठन करे, या चिन्तन चिल्लाय।
जव लौं मिलन न प्रेम का नटवर रीझ न पाय।। १४१५

कृष्ण चन्द्र की बासुरी, बाजी सकल जहान।
प्रेम दिवाने हो गये, मीरा अरु रसखान।। १४१६

प्रेमासन हिय साँकरा, दो नहिं बैठत ईष्ट।
जो बैठावहिं ईष्ट दो, ताको जानो दुष्ट।। १४१७

जाति पाँति यहि जगत में, सब लौकिक व्यवहार।
प्रेम ब्रह्म सम देखिये, शास्त्र बतावहिं सार।। १४१८

को मूरख को पंडिता, को ज्ञानी को मूढ़।
भक्ति कृपा प्रभु प्रेम बिनु, आतम ज्ञान अगूढ़।। १४१६

नहिं पूजा नहिं पाठ जप, नहिं भगती नहिं ज्ञान।
प्रेम योग में राखिये, दीनबन्धु भगवान।। १४२०

यमहि समाधी देत हैं, सब जीवन को रोज।
ज्ञान भक्ति वैराग से, प्रेम समाधी खोज।। १४२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगत ढपोरा शंख है, सारी दुनिया गोल।
दो ही अक्षर प्रेम से, राम नाम का बोल।। १४२२

राम नाम बिन बोल के, नहिं वाणी का मोल।
हाड़ माँस की देह में, जस ढोलक की खोल।। १४२३

रसना से रस घोलिये, कुरस न बोलहिं बोल।
हीरा का तो मोल है, रसना का नहिं मोल।। १४२४

वाणी ऐसी बोलिये, जस कोयल की कूक।
वायस असि वोलइ नहीं, मन होवइ दो टूक।। १४२५

वाणी असत न बोलिए, सत बोलहिं दिन रैन।
सत्य नरायण जानिये, जहँ जीवहिं को चैन।। १४२६

बड़े बोल तो बोलिये, मन महु छोटा होय।
अहंकार जो त्यागते, पाय बड़प्पन सोय।। १४२७

ज्ञानी जानत ज्ञान को, योगी जानत जोड़।
भक्त रमे प्रभु प्रेम में, सारी माया छोड़।। १४२८

प्रभुहिं शरण बिन जीव को, नाहिं मिलेगी ठौर।
पतझड़ में झर जायेगी, जिमि आमा की बौर।। १४२६

कोटि यतन कर देखिये, मिलइ न प्रभु का प्रेम।
शरणागत हो जाइये, शास्त्र कहइ दृढ़ नेम।। १४३०

साड़ी थाकी द्रौपदी, थका दुःशासन बीर।
प्रेम कृपा नहिं थाकती, कृष्ण बढ़ायोचीर।। १४३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। चौपाई ।।

बहु पुराण श्रुति सुस्मृति गायी,
मन मूरख जन समुझि न पायी। १४३२

यह जग जानइ झूठी श्वांसी,
फसि गयऊ लागी यम फांसी। १४३३

कर्म फलहि नहिं अपने हाथा,
जस चाहहिं देवहिं रघुनाथा। १४३४

माया की जड़ परम विशाला,
राम बिना को खोलइ ताला। १४३५

सबहि एषणा मन महु मोरे,
राम कृपा बिन जाइ न तोरे। १४३६

षड् अपराध भयउ प्रभु मोसे,
अब लौं रहयो संसार भरोसे। १४३७

हे दुख भन्जन! परम कृपाला,
काटि देहु प्रभु भव के जाला। १४३८

अतिशय प्रबल ब्रह्म की माया,
सो अति कृपा करहु रघुराया। १४३९

चित चंचल चहुँ दिशि जग जाई,
ताते प्रभु संग प्रीति न पायी। १४४०

जग का मोह बहुत दुखदाई,
प्रेमानन्द सकल सुखदाई। १४४१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूजा पाठ हवन बिधि नाना,
प्रेम बिना सब व्यर्थहिं जाना। १४४२

बिन विश्वास प्रेम नहिं होई,
प्रेम बिना भगती नहिं सोई। १४४३

भक्ति बिना अनुराग न जागा,
बिनु अनुराग प्रेम नहिं लागा। १४४४

नर सम जीव न जग बड़ भागी,
जाको प्रेम राम संग लागी। १४४५

एक विचार मोर मन माहीं,
कोटि जनम प्रभु चरनन पाहीं। १४४६

प्रभु का ध्यान करहि मन रोकी,
राम चरण हिय चरण विलोकी।। १४४७

राम चरण रति प्रीति अनूठी,
जग सम्पति लागइ सब झूठी। १४४८

लख चौरासी भोगहिं प्राणी,
जो नर भजहिं न देवी वाणी। १४४६

।। दोहा ।।

अश्रु बिन्दु ढुलते रहे, प्रेम पियासे नैन।
प्रभु दरशन मिल जायेगे, नाम रटत दिन रैन।। १४५०

प्रेम पियासे नयन को, मिलइ जो एकउ बूंद।
ओम् सुधा भर जायेगी, बैठ न आँखे मूंद।। १४५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञान योग को छाड़ि के, प्रेम समाधी लेहु।
सियाराम के चरण में, अश्रु बिन्दु धरि देहु।। १४५२

प्रेमा भक्ती प्रेम की, अश्रू पूरित नैन।
प्रभु मिलन की आस में, मन रहता बेचैन।। १४५३

बिरह बेदना प्रेम की, राम संग जो होय।
जब लौं मिलन न कीजिये, तब लौं सुख नहिं होय।।१४५४

घट भीतर घट बाहरो, छलकहिं नयना नीर।
भक्ति विनय रस प्रेम से, पान करत रघुवीर।। १४५५

ज्ञान ध्यान सब प्रेम का, प्रेम बिना बेकार।
प्रेम पाय प्रभु आयेंगे, निराकार साकार।। १४५६

प्रेमा भक्तिहि प्रेम की, प्रेमहिं सब संसार।
ब्रह्म स्वरूपा मानिके, मनुज देह गहि सार।। १४५७

प्रभु से नाता जोड़िये, मातु पिता सुत बन्धु।
सेवक ऐसा चाहिये, डूबहि प्रेमा सिंधु।। १४५८

प्रेमी ऐसा चाहिये, जामें प्रीति समाय।
अपने प्रेमी के लिये, आग चकोरा खाय।। १४५९

जाकी ऐसी साधना, होय न दूजी प्रीति।
सोई नर को जानिये, जानइ सांची रीति।। १४६०

तुम समान संसार में, और न दूजो नाम।
दरशन अपना दीजिये, जगतारन श्रीराम।। १४६१

कृष्ण चन्द्र की चन्द्रिका, छूटहि मरुली हाथ।
भक्त शिरोमणि के लिये, कृष्ण भये रघुनाथ।। १४६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त बड़ा भगवान से, स्ववश करहिं वश माहिं।
प्रेम सिंधु में डूबि के, प्रभु के हिय लगि जाहिं।। १४६३

प्रभु संगति अस चाहिए, काया छाया साथ।
प्रेम सिंधु में डूबिये, कबहुँ न छोड़हिं हाथ।। १४६४

दिव्य चक्षु नहिं चाहिये, नहिं विराट प्रभु रूप।
दर्शन मुझको दीजिये, मेरे मन अनुरूप।। १४६५

आवा गमन न त्यागिये, जो भक्ती मिलि जाय।
प्रेमा भक्ती कीजिये, प्रेमहि सिन्धु समाय।। १४६६

नीर सिन्धु की थाह है, प्रेम सिन्धु नहिं थाह।
रामहिं प्रेम लगाइये, जाकी थाह अथाह।। १४६७

।। चौपाई ।।

राम ब्रह्म प्रगटे संसारा,
कथन अनन्त अन्त नहिं पारा। १४६८

चरित राम को सकइ बरवानी,
अंशहि जीव ब्रह्म नहिं ज्ञानी। १४६९

राम शक्ति सीता जग जाना,
सीता शीत निशा कइ त्राणा। १४७०

केहि अपराध सीय कहु त्यागी,
राम मोहि संतोष न लागी। १४७१

कोल भील सह आत्म मितायी,
भीलन बेर जूठ प्रभु खायी। १४७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातु पिता गुरु अवगुण देखी,
ते नर पामर परम विशेषी। १४७३

कर्म फलहिं मन महुं नहिं देहा,
प्रभु संग प्रीति जगइ उर गेहा। १४७४

स्वाति बूँद जस चातक चाहा,
तसि प्रेमहि देवहु नर नाहा। १४७५

एकइ नाम रूप हिय देखी,
प्रभु पद पंकज प्रीति बिशेखी। १४७६

जाके रूप बसइ प्रभु एकी,
सोई जानहिं परम विवेकी। १४७७

यन्त्र तन्त्र एकइ जग मूला,
महा मन्त्र रामहि नहिं भूला। १४७८

राम भजन लागहिं मन मोरा,
कृपा दृष्टि कीजै मम ओरा। १४७६

भव बिचार चित राखहिं जोई,
ते नर मानस रोगी होई। १४८०

बिनु हरि कृपा न पावइ होई,
पाव न बिनु सत्कर्म न सोई। १४८१

दया क्षमा शीलहिं सतकर्मा,
प्रेम विनय नर जानहु धर्मा।१४८२

बिनय प्रेम जानइ जग जोई,
बशीभूत ताके सब कोई। १४८३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुख केइ अश्रु बहुत दुखदायी,
माया के बसि सहि नहिं जायी। १४८४

नयन श्रवहु ढहते नर देहा,
एक विरह इक परम सेनहा। १४८५

।। दोहा ।।

सहज समाधी सहज में, योग समाधी गूढ़।
बिरह समाधी प्रेम की, नहिं समझे सो मूढ़।। १४८६

विरह वेदना द्वैत में, प्रेमहि मिलन विछोह।
ज्ञाना द्वैत प्रकाश में, होवहि शोक न मोह।। १४८७

एक अचम्भा देखिया, अग्नि चकोरा खाय।
सब कुछ पावक जरि सके, चकवहि जरा न पाय।। १४८८

जप तप से सिद्धिहि मिले, ऋद्धि ज्ञान बल योग।
बिरह समाधी लीजिये, यामहि प्रीति बियोग।। १४८९

महायोग में कृष्ण ने, त्याग दिया ब्रज धाम।
बिरह समाधी गोपिका, प्रेमरहा निष्काम। १४९०

कृष्ण विरह की वेदना, जानत गोपी ग्वाला।
चेतन जड़वत हो गये, भक्त भये बेहाल।। १४९१

कृष्ण बिरह की वेदना, रूप प्रेम की रास।
भुक्ति मुक्ति दोनों मिले, जो नर का विश्वास।। १४९२

चोरी करिये चोर की, जो है माखर चोर।
मोह निशा मिट जायेगी, हो जायेगा भोर।। १४९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगति कीजै चोर की, ब्रज भूमि में जाय।
ग्वाल बाल से पूछिये, कृष्ण प्रेम कसि पाय।। १४६४

राधा में आधा हुआ, कृष्ण कहे भरपूर।
ऐसी भगती कीजिये, मीरा गोपी सूर।। १४६५

ज्ञान भक्ति वैराग की, धारा राधा नाम।
राधा को भज लीजिये, मुक्ति द्वारिका धाम।। १४६६

योगी तजे न योग को, ज्ञानी तजे न ज्ञान।
भक्त तजे नहिं प्रेम को, लखहि सदा भगवान। १४६७

पतितो को पावन करे, प्रभु चरणों की प्रीत।
एकइ को जग मारि के, दस को लेवइ जीत।। १४६८

मन्दिर सीता राम का, घट भीतर लखि लेय।
परम प्रेम की साधना, ज्ञानहि ज्ञाता ज्ञेय।। १४६६

चिन्ता योग न कीजिये, चिन्ता करहिं बियोग।
चित में रखहिं वियोग को, मिलहिं ब्रह्म संयोग।।१५००

ब्रत तीरथ वहु कीजिये, पुनि पुनि गंग नहान।
बिना प्रेम भीगे नहीं, चादर फटी पुरान।। १५०१

मनसा वाचा कर्मणा, करइ सदा प्रभु जाप।
प्रेमा-भक्तिहि कीजिये, मिट जाये त्रय ताप।। १५०२

प्रेम ब्रह्म को जानिये, जड़ चेतन में वास।
ज्ञान दृष्टि से देखिये, कहते देवी दास।। १५०३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। कुण्डली ।।

संगति कीजै चोर की जो नन्दन नन्दलाल,
नन्द बाबा घर जाइके कृष्ण भये ब्रज ग्वाल।

कृष्ण भये ब्रज ग्वाल सखी संग रास रचाये,
माखन चोरी खाय कृष्ण जी चोर कहाये।

कह देवी प्रसाद चोर ऐसा मिल पाये,
कोटि जन्म के पाप देख तुरतै मिट जाये।।

।। चौपाई ।।

प्रभुहिं समीप करइ मन वासा,
ताको जानहि व्रत उपवासा। १५०४

निज महिमा निज करहिं बरवानी,
सो नर पामर अति अभिमानी। १५०५

प्रभु पद प्रीति दया नहिं धरमा,
नर तन जानहिं असत अधरमा। १५०६

राम बिमुख सुख सपनहु देखा,
जान लेहु जस लछुमन रेखा। १५०७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

।। दोहा ।।

योगी ज्ञानी भक्त में, भेद न एकउ जान।
रूप अरूप स्वरूप में, लखा एक भगवान।। १५०८

कथा राम की होत है, सुनते निर्मल संन्त।
भक्त शिरोमणि जानते, जाको आदि न अन्त।। १५०६

राम कथा शत कोटि है, जाको नाही अन्त।
राम जनाये जानते, सो विरले जग सन्त।। १५१०

कथा राम की होत है, सुनहु बीर हनुमान।
चारो युग चलती रहे, करहिं न आप पयान।। १५११

मनसा वाचा कर्मणा, बन्द होंहि प्रभु जाप।
सुस्मृति राखहि रूप को, जहँ नहिं क्रियाकलाप।।१५१२

अजगर पंथी पंथ है, काहि करुं मैं काम।
मातु चरण में वास है, आके मैहर धाम।। १५१३

शारद देर्ती सार को, काली काल बचाय।
लक्ष्मी देर्ती लक्ष्य को, भक्ति करें मन लाय।। १५१४

वाणी देवि प्र्साद को, देवहिं शारद माय।
निशदिन हमरी लेखनी, चले कृपा को पाय।। १५१५

दोहा रचना देवि की, दीन्ही मोहि प्रसाद।
कृपा शारदा राखिये, मोह न होय प्रमाद।। १५१६

भक्ति भाव तुलसी कहें, कबिरा कहें अनूठ।
बची खुची देवी कहा, और कहा सच झूठ।। १५१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोरे मन अज्ञानता, नाहिं बुद्धि पाण्डित्य।
कहँ प्रकाश दीपक करे, जहँ प्रकाश आदित्य।। १५१८

शारद सागर नाम है, रत्नागारि अनन्त।
ज्ञान भक्ति वैराग को, हिय में धारइ सन्त।। १५१६

'दो' से वर्णन द्वैत का, 'हा' से हृदय निवास।
भक्त मिले भगवान से, होवइ दिव्य प्रकाश।। १५२०

कलम मिली कवि राज से, चलइ कलम को तोड़।
झर झर झरणी सी चले, अक्षर देड़ मरोड़।। १५२१

दोहा अरु चौपाइ में, देवि लिखायो लेख।
मैं अनुकरण न कर सका, मातु कृपा से देख।। १५२२

दोहा मात्रिक छन्द का, मानि ज्ञान अति थोर।
मैहर माई शारदा, त्रुटी क्षमा करि मोर।। १५२३

उर प्रेरक जगदम्बिका, देवी रचना तोर।
तेरा तुझको दे दिया, क्या बांचा जग मोर।। १५२४

काव्य सुधा की जो बिधा, बिधि-बिधान नहिं आन।
क्षमा करहिं बिधि ज्ञानिहु, मैं बिधि से अज्ञान।। १५२५

।। चौपाई ।।

देवि प्रसाद नीति अस गावा,
प्रेम भगति सत संगही पावा। १५२६

रीति प्रीति सत शास्त्रहि जाना,
ते नर जानहि परम सुजान। १५२७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

शास्त्र बतावहिं बहुत उपायी,
प्रेम बिना प्रभु दरश न पायी।१५२८

क्रिया कर्म एकहि जग मानी,
जा विधि रामहि प्रीति समानी। १५२९

योगी जीते योग से, भोगी मरते भोग,
योग भोग के बीच में, ब्रह्म मिलन संयोग। १५३०

दुख काटे कोउ रोइ के, हंस हंस काटे कोउ,
इक माया एक राम में, कर्म भोग जन दोउ। १५३१

हंसी खुशी लौटाइये, काहि बिगाड़ा तोर,
भूल चूक अपराध को, क्षमा करहु प्रभु मोर। १५३२

भूत-प्रेत दुख देत है, भविष होत है अन्ध,
वर्तमान सत पाइके, हो जाओ निर्बन्ध। १५३३

झंडा तीनहु रंग का, कर लेवहु पहचान,
मनसा वाचा कर्मणा, सत्य रूप को जान। १५३४

राधे से आधे मिले कृष्ण कहे भरपूर,
ब्रह्म सत्य सम देखिये जैसे देखिये सूर। १५३५

माई माई सब कहे, बाबा कहे न कोय,
माई बाबा के मिले, जग की रचना होय। १५३६

सत उपवन को देखिये, सुमन खिले चहुँ ओर,
अपनी गन्ध बिखेरता, काहि न लेत बटोर। १५३७

सत रज तम जंजीर है, बधे सकल संसार,
सत का भी सत लीजिये, हो जाये भव पार। १५३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधा जानि सत संग को, नित कीजै सतसंग।
सत्य प्रभु का अंग है, बाकी शास्त्र प्रसंग।। १५३६

भंग साधना जानिये, रंग चढ़े नहिं अंग।
शास्त्र ज्ञान काही करे, जो न करइ सत संग।। १५४०

एक भगोड़ा भागता, दस सहयोगी चोर।
आप पकड़ना त्यागि के कह दीजे प्रभु तोर।। १५४१

तेरा मेरा मानिके, चक्कर काटहि देह।
तेरा जन जो जानिया, आवहिं ना पुनि गेह।। १५४२

संन्त न चाहत अन्त को, अन्त चहत श्रीकन्त।
भक्त मिले भगवन्त से, प्रेमहि रूप अनन्त।। १५४३

माया फँसे लाज कछु, सब जग माया तोर।
तोरा तोर सम्हारिये, बस नहिं लागे मोर।। १५४४

तेरा तेरा सब कहें, मेरा कहे न कोय।
जो भी मेरा कहत हैं, प्रभु भी मेरा होय।। १५४५

तेरा कहना छोड़ के, मेरा सब कुछ बोल।
जड़ चेतन जग ब्रह्म सम, देवि वचन अनमोल।।१५४६

तेरा जग में कुछ नहीं, जो कुछ है सब मोर।
प्रभु तूँ मेरा हो गया, अब क्या बाँचा तोर।। १५४७

गुरुवर से गुरुता मिले, गुरुता स्वयं न होय।
गुरुता से गुरुता मिले, द्वैताद्वैतहिं खोय।। १५४८

देवि प्रसाद कहत सकुचानी।
शारद सागर ग्रन्थ बखानी।। १५४६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

माँ शारदा देवी की प्रातः कालीन आरती

स्तुति

प्रवरा तीर निवासिनि मैया निगमा प्रतिपाद्ये।
पारावार विहरिणि मैया नारायण हृदये।।

प्रपंच सारे जगदाधारे श्री विद्ये।
प्रपत्न पालन निरते मैया मुनिवृन्दा राधे राधे।।

जय देवी जय देवी जय मोहनि रूपे।
मामिह जननि समुद्धर पतितम् भव-कूपे।।

दिव्य सुधाकर बदने माता कुन्दोज्वल रदने।
पद नख निरजित मदने माता मधुकैटभ कदने।।

विकसित पंकज नयने माता पन्नग-पति शयने।
खग-पति वहने गहने माता संकट-वन दहने।।

जय देवी जय देवी जय मोहनि रूप।
मामिह जननि समुद्धर पतितम् भवकूपे।।

मञ्जीराँ कित चरणे माता मणि-मुक्ता भरणे।
कंचुकि वस्त्राभरणे माता वक्त्राम्वुज धरणे।।

शक्रामय भय हरणे माता, भूसुर सुख करणे।
करुणां कुरु में शरणै माता मदना क्रोध रणे।।

जय देवी जय देवी जय मोहनि रूपे।
मामिह जननि समुद्धर पतितम् भव कूपे।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छित्वा राहू ग्रीवाम् मैया पासित्वम् वियुधाम्।
द्विजभ्यो रक्षसि मृत्यु अनिष्टम् पीयूषं विवुधाम्।।

विहरसि दानव रिद्धाम मैया समरे सन् सिद्धाम्।
माध्य मुनिश्वर वरदे दुर्गे पालयसन-सिद्धाम।।

जय देवी जय देवी जय मोहनि रूपे।
ममिह : जननि समुद्धर पतितम् भव कूप।।

सुन माई शारद पर्वत वासिनि ते रो पार न पायो।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल लै तेरी भेंट चढ़ायो।। सुन.

शुभ्र चोली तेरो अंग विराजे केशर तिलक लगायो।। सुन.
ब्रह्म वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगायो।। सुन.

नंगे नंगे पग तेरो आल्हा आयो चरणों में शीश नवायो।। सुन.
ऊंचे ऊचे पर्वत बनो देवालय नीचे शहर बसायो।। सुन.

सत युग त्रेता द्वापर मध्ये कलियुग राज सवायो।। सुन.
धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगायो।। सुन.

देवि भगत मैया तेरो गुण गायो मन वांछित फल पायो-३।
सुन माई शारद पर्वत वासिनि तेरो पार न पायो।।

दुर्ग विनासिनि दुर्गा जय जय।
काल विनासिनि काली जय जय।
उमा रमा ब्रह्माणी जय जय।
राधा सीता रुक्मिणि जय जय।
माई शारदा की जय।
गुरुदेव भगवान की जय।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊँ श्री गुरुवे नमः ऊँ श्री गणेशाय नमः

श्री शारदा चालीसा

शारदा नगरी मैहर बासा ।
तीन लोक महुँ करहि प्रकाशा ।।
शारदा सत् ना जानहि कोई ।
प्रेम भगति जप तप नहिं होई ।।
शारद मध्य देश महुँ राखा ।
देवि प्रसाद निज अनुभव भाखा ।।
शारद महिमा कोइ नहिं जाना ।
नेति-नेति कह वेद बखाना ।।
शारद नाम सुःखद सुख-राशी ।
ब्रह्मा विष्णु भजहिं कैलाशी ।।
शारद के गुँण गावहिं देवा ।
ऋषी मुनी नित पावहिं सेवा ।।
शारद सुमिरण हनुमत कीन्हा ।
मन चाहा आयुष वर लीन्हा ।।
शारद नाम जपहु दिन राता ।
निर्मल बुद्धि होइ मन गाता ।।
शारद वाहन हंस विराजी ।
नाद ब्रह्म वीणा स्वर साजी ।।
शारद प्रेम विनय मन राखी ।
मातु रखहिं जस पलकहिं आँखी ।।
शारद नाम रसहिं मन पागे ।
सप्त चक्र कुण्डलिनी जागे ।।
शारद सबद जानि ओंकारा ।
ब्रह्म रूप अविचल अविकारा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारद चरण भजहिं मन देहा ।
मातु बसहिं ताके उर गेहा ।।
शारद जाप विवेकहिं जागा ।
जो न भजहिं नर जानि अभागा ।।
शारद शक्ति सबहिं जग बासा ।
सुमिरन से नर पाइ न त्रासा ।।
शारद ज्योति प्रकाशहिं लोका ।
नाम लेत भव होहिं न शोका ।।
शारदा दिव्य ज्ञान की दाता ।
श्रद्धा सुमन भक्त जब लाता ।।
शारद भुक्ति मुक्ति की दाता ।
जो नर भजन करहिं दिन राता ।।
शारद चरण कमल अविनाशी ।
नाम प्रभाव छूटि यम फाँसी ।।
शारद माता गंग समाना ।
जो नर नित्य करहिं स्नाना ।।
शारद नाम जहाजहिं रूपा ।
पार होहिं भव-सागर कूपा ।।
शारद कलियुग में बरदायी ।
आल्हा बीर अमरता पाई ।।
शारद मातु बुद्धि की देवी ।
जो नर होय देह मन सेवी ।।
शारद देवी दुर्गा काली ।
दरश देहु जै मैहर वाली ।।
शारद सुमिरहु मनसा वाचा ।
मातु करहिं मन बुद्धि सांचा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारद सरिस न कोउ जग माँही ।
दरस परस सब पातक जाहीं ।।

शारद मातु अविधा नाशा ।
मन करहिं तम होहिं विनाशा ।।

शारद नाम जपहु संसारा ।
नाम लेत भव उतरहि पारा ।।

शारद दुर्ग विनाशिनि माता ।
तुम्ही लक्ष्मी सब सुखदाता ।।

शारद मातु पिता तुम मोरे ।
सदा रहे मन चरनन तोरे ।।

शारद चित चंचल मन मोरा ।
देवि आसरा केवल तोरा ।।

शारद नाम सुअंजन नैना ।
होहिं प्रकाश जाहिं दुःख रैना ।।

शारद विनय न जावहिं खाली ।
तू ही दुर्गा खप्पर वाली ।।

शारद पूजा सरल सुबोधा ।
लोभ मोह मद जाबहिं क्रोधा ।।

शारद मातु विनय सुन मोरी ।
प्रेम चरण में लागइ डोरी ।।

शारद चालीसा जो गावे ।
लौकिक लोक सम्पदा पावे।।

शारद मातु अमंगल हरणा ।
बार-बार बन्दउ मैं चरणा ।।

शारद कोर कृपा की कीजै ।
चरण शरण आपन मोहिं दीजै ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शारद चरण-धूलि नित पाऊँ ।
कोटि जनम चालीसा गाऊँ ।।
शारद देवि प्रसादी पावा ।
मातु कृपा चालीसा गावा ।।

दोहा :-

शारद देवि प्रसाद की, पूरण कर दो चाह।
दर्शन अपना दीजिए, चलहुं सत्य की राह ।।

ऊँ श्री गुरुवे नमः *ऊँ श्री गणेशाय नमः*

श्री शारदा देवी की संध्याकालीन आरती

ऊँ जै शारद मातु हरे, ऊँ जै शारद मातु हरे ।
तुम्ही मातु अपरा हो, तुम्ही हो मातु परे ।।
ऊँ जै शारद मातु हरे।।

भक्त हेतु अवतारा नानारूप धरे मईया नाना रूप धरे ।
रक्तबीज महिषासुर तुम असुरन मारे ।।
मैहर मातु विराजी सतना जाने परे ।
ज्ञान प्रकाशो माता तमसा मोर टरे ।।
हंस वाहिनी माता, पुस्तक हाँथ धरे ।
ब्रह्म नाद स्वर वीणा, जग कल्याण करे ।।
शैलपुत्रि ब्रह्म चारिणि, चन्द्र घंटि माता ।
कुमाण्डा स्कन्धी, कात्यायनी त्राता ।।
कालरात्रि गौरी माँ, दुर्गा सिद्धि दात्री ।
भक्तन कष्ट निवारो, तुम जग की धात्री ।।
ब्रह्मा वेद सुनावै, हरि हर ध्यान धरें ।
इन्द्रादिक गुण गावै, ऋषि मुनि गान करें ।।
ओम् जै शारद माता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम लक्ष्मी तुम शारद, तुम दुर्गा काली ।
तुमही दस विद्या हो, मइया तुम मैहर वाली।।
कोढ़ी काया पावे, पुत्र बाँझ नारी ।
अन्धे नयना पावे, लंगड़े पगु धारी ।।
अलख निरन्जन होकर, लख परती माते ।
ज्ञानी भगत तुम्हारे, दर्शन को आते।।
सरल सुबोध सुकोमल, तुम ममता रूपा ।
जो नित ध्यान लगावे, छूटे भव कूपा ।।
चरण शरण जो आवे, झोली मातु भरे ।
काल विनाशिनी माता, कालहि दूर करे ।।
वेद शास्त्र सब सारे, नेति नेति कहते ।
बालमीक शुक नारद, देवि चरण रहते ।।
मइया देवि चरण रहते ।।
दुर्गाबन शारद ने आल्हा खडग दियो ।
भक्ति देखि आल्हा की माँ ने अमर कियो ।।
ओम् जै शारद माता हरे ।।
मध्य देश भ्रगुटी बिच माता आन बसो ।
माया जाल उबारो, देवी जीव फंसो ।।
तुम हो अगम अगोचर, गोचर हो मइया ।
निशदिन देवि पुकारे, पार करो नइया ।।
मइया पार करो नइया ।।
देवि प्रसाद को वरदे, पातक मोर टरे ।
बार बार जग आऊं भक्ती तोर करें ।।
ऊँ जै शारद मातु हरे, ऊँ जै शारद मातु हरे ।
तुम्ही मातु अपरा हो, तुम्ही हो मातु परे ।।

जै शारद मइया हरे हरे, जै राम रमइया हरे हरे
जै कृष्ण कन्हैया हरे हरे, जै शारद मइया कष्ट हरे
जै शारद मइया हरे हरे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

PRIDE OF MAIHAR

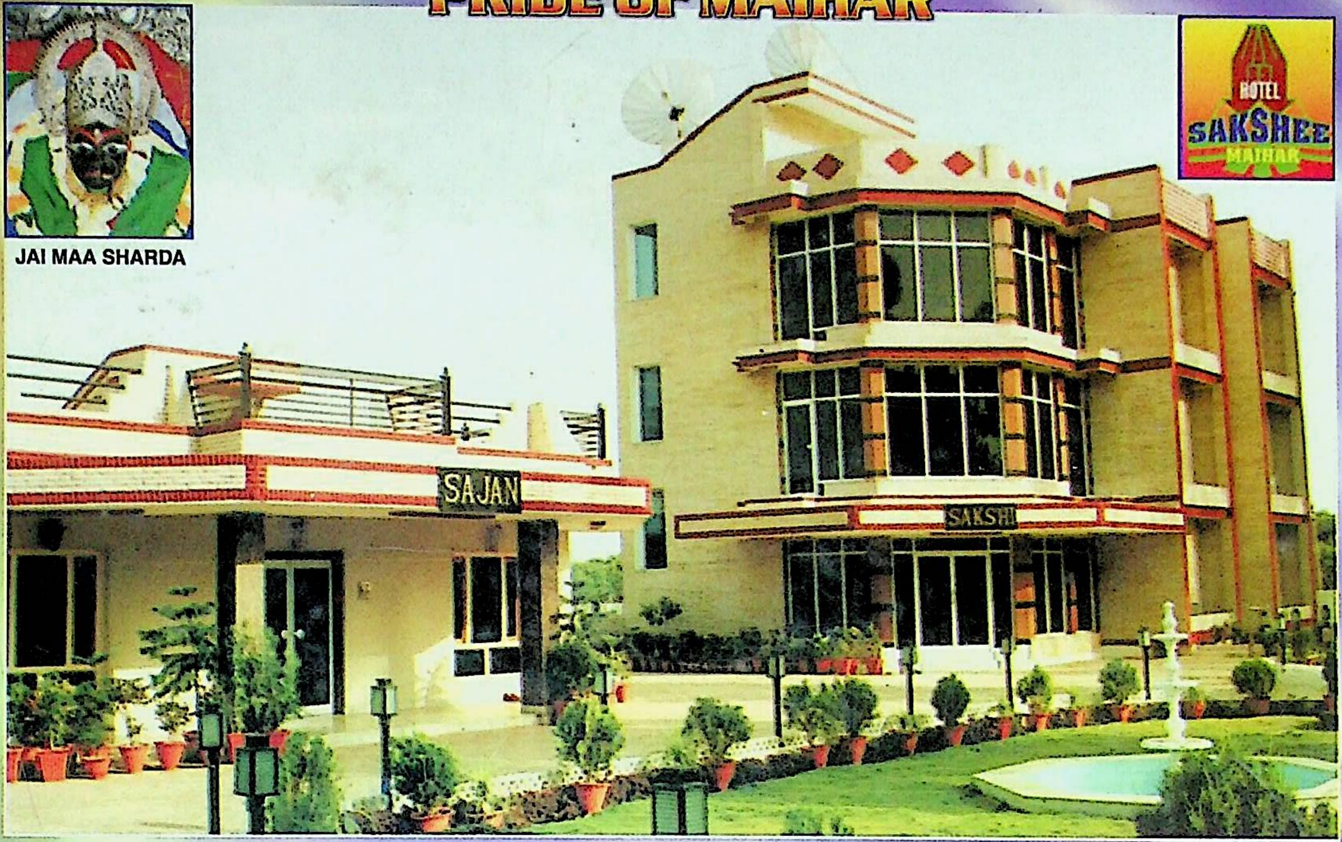

Hotel SAKSHEE

N.H. No.-7, KATNI ROAD, MAIHAR, DISTT. SATNA (M.P.) PH. : (07674) 32426 , 32559-60

SAKSHEE FEELING OF HOME & COMFORT

Printed by : SATNA OFFSET, SATNA PH. 24169, 30375

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.